भगवत् कृपा

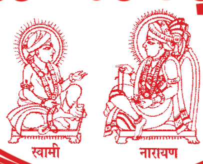

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 33 अंक : 1 | 24.2.2010 बुधवार (जनवरी – फरवरी) | शुल्क – प्रति अंक : 10.00 रु. वार्षिक : 50.00 रु.

अहो ! 'अक्षरधाम' की अनुभूति कराता 'मैत्री मिलन महोत्सव...'

'मैत्री' शब्द सुनते ही ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की स्मृति सहज हो आती है। वजह? गुणातीत समाज में **'मैत्री'** शब्द की परिभाषा का उद्गम स्थल ही प.पू. काकाजी महाराज! और... **मैत्री** के मूर्तस्वरूप काकाजी महाराज की शताब्दी का उद्घोष यानि – **'मैत्री मिलन महोत्सव'** !

प.पू. काकाजी से जुड़े हम में से ज़्यादातर तो इस उत्सव का लाभ लेने मुंबई पहुँच ही गए थे, और जो संजोगवश नहीं जा पाए थे, उन्होंने **प.पू. वशीभाई** द्वारा आयोजित संस्कार चॅनल के माध्यम से घर बैठे ही महोत्सव के दर्शन कर लिए। परंतु, जैसे कि **प.पू. गुरुजी** ने ९ जनवरी की सायं को हुए सांस्कृतिक प्रोग्राम के बाद पू. वशीभाई के पूछने पर खूब मार्मिक बात करी – *महोत्सव के लिए काकाजी के लिए एक भजन बनाया था, उसमें था – 'काकाजी की शौर्यगाथा' सुनाता हूँ। तो, **पू. आनंदी दीदी** ने कहलवाया कि 'शौर्यगाथा' नहीं 'दिव्यगाथा' लिखो। और... उसका परपज़ उन्होंने बताया कि जो भी प्रेमभाव से इसे सुनेगा, वह 'दिव्यभाव' को पा जाएगा। यह सारा प्रोग्राम जब चल रहा था, तब मुझे भी ऐसा आभास हुआ कि सारा माहौल ऐसा दिव्य कर दिया है – जैसे काकाजी कहते कि अक्षरधाम धरती पर उतार दिया है। इसी में हम तरबोर रहेंगे तो हम 'दिव्यता' को पा जाएंगे...*

गुणातीत विभूतियों की परावाणी तो सदैव ही आशीर्वाद रूप होती है। सो, इस पत्रिका द्वारा भी आशीर्वाद झेलने को तत्पर होकर फिर से उसका स्मरण करेंगे, तो निःसंदेह 'दिव्यता' को प्राप्त कर लेंगे...

तो, आओ 'दिव्यता' के मार्ग प्रस्थान करते हुए सर्वप्रथम **९ जनवरी** को हुई **'गुणातीत ज्ञान शिविर'** की स्मृति करें...

'मैत्री मिलन उपवन' पंडाल में आवाह्न धुन-भजन से सभा की शुरुआत हुई... तबियत नासाज़ होने के कारण प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी एवं प.पू. साहेबजी भले ही उपस्थित नहीं थे, परंतु दिव्य रूप से उनकी हाज़िरी सभी मुक्तों ने महसूस की... मंचस्थ सभी स्वरूपों, गणमान्य अतिथियों एवं समग्र गुणातीत समाज के मुक्तों का स्वागत करते हुए **प.पू. वशीभाई** ने 'गुणातीत भावना' पर मुद्दे का सुझाव दिया –

*भगवान स्वामिनारायण के चिन्ह, चरित्र और चेष्टा का तो स्मरण करना है, लेकिन गुणातीत संत से संबंध दृढ़ करके **‘गुणातीतभावना’** वाले साधु होना है...*

सांकरदा के **पू. स्नेहलस्वामी** ने भी मूल अक्षर-मूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के प्रसंग बताते हुए और प.पू. काकाजी का माहात्म्यगान करते हुए कहा –

काकाजी-पप्पाजी ने शुरू से हमें घुट्‌टी पिलाई थी – योगीजी महाराज सामान्य ‘साधु’ नहीं हैं, वे साक्षात् पुरूषोत्तम नारायण का स्वरूप हैं – यूँ मान कर उनके साथ वर्तना...

गुरुहरि योगीजी महाराज का सिद्धांत – ‘संप, सुहृद्‌भाव और एकता’ काकाजी और पप्पाजी को खूब प्रिय था, उसे प्रवर्ता कर स्वरूपों को हम राजी कर लें...

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के अमृतपर्व उपलक्ष्य में १९९३ में ‘जेवा में निरख्या रे...’ पुस्तक का प्रकाशन हुआ था। इस पुस्तक द्वारा, प.पू. काकाजी की स्मृति कराते हुए अपने अनुभवों से, कई मुक्तों को प्रेरणा मिली एवं अनुभूतियाँ भी हुईं! यूँ, इस पुस्तक द्वारा गुणातीत समाज की मानो खूब अद्‌भुत सेवा हो गई। इसी सेवा को और विस्तृत करने की भावना से अब की बार **‘जेवा में निरख्या रे-२’** पुस्तक का **प.पू. दिनकरभाई** के वरद् हस्तों से विमोचन हुआ और प.पू. भरतभाई ने पुस्तक का प्रास्ताविक उद्‌बोधन करते हुए बताया –

इतने सारे प्रसंग सभी ने लिख कर भेजे थे, जिससे ख्याल पड़ता है कि काकाजी आज भी सभी के दिल में ऐसे ही जीवंत हैं।

तत्पश्चात् **पू. शांतिभाई** ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की दीक्षा द्विशताब्दी निमित्त गुणातीतभावना का वर्णन किया और प.पू. काकाजी के माहात्म्यपूर्ण प्रसंग बताते हुए वे बोले –

...आणंद में योगीजी महाराज ने काकाजी के हाथ में जशभाई साहेब का हाथ देते हुए कहा था कि आज जसुभाई साहेब के पूरे मंडल को आपके हाथ में सौंपते हैं। तब से काकाजी महीने में दो-तीन बार विद्यानगर आते और हमारे साथ हफ्ते-हफ्ते रहते। कोई रहने की व्यवस्था नहीं थी, न ही भोजन की व्यवस्था थी। किसी भी प्रकार की कसनी को गिने बिना आकर घंटों-घंटों कथावार्ता करके बापा के स्वरूप की अद्‌भुत बातें करते। जिससे वे हर एक के दिल में खुद तो विराजमान हुए ही, साथ ही श्रीजी महाराज व बापा को भी सभी के दिल में स्थापित कर दिया। सतत दौड़ते रहे... उनकी बातें समझने के लिए हमारा लेवल ही नहीं था। वे तो अक्षरधाम की बातें करते थे, जो समझ नहीं आती थीं। दस-बारह जने बैठे होते, उनमें से आठ तो (नींद के) झोंके मारते होते, फिर भी उनकी कथावार्ता का प्रवाह जारी ही रहता। लेकिन वे कहते थे कि मैं जो बोलता हूँ वो ‘ब्रह्म’ की वाणी है और मैं प्रार्थना करूँगा कि योगीजी महाराज की महिमा आप सब में स्थापित हो जाए... वे सतत प्रार्थना करते-धुन करवाते। घंटों-घंटों धुन करवाते। वैसे तो – वे यह कहते कि पाँच मिनिट धुन कर लें। धुन करते तो पाँच मिनिट होती, दस मिनिट होती, आधा घंटा, एक घंटा या डेढ़ घंटा हो जाता, लेकिन धुन बंद ही नहीं होती थी। हमारे मन में विचार भी आता कि काकाजी तो पाँच मिनिट धुन करने की बात करते थे, ये तो डेढ़ घंटा हो गया। इसका रहस्य एक दिन काकाजी ने समझाया कि मैं ‘पाँच मिनिट’ कहता हूँ, लेकिन पाँच मिनिट निर्विचार रह कर तुम धुन करो, तो मैं बंद करूँ न? जब पाँच मिनिट तुम्हारा पूरा ध्यान भगवान में रहता है, तब धुन बंद करता हूँ... ‘पुरुषोत्तम प्रगट के जो दर्शन करे’ – यूँ अपने ईष्ट देव को प्रत्यक्ष मान कर धुन करो...

काकाजी ने कभी कोई अपेक्षा नहीं रखी। उन्होंने खुद अपेक्षारहित जीवन जीकर बताया। छोटे से छोटे मुक्त के प्रति उन्हें कभी अभाव नहीं आया। केवल ब्रह्मभाव से उनको निहारा... यह भाव होना मुश्किल

है। भरतभाई एवं वशीभाई दोनों ने कहा कि ऐसा मानना बहुत मुश्किल है। परंतु इतने वर्षों बाद भी यही कहते रहेंगे कि 'मुश्किल है - मुश्किल है', तो पाएंगे कब? हमें रास्ता तो मिला है और काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेबजी ऐसा जिए, तो हम ऐसा क्यों न जिएं?...सभी स्वरूप अपने जीवन द्वारा ऐसा जीते आए हैं और अपने जीवन से हमें उपदेश दिया है। हमें सिखाया है कि छोटे से छोटे हरिभक्त का कभी अभाव आए नहीं... सभी के साथ दासभाव से व्यवहार हो...

पू. शांतिभाई के प्रासंगिक उद्‌बोधन के बाद शिकागो के युवकों ने दिन-रात एक करके गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज एवं ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का दर्शन कराती ग्यारह विडियो 'डी वी डी' के संग्रह **'जय काका दादु राय रे...'** की अनमोल-अविस्मरणीय भेंट गुणातीत समाज को दी, जिसका उद्‌घाटन **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** के करकमलों से हुआ।

हम में से कईयों ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्थूल रूप से दर्शन किए हैं। परंतु, कई नए मुक्त ऐसे हैं कि जिन्होंने उनके स्थूल रूप से दर्शन नहीं किए, लेकिन प.पू. काकाजी उन मुक्तों की भी वैसी ही परवरिश कर रहे हैं और उन्हें एहसास कराते हैं कि वे सदैव उनके साथ हैं। सो, उन मुक्तों को कहीं न कहीं ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्थूल दर्शन की एक ललक तो भीतर में रहती ही है। वाकई, शिकागो के युवकों ने उस ललक की तृप्ति हेतु यह सेवा करके मुक्तों के दिल की मूर्ति लूट ली!

और फिर... काकाजी स्वरूप **प.पू. दिनकरभाई** ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के अंतिम संदेश का रहस्य बताते हुए प्रार्थना रूप में आशीर्वाद दिए –

...हम २०१० के नए साल में प्रवेश कर रहे हैं... उसके साथ-साथ नए दशक में भी प्रवेश कर रहे हैं... आज का मुख्य उद्देश्य है कि हम गुणातीत भावना वाले साधु बनें। काकाजी ने १९८६ के अपने प्रवचन में प्रेमस्वामी और कोठारीस्वामिजी को याद करके ये बात बताई थी कि एक कलश चढ़ गया। उस समय सोखड़ा के मंदिर की कलशविधि थी... तो वो कलशविधि का रॅफरेन्स लेकर काकाजी ने बोला था। मंदिर की पूर्णाहुति कलश है – उसकी ध्वजा है। योगीबापा ने उससे भी आगे एक कदम बताया है कि मंदिर के कलश और ध्वजा के ऊपर से जो पशुपक्षी भी उड़ता है, उसका भी कल्याण! उसका भी मोक्ष! योगी बापा ने ऐसे आशीर्वाद दिए हैं। फिर काकाजी ने कलशविधि का जिक्र करते हुए विद्यानगर में यह बात कही थी कि एक कलश चढ़ गया, राजा! उसे सारी दुनिया देखेगी। जो भी आएगा, उसका कल्याण हो जाएगा। मगर वो (कलश) बाहर का है, अंदर का भी करना है। वो अंदर का क्या है? दूसरे (सुहृद्‌भाव के) कलश की बात है। ये कलश की जो हम बात कर रहे हैं, उसका (यह) प्रारंभ कर रहे हैं। दस साल के अंदर हमें वो ही करना है। आज करो तो आज हो जाए। मगर काकाजी ने हमारे लिए टाईम लिमिट भी दी है... तो गुणातीत भावना वाले साधु बनें... जो स्वरूप हमें मिले हैं, उनके साथ हम टोटली जुड़ जाएंगे तो वे स्वरूप हमें वो प्राप्ति कराएंगे – जो स्वामिनारायण भगवान करा सकते हैं, जो अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी करा सकते हैं। प्राप्ति में कोई फर्क नहीं है, प्राप्ति हमें वो ही मिलने वाली है; मगर हमें उस तरह जुड़ जाना चाहिए। ऐसे जुड़ जाने के लिए हम इधर आए हैं। इन गुणातीत स्वरूपों के साथ हम ऐसे जुड़ जाएं और हमारी ऐसी पराभक्ति हो जाए। तो, गुणातीत भावना वाले साधु बनने के लिए काकाजी का कोई भी एक सूत्र या प्रसंग पकड़ कर या उनके किसी कृपापात्र से संबंध पक्का करोगे – किसी भी तरह जुड़ जाओगे - तो गुणातीत भावना वाले साधु हो जाओगे। स्वामी की कोई भी बात पकड़ कर उसका टोटल साक्षात्कार करेंगे, तो भी गुणातीत भावना वाले साधु हो जाएंगे...

प.पू. दिनकरभाई के आशीर्वचन के बाद **पू. कोठारीस्वामिजी** ने माहात्म्य दर्शन कराते हुए कहा – *...गुणातीतानंदस्वामी यानि संबंधयोग! उनके दासत्व को तो पहुँच ही नहीं सकते... वो संबंधयोग जारी ही है। आज हम उसी संबंधयोग में आए हैं। गुणातीत पुरुष अखंड पृथ्वी पर हैं और उनके संबंधयोग का दर्शन करेंगे, तो ख्याल आएगा कि छोटे से छोटे मुक्त का दास बन कर वे जीवन जीते हैं। प.पू. काकाजी कहते 'हमारी इस्माईलिया कॉलेज!' पर, उनकी कॉलेज तो संबंधयोग की कॉलेज थी। भगवान स्वामिनारायण का है, न! भले कैसा ही है, पर वो मेरे सिर का ताज! वो* ***संबंधयोग की कॉलेज यानि – काकाजी की कॉलेज!*** *काकाजी ऐसे संबंधयोग से जीवन जिए। उनके पास कैसा भी व्यक्ति जा सकता था, कैसे भी व्यक्ति को वे स्वीकारते थे। वे गुण - दोष कुछ नहीं देखते थे, केवल संबंध देखते थे... हम सभी स्वरूपों से आज के दिन ऐसी प्रार्थना करते हैं कि हम में भी संबंध की ऐसी ही महिमा प्रगटे और जब ऐसी महिमा प्रगट हो जाएगी, तो हृदय में अभाव - अवगुण का स्थान रहेगा ही कहाँ? फिर वो दर्शन का सुख कुछ अलग ही आता है। तो आज ठाकुरजी के चरणारविंद में यही प्रार्थना करें कि हम सभी को ऐसा बुद्धियोग दें कि ऐसा संबंधयोग हम में प्रगटे... ऐसा दर्शन करना हमें आए, ऐसी हम सब पर कृपा बरसाएं, इतनी प्रभुचरण - गुरुचरण में प्रार्थना...*

अमेरिका से आने के बाद उत्सव के करीब पंद्रह दिन पहले ही **पू. बापु** को अन्न नली में अचानक तकलीफ हुई और तुरंत उसका मेजर ऑपरेशन कराना पड़ा। तब भी प.पू. काकाजी के प्रति भक्ति अदा करने के लिए उन्होंने काकाजी का माहात्म्य दर्शन कराते हुए बात की – *...आज मैत्री मिलन महोत्सव पर सबको काकाजी की दृष्टि से - टोटल दिव्यता से - बिना मूल्यांकन के देखना है... कल हम खेल में होंगे या नहीं... इसलिए मैत्री मिलन महोत्सव पर अंतर से सुर जगा कर - सिर झुका कर, भाववंदना करता हूँ और सब को सलाम करता हूँ। भक्तों के विनम्र सेवक बनना है। दिव्य दृष्टि से देखना है... काकाजी या प्रगट सत्पुरुष की निगाह में पले बिखरे हुए मोती इकट्ठे हुए हैं... आज यहीं अक्षरधाम की सभा है। साक्षात् श्रीजी महाराज, गुरु गुणातीत और सर्व दिव्य स्वरूपों – शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, साहेबजी सब इन प्रगट धरोहरों द्वारा हमारे बीच में उपस्थित हैं। गुरुहरि योगीजी महाराज हमारे परम गुरु हैं। लेकिन यदि काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी और बा गुरु गोविंद के रूप में निरपेक्ष वात्सल्य और प्रेम से हमारे साथ खड़े न होते, तो योगीबापा की, परम गुरु की हमें पहचान होनी नामुमकिन थी। आज हम उनका ऋण नहीं चुका सकते, मगर शुक्रिया जरूर अदा करते हैं... आज हमारे लिए, टु चेईंज अवर लाईफ, प्रार्थना करने का दिन है। काकाजी के शब्द – 'अविरोधवृत्ति और अभेददृष्टि, वासुदेवः सर्वमिति' सिद्ध करने का यह दिन है। काकाजी कहते थे कि खुली आँख से ध्यान करो। सी गॉड इन ऑल, ऑल इन गॉड, ऑल एज़ गॉड... सभी स्वरूपों की अनुकंपा से गुणातीतभावना हमारे भीतर विकास पाए और हमारे जीवन में क्रांति लाए ऐसी गुणातीत दीक्षा की द्विशताब्दी पर भाववंदना करते हैं... और मेरा विश्वास है कि प्रतिकूल संजोगों में भी सब पर काकाजी की रहमत खूब बरसेगी, सबके मनोरथ पूरे होंगे और समस्याएँ हल हो जाएंगी। सब तन - मन से सुखी हो जाएंगे...*

'ज्ञान - यज्ञ माहात्म्य शिविर' की सभा के अंत में **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने आशिष प्रदान किए – *...आज इस अवसर – 'मैत्री मिलन सम्मेलन' में काकाजी के प्रति अपना ऋण अदा करने के लिए दिनकरभाई ने बताया वैसे नौ साल की अवधि हमारे पास है और इतने समय में हमें काकाजी महाराज का जो संकल्प था – योगीजी महाराज का जो संकल्प था, वो अपने अंदर प्रगट करना है। गुणातीतभाव प्रगट*

करने का ये मौका है... काकाजी हम संतों से जब बात करते थे, तो कहते थे कि हम एक मचकूर देते हैं। एक ऐसी बात जो अमल करने से तुम सुख के भोक्ता बन सकते हो। बहुत जल्द तुम 'स्थिति' प्राप्त कर सकते हो... बार-बार संतों को उन्होंने बताया कि अगर आपको गुणातीतभाव में रहना है, तो उसके लिए भिन्न प्रकृति वाले के साथ मैत्री करो। भिन्न स्वभाव वाले के साथ मैत्री करेंगे, तो हमें अपना सब कुछ छोड़ना पड़ेगा। और... उसका तादृश प्रेक्टिकल एग्ज़ाम्पल – शास्त्रीजी महाराज ने काकाजी और कांतिकाका से केवल एक बार बोला कि तुम दोनों भाई-भाई! दोनों के स्वभाव भिन्न थे। कांतिकाका की प्रकृति अलग थी, काकाजी की बात और थी। फिर भी उन्होंने शास्त्रीजी महाराज का जो वचन था उसे पालने के लिए – वो उनका इतिहास यदि हम देखें, तो समझ सकेंगे – उन्होंने कितना बलिदान दिया। कितना कुछ किया एक-दूसरे के लिए। तो यह एग्ज़ाम्पल हमारे पास है। पर, इस हेतु जो मेरापन ('स्व' का भाव) है – जिसके कारण हम सुख, शांति और आनंद के भोक्ता नहीं बन सकते, उसे तो छोड़ना ही पड़ेगा। जब तक हम में अपनी प्रकृति, स्वभाव, मेरापन है, तब तक हम गुणातीतभाव में नहीं रह सकते। उस गुणातीतभाव में जाने के लिए हमें अपनी प्रकृति, स्वभाव, हमारापन जो कुछ भी है, उसे हमें छोड़ना पड़ेगा। वो हम छोड़ नहीं पाते, इसलिए काकाजी ने सूत्र बताया कि जो भिन्न प्रकृति वाला है, उसके साथ यदि 'मैत्री' करोगे, तो वो भिन्न प्रकृति वाला हमारी ऐसी मदद करेगा कि जल्द से जल्द ऐसे गुणातीतभाव में रहते करने में, भगवान को राजी करने में – उनकी प्रसन्नता लेने में हम सक्षम हो सकेंगे। तो, इस सूत्र द्वारा ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की सेवा करने का हमें अधिकार लेना है। तो यह सूत्र हम सभी के जीवन में साकार हो और हम जल्द से जल्द सुख, शांति और आनंद के भोक्ता बनें – ऐसा बल, बुद्धि, प्रेरणा और शक्ति मिले यही अंतर की इच्छा और भावना है...

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद सभी ने प्रसाद लिया और स्वयंसेवक सायं के कार्यक्रम की तैयारियाँ करने में जुट गए।

सायं करीब ५:०० बजे सभी 'मैत्री मिलन उपवन' में एकत्रित हुए। शिकागो के युवकों ने गुरु रामानंदस्वामी और श्रीजी महाराज के जीवन से लेकर प.पू. काकाजी महाराज के समय की डीटेईल्स की **'टाईम लाईन'** यानि – समय श्रृंखला तैयार की थी। उसका संक्षिप्त परिचय देते हुए प.पू. भरतभाई ने बताया –

'टाईम लाईन' क्या है ? समय के हिसाब से सब डीटेईल्स लिखी हुई है। देखेंगे तो पता चलेगा कि काकाजी अपने जीवन में कैसे-कैसे प्रसंगों से गुज़रे हुए हैं ? काकाजी के बचपन के प्रसंग भी पढ़ेंगे तो ख्याल आएगा कि उनके मन में ऐसा था कि हम जीवन में जो चाहें वो कर सकते हैं। सात साल की आयु में स्वर्ग पृथ्वी पर लाने की बात की और वह करके दिखाया। हर एक केन्द्र के विकास में वे कैसे लगे रहे, ऐसे अनेक प्रसंगों का ख्याल पड़ेगा... ये सब प्रमाण देकर लिखा गया है...

परिचय के पश्चात् प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की निश्रा में प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. कोठारीस्वामिजी एवं प.पू. भरतभाई ने **'समयातीत के समय की स्मृतियात्रा'** प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। द्वार में प्रवेश करते ही वर्षों पूर्व की ऐसी अनोखी मूर्ति के दर्शन हो रहे थे जिसमें प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी द्वारा 'गुणातीत समाज' के झंडे को फहराया जा रहा था और साथ में प.पू. साहेबजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. हरिभाई साहेब, पू. शांतिभाई, पू. अश्विनभाई एवं पू. कांतिकाका भी उपस्थित थे। उसके ऊपर ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा बार-बार दोहराई पंक्ति लिखी थी –

'झंडा ऊँचा रहे हमारा...'

उद्‌घाटन के बाद शिकागो के **पू. अमितभाई** ने उपस्थित स्वरूपों एवं गणमान्य अतिथियों को टाईम लाईन के बारे विस्तृत जानकारी देते हुए सारी प्रदर्शनी दिखाई।

अंत में, जिन्होंने पवई मंदिर के लिए प.पू. काकाजी को जमीन दी थी, उन **अक्षरनिवासी चंद्रभाण शर्माजी** के प्रति ऋण अदा करने की भावना से, उनका कांसे का एक बस्ट स्टेच्यु जो बनवाया गया था, उनके परिवारजनों के वरद् हस्तों उसका अनावरण करवाया गया।

सभी मुक्त लाभ ले सकें, इस हेतु उत्सव के तीनों दिन 'टाईम लाईन' खुला रखा गया था।

'टाईम लाईन' के उद्‌घाटन के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरु हुआ, जिसमें स्वामिनारायण महामंत्र की महिमा पर आधारित भजन द्वारा युवकों ने भावनृत्य प्रस्तुत किया... इसी प्रकार ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज को प्रार्थना करते हुए युवक-युवतियों एवं बच्चों ने भाववंदना की तथा भावनृत्य द्वारा ही सभी प्रगट स्वरूपों का स्वागत भी किया। अंत में शिकागो के युवकों द्वारा तैयार किए मार्मिक प्लॅ **'धूमकेतु'** में भगतजी महाराज, जागास्वामी एवं अदाश्री के प्रसंगों द्वारा २६ जनवरी १८८६ को ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज द्वारा गुणातीत समाज को दिए गए आख़िरी संदेश को इंगित करते हुए, शिकागो के युवकों ने मानो गुणातीत समाज के आद्य सर्जक ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज–पप्पाजी महाराज एवं प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी – **इन तीनों विभूतियों को तत्त्व से एक ही समझने का परामर्श दिया।** तो, **हम भूल कर भी उन्हें पृथक न समझें और फिलहाल भी हमें जो प्रगट स्वरूप मिले हैं, उनमें भी भेददृष्टि न रखते हुए 'हम सब एक' का सूत्र अपनाएँ और गुणातीत समाज का झंडा ऊँचा रखें...**

प.पू. काकाजी हमेशा कहते – *'वशी जब महापूजा करता है, तो महाराज साक्षात् आकर खड़े हो जाते हैं...'* **२ जनवरी** की सुबह ९:०० बजे ऐसी सामूहिक महापूजा का आयोजन किया गया। प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई एवं प.पू. निर्मळस्वामिजी के सान्निध्य में प.पू. वशीभाई ने महापूजा की सामूहिक विधि करवाई और करीब आठ सौ मुक्तों ने इस दिव्य माहौल का लाभ लिया।

मैत्री मिलन महोत्सव की चिरंजीव स्मृति के रूप में प.पू. गुरुजी ने नोट के रूप में **सिल्वर मोमेन्टो** तैयार करवाया था। सो महापूजा में रखी उस मोमेन्टो की जायन्ट रॅप्लीका प.भ. मल्कानी अंकल एवं प.भ. ओ.पी. अग्रवाजली ने **प.पू. भरतभाई** को अर्पण की एवं आत्मीय स्वजन **श्री काशीरामभाई राणा साहेब** ने उसका विमोचन किया। इस चाँदी की नोट के डिज़ाईन में –

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की मूर्ति, उनके हस्ताक्षर वाले सूर्य का लोगो,

ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी का कमल वाला लोगो,

प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के लोगो के रूप में तिलक-चांदला का प्रतीक,

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार

एवं

मैत्री मिलन महोत्सव का दिनाँक अंकित हैं, और साथ ही प.पू. काकाजी के मार्मिक सूत्र लिखे हुए हैं।

इस नोट के फॉल्डर पर सभी स्वरूपों की मूर्ति जो चित्रित हैं, उसे देख कर दिल्ली का एक मुक्त सहज ही बोल पड़ा कि *इस कवर को पूजा रूप रखना हो, सो प.पू. गुरुजी ने सारी मूर्तियाँ रखवाई हैं ऐसा लगता है।* यह सुनते ही **प.पू. देवी बहन** बोलीं –

रखने के लिए नहीं, उन्हें यह यूनीटी करवानी है।

केवल एक ही वाक्य में प.पू. देवी बहन ने मानो मैत्री मिलन महोत्सव का सार समझा दिया! देवी बहन के

बारे प.पू. गुरुजी से कई बार सुना है :

देवी बेन यानि – 'हिन्दुस्तान का भेजा (दिमाग़)... ।' प.पू. गुरुजी के ऐसे मार्मिक जॅस्चर के तथ्य को प.पू. देवी बहन ने जो पकड़ा, इससे गुरुजी द्वारा कही बात साबित होती है कि वाकई, देवी बहन खूब विचक्षण हैं!

सिल्वर मोमेन्टो के विमोचन के बाद **प.पू. गुरुजी** ने आशिष प्रदान किए –

अभी वशी ने अद्भुत महापूजा करवाई। काकाजी कहते कि हमारी महापूजा तांत्रिक है। साथ ही कहते कि कृष्ण जैसा कोई तांत्रिक नहीं। फिर कहते – 'कोटि कृष्ण जोड़े हाथ, सद्गुरु खेले वसंत।' ऐसे गुणातीतानदंस्वामी का वारसा हमें मिला। इससे ये महापूजा कितनी पावरफुल होगी, उसका अंदाजा हमें हो जाता है। सामान्य रीत से घंटी बजाई, आरती की, चांदला किया ऐसा यह नहीं है। कैसी भी आंतरिक और बाह्य मुश्किलें, विडंबनाएं होंगी, ये महापूजा उनका समाधान कर देगी। ऐसी कई बातें हम नहीं मान पाएंगे। हमें ऐसा लगता है कि संत और बड़े पुरुष तो ऐसी महिमा की बातें करेंगे, यह तो उनके लिए होता है, हम में इतनी बरकत थोड़े ही है। लेकिन काकाजी एक वाक्य बोलते थे कि ब्राह्मीशक्ति बापा ने खुल्ली रख दी है। खुल्ली रख दी, मतलब कोई भी ले सकता है। पर, हमें उस बात का भरोसा होना चाहिए ना? इससे भी अधिक, हमें एक सांत्वना रहे, इसलिए वे बोलते भी कि आध्यात्मिक ज्ञान का दाता तुम्हारे सामने सोफे पर बैठा है। कितनी भव्य प्राप्ति हमें मिली है? लेकिन हमें भरोसा होना चाहिए न? ये कैसी बात है कि शास्त्रों का पुराना ज्ञान – अवतार कोटि तक का, उसकी तुलनात्मक विचारधारा – हमारे दिमाग़ में से जाती नहीं। इसलिए 'गुणातीत भावना' में अखंड रहते ऐसे विभूति पुरुषों की वाणी हम से मानी नहीं जाती, सिर्फ गर्दन ही हिलाते हैं। लेकिन 'यह बात ऐसी ही है – सच में ऐसी ही है', वह माना नहीं जाता यूँ ज्ञान की कसर के कारण कहो, संबंध की कसर के कारण कहो या हमारी कोई वृत्ति – ऐसा मानने नहीं देती। तो महापूजा के फलस्वरूप सबसे पहले यही प्रार्थना है कि बड़े पुरुष के हर एक वचन का हम भरोसा करें। स्वामी एक बार बोले थे – बड़े पुरुष की वाणी आशीर्वादात्मक होती है। उन्होंने जो - जो कहा, वो आशीर्वचन हैं; उसे मान कर उस विश्वास से हम चिपके रहें, इतना महाराज कर दें।

ये चांदी के मोमेन्टो की बात हुई। हमारे काशीरामभाई साहेब ने अभी उद्घाटन किया, वो जरूर ले जाना। आप ये मोमेन्टो ले जाओ और मोमेन्टोज़ बिक जाएं, यह मेरी भावना नहीं है। पर याद रखना, यह चांदी की नोट ही हमारे जीवन में हमारा डिकेड चांदी का कर देगी। व्यावहारिक रीत से भी चांदी के भाव खूब बढ़ने वाले हैं... टाईम लगेगा, पर आपके तो फायदे की बात कर रहा हूँ।

दूसरी बात – कल से जो ये सभा का पंडाल देख रहा हूँ, सच में अक्षरधाम खड़ा कर दिया! अब अक्षरधाम में बैठे रहने के स्वभाव हमें बनाने हैं। बनाने हैं मतलब दिल की सच्चाई से आज के दिन वो प्रार्थना हम करें। बाकी – देखो, काकाजी कैसी विभूति होंगी? ये फंक्शन के कार्ड जब आए, तो मुझे विचार आया कि जो कार्ड पंजाब में बाँटने या भेजने हैं, वो मैं खुद ही क्यों न देने जाऊँ? सो, मैंने पंजाब का एक प्रोग्राम बना दिया ताकि शताब्दी निमित्त मेरी एक सेवा भी हो जाए।

लुधियाना में एक अमृतसागरजी करके रहते थे, वह अब तो गत हो गए। वो काकाजी के कान्टेक्ट में ऐसे आए थे – वहां 'वीटा' का एक बार मिल्क बार है। वहाँ हम कमलदेवजी के साथ दूध पीने गए थे। हम तो गाड़ी में थे और कमलदेवजी दूध की बोतल ला-लाकर हमें देते थे। वहाँ काउन्टर के पास अमृतसागरजी और उनकी फेमिली भी आई होगी। उन्होंने देखा कि कई संत लोग दूध पी रहे हैं, तो उन्होंने सेल्समेन को बोला कि ये गाड़ी में जो तुम दूध दे रहे हो, इनके पैसे संतों से लेना नहीं, मेरे से लेना। कमलदेवजी जब पैसे देने गए तो उस

सेल्समैन ने कहा कि आपका पेमेन्ट आ गया है, इन्होंने दे दिया है। तो मुझे हुआ कि ये कोई भावना वाले लगते हैं; सो पास में बुलाकर थोड़ी बातचीत की। वे लुधियाना में ही रहते थे, तो कर्टसी से उन्होंने कहा – महाराज! आप हमारे घर पर आओगे? दूसरे या तीसरे दिन काकाजी आने वाले थे। सो मुझे विचार आया कि हम अकेले जाकर क्या करेंगे? मैंने कहा – हमारे गुरुदेव आने वाले हैं, उनको लेकर आएंगे। वो तो बहुत खुश हो गए। फिर मैंने काकाजी से सारी बात बताई। काकाजी ने तो उन्हें कहा कि हम लोग आएंगे और तुम्हारे यहां खाना खाएंगे। वो और खुश हो गए। यूँ काकाजी वहाँ गए... उनकी वाईफ ने सारा खाना अकेले हाथ बनाया था। हम बीस-पच्चीस जने थे। और तो और, 'आज ये जो महाराज आए हैं, उनके जो बर्तन होंगे वो सारे मैं ही साफ करूँगी - माँजूगी' –यूँ करके उस दिन उसने माई की भी छुट्टी कर दी। काकाजी ने वहाँ खाना खाया और मुझसे कहा तुम संत लोग तो जाओ, मैं यहाँ आराम करूँगा। एकदम नया घर? काऊन्टर पर दूध के पैसे देकर सिर्फ सद्भाव ही दिखाया! पर, काकाजी ने...! हम वहां से निकल गए और वो सब तो खूब खुश हो गए कि ओहो! महाराज हमारे यहां सो जाएंगे। काकाजी ने उनके यहां दोपहर का आराम किया और शाम को जहाँ जाना - करना था, वो प्रोग्राम किया और रूटीन पर आ गए। बस! इतना ही हमारा अमृतसागर के साथ संबंध था। उसके बाद वे कभी-कभार मिलते थे। बाद में तो काकाजी ने भी शरीर छोड़ दिया। ये बातें करीब बाईस - तेईस साल पहले की होंगी।

तो, अबकी मुझे हुआ कि ये शताब्दी के उद्घोष का फंक्शन है, इनको भी इनविटेशन भेज दिया जाए। पर, मुझे उनका एड्रेस पता नहीं था, क्योंकि काफी समय हो गया उनसे मिले। मुझे इतना याद था कि उनकी एक लड़की है, जो उस समय सिर्फ चार एक साल की होगी और... उसे काकाजी ने अपने हाथ से दूध पिलाया था। उसका थोड़ा कॉन्टेक्ट हम से बना रहा था। एक बार शिमला उसके यहाँ गए भी थे – वो लड़की वहाँ ब्याही हुई थी। सो उसका मोबाईल नंबर होगा या फोन नंबर होगा। मैंने सोचा कि ये अमृतसागर का एड्रेस उनकी लड़की से माँगें। मैंने बहनों से फोन करवाया। वो इतनी एक्साइटेट हो गई कि ओहो इतने सालों बाद काकाजी के संतों ने मुझे याद किया? तो उसने एड्रेस के बारे में कहा कि शाम तक रुको, मैं भेजती हूँ। यूँ कह कर चार घंटे के अंदर तो वो पंचकुला से दिल्ली मंदिर आ गई कि आप लोगों ने मुझे याद किया और काकाजी का इतना बड़ा फंक्शन है! फिर उसने बताया कि उसके पिताजी तो एक्सपायर हो गए वगैरह - वगैरह। अभी फंक्शन में भी वे सब आने वाले थे, लेकिन आप लोगों ने अखबार में या टी.वी. में देखा होगा, रुचिका वाला राठौर केस। वो उसकी ननद थी, तो वो सारे अभी वहाँ इंगेज हो गए हैं। यूँ ये हैं काकाजी – कि एक बार भी कोई कान्टेक्ट में आया हो, वो उन्हें भुला नहीं पाता।

हाँ, इनकी लाईफ स्टाईल ऐसी थी कि इनको समझना बड़ा मुश्किल पड़ जाता... काकाजी ने एक बार मुझे लिखकर दिया था कि मेरे जैसे मिस्टीक आदमी का तुम भरोसा करोगे, निहाल हो जाओगे। देखो, निहाल होने का कितना आसान तरीका बताया? पर हमारी सोच ऐसी है कि हमें उन बातों का भरोसा नहीं आता। आज मैं आप सबसे ये बातें करता हूँ, लेकिन मैंने भी काकाजी की ऐसी किसी बात का भरोसा सच में नहीं करा। अब जो कुछ भी बोलता हूँ, मुझे खुद को ऐसा लगता है कि सौ-सौ चूहे मार के बिल्ली हज को चली। असल में बात यह है कि जिसको कहते हैं न – 'होश आना'। मुझे सत्संग का होश काकाजी के शरीर छोड़ने के बाद आया कि अरे! ये क्या हो गया? लेकिन वो सिर्फ होश ही आया, (सत्संग की) सूझ नहीं पड़ी थी। लेकिन नाईन्टी नाईन में एक प्रसंग

ऐसा आया, जिसने मुझे एक सूझ दे दी कि हमें सत्संग में ऐसे बिहेव करना चाहिए। हाँ, मैं बात यह कर रहा था कि काकाजी की कई चीजें मेरे दिमाग़ में बैठती नहीं थी।

एक एक्जाम्पल अभी का देता हूँ, जो रिसेन्ट बना। अशोक विहार में हमने पहली बार सरदार का मकान किराए पर लिया था। विट्ठलदास वगैरह भी वहाँ आए हैं। योगीस्वामी तब सेवा में थे और काकाजी भी आते रहते थे। आप जानते हो पहले से मेरा नॅचर ऐसा है कि मुझे कोई चीज थोड़े टाईम ही पसंद रहती है, बाद में मुझे ऐसा होता है कि अब कुछ बदल दें, तो अच्छा है। ऑर्डिनरी पेन भी होगी, महीना दो महीने के बाद ऐसा होगा कि भले अच्छी है, पर अब दूसरी हो तो अच्छा। इस तरह ये कोठी का भी ऐसा हुआ कि हम तकरीबन आठ नौ महीने उस कोठी में रहे। इतने में एक दूसरी अच्छी कोठी खाली हुई देखी, तो मैंने काकाजी से बात की कि काकाजी हम कोठी बदलें? काकाजी ने बोला – क्यूं? मैंने कहा – डॉ. मजूमदार की कोठी अच्छी है। काकाजी ने कहा – करो। पुराने मकान के मालिक सरदार एस.एस. बंसल थे। उन्हें काकाजी ने छः हजार रुपया सिक्यॉरिटी डिपोजिट दिया था। उस समय पौने छः सौ रुपया किराया देते थे। मुझे मन में हुआ कि अभी तीन-चार महीने के बाद ये बदल देना है, तो हम जो किराया देते रहते हैं, वो देना अब बंद कर दें। मुझे लगता था कि वो सिक्यॉरिटी के पैसे वापिस देंगे नहीं, तो हम पैसे काटना शुरू कर दें। मैंने काकाजी से बात की कि काकाजी किराया देना बंद कर दें?

काकाजी ने कहा – हम संत कहे जाते हैं। हमारा व्यवहार जगत के लोगों जैसा नहीं होना चाहिए।

मैंने कहा – काकाजी वो देगा नहीं और अपने पैसे फंसने वाले हैं।

काकाजी बोले – नहीं, वो तुम्हें पैसे वापिस करेगा, तू चिंता नहीं कर।

तब मैंने रिलक्टन्ट्ली हाँ कर दी। काकाजी समझ गए थे कि इसने हाँ की है, लेकिन ये मेरे सामने बोल नहीं सकता इसलिए हाँ की है। सो, काकाजी महीने का जो खर्चा भेजते थे , उसमें ढाई हजार रुपए खर्चे के और किराए का छः सौ रुपए का लिफाफा अलग से बंसल को देने के लिए भेजने लगे। मैं भी सावधान हो गया कि दे ही देना है। लेकिन उस समय मेरे मन में ऐसा था कि मुझे क्या? काकाजी देते हैं न! फिर जब मकान खाली किया, तो सरदारजी ने कहा आप लोगों ने यह तोड़ दिया, वह तोड़ दिया – यूं करके थोड़े पैसे काटे और बाकी जो बचे, वे सहूलियत होने पर बाद में देते रहेंगे – यूँ कह दिया। मैंने काकाजी से फोन पर यह बात कही भी। इसके पीछे मेरा मक़सद यही था कि मैं काकाजी को बताऊँ कि मेरी बात सही निकली। पर, काकाजी तब भी बोले –

वह तुझे पैसे देगा, तू क्यों चिंता करता है? हमें गुणातीत कायदा नहीं तोड़ना है, उसे हमारा गुण रहना चाहिए। जगत के लोगों की तरह वर्तन करेंगे, उसे अभाव नहीं आएगा, पर गुण भी नहीं रहेगा।

मैं सुनता रहा और वो बात निपट गई... सालों हो गए। बंसल साहेब भी एक्सपायर हो गए।

पर, अभी एक महीने पहले उनका लड़का दोपहर को करीब डेढ़ बजे आया था, जब मैं सोया हुआ था, तब आया था। सेवकों ने कहा जरुरी काम हो, तो गुरुजी को उठाते हैं; क्योंकि यदि नहीं उठाएंगे, तो गुरुजी नाराज़ होते हैं। वह बोला कि ऐसा जरुरी नहीं है और मैं अपने दो-तीन काम निपटा कर चार-साढ़े चार बजे आता हूँ। उठने पर अभिषेक ने मुझे बताया कि बंसल साहब का लड़का आया था और उसे आपसे मिलना था। अभी दोबारा आने वाला है। इतने में वो आए और मुझ से बातें करने लगे कि बंसल साहब को काकाजी के प्रति खूब भाव था और उसके जरिए आप लोगों को भी खूब याद करते थे... फिर धीरे से एक

पॅकेट निकाला और मुझसे कहा – बंसल साहब अपनी विल में लिख कर गए थे कि पच्चीस हजार रुपए ये 'योगी डिवाईन सोसाईटी' जो है, वहाँ गुरुजी को दे आना। तब मुझे हुआ कि देखो, अपनी सोच बेकार होती है। भारत सरकार का सूत्र है न 'सत्यमेव जयते'। मैंने शायद मल्कानी साहेब से पूछा था कि इसे इंगलिश में कैसे ट्रान्स्लेट कर सकते हैं? मल्कानी साहेब ने कहा था कि इसका मीनिंग है 'धी ट्रूथ प्रीवेल्स' 'सत्य' ही रहने वाला है।

हम बोलते जरुर हैं कि हमें परम सत्य स्वरूप– ऐसे गुणातीत पुरूष मिले हैं, तो इनकी कही हुई हर वाणी... ये तो लौकिक बात थी, पर इन्होंने हमें जो-जो आशीर्वाद दिए हैं, वे भी जरूर पक्का साकार होने वाले ही हैं। हम इसे एक्सॅप्ट करें, इतनी-सी देर है।

कल अमेरिका वाले लड़कों ने जो ड्रामा किया, मुझे इतनी खुशी हो गई कि मेरे पास हार नहीं था, वर्ना ऐसा हुआ कि दिनकरभाई से घनश्यामभाई और सभी को एक अच्छा हार पहनवाऊँ। मुझे खुशी इस बात की हुई थी कि यह जो ड्रामा हुआ, वो बहुत अच्छा तो था ही; पर सबके मन में से जो एक बात आती थी कि आज यह बात बराबर सामने आई, रहस्य खुल्ला हुआ। एक रिसर्च हुई कि भगतजी महाराज, जागास्वामी, अदाश्री इन तीनों के बीच कोई फर्क नहीं था। ***काकाजी*** *यह बात करते थे और साथ में यह भी कहते – उनके चेलों ने यह होने नहीं दिया, उसे हमें ट्रांसेन्ड कर जाना है। यह बात हमें प्रगट स्वरूपों पर लगानी है। और आज यह बात समाज में से जब सुनाई दी है, तब जैसे* ***पप्पाजी*** *कहते कि* ***बात बुद्धि में पकड़ी गई, यानि भगवान का निश्चय बुद्धि में हुआ, सो अब वह जीव में भी होगा। यूँ, अब यह बात हमने बुद्धि में पकड़ी है, तो वह जीव में ठहरेगी।*** *काकाजी ने हम सबको आशीर्वाद दिए हैं मूर्ति धारक हो जाओगे, पर ऐसी बात को अगर हम पकड़ लेंगे – तो।*

एक दूसरी बात यह है कि 'बात बहुत अच्छी' – यह केवल गाया करेंगे, उसका कोई अर्थ नहीं। बहनों ने वर्षों पहले एक भजन बनाया था –

बोले या माने, उसे दे ज़ीरो मार्क। वर्ते और रुचि रखे, उसे करे मूर्ति धारक।

हम कहते रहेंगे कि यह बात बहुत अच्छी - बहुत अच्छी, पर वर्तेंगे नहीं; चलो शायद वर्त भी नहीं पाएं, लेकिन मुझे ऐसा वर्तना है – ऐसी रुचि रखें, यह भी हमारे लिए बहुत प्लस पॉईन्ट है। हमें ख्याल भी पड़ता है कि हमें करना है, लेकिन किसी कारण हम कर नहीं सकते। तो, पप्पाजी बहुत अच्छी बात करते थे कि अगर छोटा बच्चा पेड़ पर से आम लेने के लिए हाथ ऊँचा करता है - कूदता है, तो आते-जाते हुए में से कोई भी उसे उठा कर आम पकड़वा देगा। इसी तरह अगर हम दिल की सच्चाई से भजन करते रहेंगे कि यह जो कल बात बताई है, कल जो रहस्य पकड़ा गया है, उसे लेकर हमें चलना है; लेकिन महाराज! मैं चल नहीं सकता। मैं अपने माइन्ड के घेरे में हमेशा रहता हूँ, ऐसे ही जहाँ रहता हूँ उस माहौल के घेरे में भी ऐसा घिर गया हूँ कि मुझे चलना है, तब भी नहीं चल सकता – आप उपायभूत होओ, आप उपायभूत होओ। तो भगवान जरूर-जरूर-जरूर उपायभूत होते हैं और हमारे लिए अपनी हर ताक़त इस्तेमाल करके वे हमें फ्री कर देंगे। लेकिन दिल की सच्चाई से हमारी मांग होनी चाहिए। और... यह जो मूर्ति की बात करता हूँ, वो चित्त से मूर्ति को पकड़ने की बात नहीं है। एक बात याद रखना – हम 'मूर्ति' सिद्ध नहीं कर सकते, वे हमें मूर्ति बख़्शिश में देते हैं। गुणातीतानंदस्वामी ने भगतजी को मूर्ति बख़्शिश दी थी – फिदा होकर। चेतना की वो मूर्ति - आत्मा की मूर्ति - हमें प्राप्त करनी है। चित्त का स्वभाव है चंचलता, कब डांवाडोल हो जाए पता नहीं लगता; वो मूर्ति टिकेगी नहीं। प्रभु हमारी आत्मा में जो मूर्ति बसा देंगे, वो परमॅनन्ट बख़्शिश में मिल जाएगी।

...शताब्दी के इस उद्‌घोष के लिए भरतभाई का खूब-खूब -खूब आभार! शताब्दी पर तो हम न जाने कैसे होंगे? अभी हाथ पकड़कर चलना पड़ता है, तब हम सब कैसे होंगे? दूरबीन लगाकर के दर्शन करते होंगे। भरतभाई ने बहुत अच्छा कर दिया कि भई शताब्दी के रूप में यह एक 'उद्‌घोष उत्सव' कर लें। सबसे ज्यादा तो हम इस बात के ऋणी हैं कि जब एक 'योगी परिवार' (हयात) है-है और उसको इकट्ठा कर लिया। शास्त्री महाराज-योगीजी महाराज की पहचान देनी तो अब कुछ बाकी रही नहीं है, प्रमुखस्वामी महाराज ने इनका उद्‌घोष धरती के पटांगण पर खूब कर दिया है। अपनी फर्ज है कि काकाजी और पप्पाजी की हम पहचान करवाएँ और उसके लिए यह उत्सव पूरक बने – सहजानंदस्वामी महाराज की जय!

तत्पश्चात् शिकागो के युवकों द्वारा खूब मेहनत से तैयार किए गए ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की लाक्षणिक मूर्तियों और प्रेरणादायी प्रसंगों के एक सोविनियर **'ग्लिम्पसीस ऑफ डिवीनीटी'** का **प.पू. हरिभाई साहेब** ने अपने वरद् हस्तों से अनावरण किया... प.पू. हरिभाई साहेब के आशीर्वाद प्राप्त करना शेष था, परंतु समय काफी हो चुका था और सुबह से महापूजा में बैठे सभी मुक्तों ने व्रत किया था, सो प.पू. हरिभाई साहेब ने बात करने से मना की और सभा का विसर्जन हुआ।

सायं तो गुणातीत समाज के इतिहास की शुरुआत किस प्रकार हुई और ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी एवं प.पू. बा-प.पू. कांतिकाका को साथ लेकर गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज एवं गुरुहरि योगीजी महाराज को अंतर से कैसे राजी कर लिया... उसकी हुबहु झांकी कराते अद्‌भुत एवं दिव्य संवाद जिसका नाम था – **'मूर्ति सुख मन भायो...'** के दर्शन करने के लिए सभी इकट्‌ठे हुए।

इस पूरे **संवाद में मानो प.पू. काकाजी स्वयं हाज़िर हो गए हों, ऐसी सभी को अनुभूति हुई।** साथ ही जो-**जो मुमुक्षु प.पू. काकाजी द्वारा सत्संग के लिए दी कुर्बानी से अंजान थे, वे भी इतिहास के एक-एक दृश्य की झलक देख कर रो पड़े...** इस इतिहास को तादृश करने के लिए जिन-जिन्होंने इसमें योगदान दिया, **वाकई उनकी भक्ति न केवल सराहनीय है, बल्कि अक्षरधाम में स्वर्ण अक्षरों में लिखी गई!** सभी को धन्यवाद देते हुए दूसरे दिन की सभा भी सम्पन्न हुई...

अगले दिन यानि **३ जनवरी** की सुबह साढ़े नौ के करीब 'मैत्री मिलन महोत्सव' की मुख्य सभा की शुरुआत आवाह्‌न धुन-भजन से हुई... सभा के प्रारंभ में स्वागत प्रवचन में **प.पू. वशीभाई** ने उद्‌बोधन करते हुए कहा –

...तीन दिन से हम समयातीत के समय में डूबने का प्रयत्न कर रहे हैं... जब उत्सव के उद्‌घोष की तैयारी हो रही थी, तो लगता था कि क्या करें, कैसे करें।

...दो-तीन दिन से ये सब जो हो रहा है, तो ऐसा लगा कि कोई ईश्वरी संकेत हमारे साथ है। काकाजी ने तो हमारे लिए स्वर्ग धरती पर उतार कर अपना सपना साकार किया; अब हमें क्या ड्रीम करना है यह हमारे लिए कि हाउ टु गो फॉरवर्ड फॉर धी नेक्स्ट सेन्टीनरी। देखो, गुणातीत के दीक्षा दिन से ही शुरुआत हुई। तो, दो ड्रीम हैं - एक इन्डीवीड्युअल ड्रीम और एक कलॅक्टीव ड्रीम। इन्डीवीड्युअल ड्रीम क्या है? तो पहले दिन जो बातें हुईं – 'गुणातीत भावना वाला' साधु बनना है – वो हमें करना है। कलॅक्टीव ड्रीम-महाराज, स्वामी, गोपाळानंदस्वामी धे वर टुगेधर; शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, निर्गुणदासस्वामी धे वर टुगेधर; कृष्णजी अदा, जागास्वामी, भगतजी महाराज धे वर टुगेधर। टॉप कक्षा पर हाईयेस्ट से हाईयेस्ट कक्षा पर रह कर भी (इन्हीं की भाँति) बहुत-बहुत नम्र रह कर,

एक साथ मिल कर यूँ उठाव लेना, हमारे पास ये बड़ी सेवा आई है। ***शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज के लिए प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी और डॉक्टरस्वामी जैसे बहुत बड़े पैमाने पर काम कर रहे हैं। लेकिन काकाजी, पप्पाजी और हरिप्रसादस्वामिजी की सेवा हमारे हिस्से में आई है और इन तीनों ने हमें सिखाया है, जो कल हमें (ड्रामा में) सत्यमित्रानंदस्वामिजी के प्रसंग से मिला कि दिव्य एकता से, को-ऑपरेटिव को-एग्ज़िस्टन्स से, जॉईन्ट लीडरशिप से कैसे जीना है और... ये इतिहास का नया पन्ना खुल रहा है।*** *तो हम इतने भाग्यशाली हैं कि हम इसमें शामिल हैं और इस कार्य के लिए भगवान हमें निमित्त बनाएं... हमें आगे ले जाएं – ऐसी आज सब स्वरूपों से खास-खास प्रार्थना...*

स्वागत उद्बोधन के बाद, मंच पर विराजमान सभी स्वरूपों एवं गणमान्य अतिथियों को हार एवं बॅज अर्पण किए गए। साथ ही, सभी केन्द्रों से आए संतों, युवकों, बहनों ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की मूर्ति को हार अर्पण किया और 'मैत्री मिलन महोत्सव' के अंतिम दिन-निमित्त स्वागत नृत्य प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् शिकागो के पू. अमितभाई, पू. मनोजभाई सोनी साहेब एवं पू. विठ्ठलदासभाई (फुआ) के प्रांसगिक उद्बोधन के बाद ब्रह्मज्योति के **पू. अश्विनभाई** ने माहात्म्य दर्शन कराते हुए कहा– *काकाजी, पप्पाजी और सोनाबा ने जीवन जीकर हमारे लिए उत्तम आदर्श स्थापित किया... महाराज, स्वामी, गोपाळानंदस्वामी एवं परमहंसों की बातें हमने सुनी-पढ़ी, लेकिन इन दिव्य पुरुषों का जीवन तो हमने प्रत्यक्ष देखा और अनुभव किया है... अब गुणातीत अस्मिता और भावना प्रगटाने का (उन्होंने) जो परिश्रम किया है, उसे परिपूर्ण करने का हम सभी का यह सामूहिक प्रयत्न – इसकी यह शुभ और मंगल शुरुआत है...* ***काकाजी, पप्पाजी और कांतिकाका का परिवार जिस जिस प्रकार का जीवन जीकर गया, वह हमारा भव्य और गौरवशाली इतिहास है।*** *पप्पाजी के श्रीमुख से हमने कई बार सुना है, कांति हमारा हाथ-पैर, मैं पेट और काका हमारा सिर... दो परिवार के इन तीन सदस्यों ने मिल कर एक परंपरा का दर्शन करवाया, वारसा दिया।* ***शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की उन्होंने जो प्रसन्नता प्राप्त की, उसके फलस्वरूप हम सभी सुखी हैं – इतना मानें, तो भी उनके ऋण को स्वीकार किया और उनकी महिमा समझी यह कहा जाए।*** *'युवक मेरा हृदय है'– योगी बापा के ये उद्गार, उनकी भावना और* ***अब के सत्संग में शास्त्रीजी महाराज द्वारा प्रवर्ताए अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना के साथ-साथ मुक्तों का माहात्म्य समझने की पहल प.पू. काकाजी ने करवाई...*** *योगीजी महाराज ने काकाजी पर कृपा बरसा कर हम सब पर उसकी वर्षा करने का संकल्प किया। और... काकाजी ने भी कहा कि यह सुख मुझे अकेले को नहीं भोगना। मेरे साथ जो हैं, उन्हें भी इस सुख का भोक्ता बनाना है, और* ***विशेष तो हमारे समाज के लिए नवीन बात यह हुई कि काकाजी ने बापा के पास बहनों को भी ऐसे सुख से सुखी होने का आशीर्वाद माँग लिया और उसके परिणामस्वरूप जिसे हम 'चार पंखुड़ियों' वाला सत्संग कहते हैं, उस गुणातीत समाज का धीरे-धीरे विकास होता गया... पप्पाजी, महंतस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामिजी, सोनाबा इन सभी की महिमा हमें काकाजी ने बताई और उस महिमा के कारण आज हमारे समाज में विशेष रूप से मुक्तों की महिमा बढ़ती जा रही है...*** *शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी व पप्पाजी ने हमें बहुत प्रेम दिया है। हम सभी का विकास उनकी*

*करुणा के कारण हुआ है। इस समझदारी से **हम परस्पर एक-दूसरे का माहात्म्य समझने लगें और प्रेम का विस्तार करते जाएं, तो काकाजी और पप्पाजी की भावना साकार हुई माना जाए...***

इसी प्रकार 'मैत्री मिलन महोत्सव' के उपलक्ष्य में माहात्म्य दर्शन कराते हुए **प.पू. निर्मलस्वामिजी** ने बात की–

*...'मैत्री मिलन महोत्सव' यह एक स्वयंवर है... श्री हरि के साथ हस्तमिलाप करने के लिए हम सब इकट्ठे हुए हैं... महाराज के साथ गुणातीत यदि प्रगट नहीं हुए होते, तो असली साधुता का दर्शन कोई करवा नहीं सकता था... स्वरूपों द्वारा स्वामिनारायण की उपासना – प्रगट की निष्ठा हमने जन्मघुट्टी के रूप में पाई है... काकाजी-पप्पाजी ने उपासना के संबंध में एक बार नापा में बात की थीः भगवान बाल स्वरूप में माँ की गोद में बैठे थे। बाल स्वरूप भगवान ने पूर्णिमा का चंद्रमा देखा और जिद्द पकड़ी कि मुझे चंद्रमा चाहिए। माँ ने पहले समझाया कि चंद्रमा नहीं मिल सकता। पर जब वे नहीं माने, तो समाधान करने के लिए माँ ने एक परात में पानी भरा, जिसमें चंद्रमा का प्रतिबिम्ब दिखाई देने लगा। प्रभु को ऐसा लगा कि यही चंद्रमा है। परंतु चंद्र जो है वो 'बिम्ब' है, पानी में तो उसका 'प्रतिबिम्ब' है। भगवान उसे पकड़ने गए, तो पानी में प्रतिबिम्ब के टुकड़े-टुकड़े हो गए। यूँ 'बिम्ब' को छोड़ कर हमारे जैसे 'प्रतिबिम्ब' को यदि पकड़ेंगे, तो आध्यात्मिकता के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे। योगी डिवाईन सोसाईटी एक वटवृक्ष है, यह कोई सामान्य संप्रदाय नहीं... इस योगी डिवाईन सोसाईटी के स्थापक बहुत सर्वोपरि हैं। योगी डिवाईन सोसाईटी के स्थापक और उसकी स्थापना – जब तक सूर्य और चंद्र तपेंगे, तब तक रहेंगे। विश्व में किसी की ताक़त नहीं है, जो इस सोसाईटी को हिला सके। इसके स्थापक बहुत समर्थ हैं... यदि हमें काकाजी, पप्पाजी और हरिप्रसादस्वामिजी नहीं मिले होते, तो हमें – योगीजी महाराज के साधु को – कौन ढकता? हमें स्वामिजी का एक छत्र मिला है। साधुओं के लिए कहता हूँ – काकाजी-पप्पाजी तो हमारे सर्वमान्य हैं। लेकिन भगवे कपड़े वाले की जो लाज बढ़ाई है, तो हरिप्रसादस्वामिजी ने बढ़ाई है... यदि आप जड़ को छोड़ कर डाली का आसरा करोगे, तो लकड़हारा कब काट कर चूल्हे में डाल देगा, पता भी नहीं चलेगा। इसलिए कभी भी जड़ को नहीं भूलना। हमारे आद्य स्थापक काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी और साहेब हैं। उन्हें हम कभी भी न भूलें... एक बार स्वामिजी पूजा कर रहे थे, तो संप्रदाय के एक मुक्त ने उनसे पूछा कि आप अब भी दादुभाई और बाबुभाई की फोटो पूजा में रखते हो? तब स्वामिजी ने जवाब दिया – **काकाजी और पप्पाजी की बदौलत आज हम उजले हैं और फलेफूले दिखाई देते हैं।** और... हमारी उपासना एवं मार्गदर्शन के लिए काकाजी-पप्पाजी हैं...*

हमें साधु होने का गर्व इसलिए है कि काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी और साहेब ने हमारा सिंचन किया है...

तत्पश्चात् **१९७८ में काकाजी द्वारा उनकी हीरक जयंती पर दिए गए दिव्य संदेश** को सभी ने सुना और आशीर्वाद प्राप्त किए। और... फिर प.भ. राकेशभाई ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के जीवन पर आधारित भजन गाकर मानो पूरा इतिहास 'इदम्' कर दिया। भजन के बाद **आत्मीय वडील स्वजन श्री काशीरामभाई राणा साहेब एवं प.भ. मल्कानी अंकल** ने प.पू. काकाजी के जीवन पर आधारित संवाद की ऑडियो सी.डी. एवं विडियो डी.वी.डी. **'मूर्ति सुख मन भायो'** का विमोचन किया।

विमोचन के बाद **प.पू. गुरुजी** ने आशीर्वाद देते हुए कहा–

आज मैत्री मिलन महोत्सव का अंतिम दिवस-आख़िरी दिवस, आख़िरी सभा। देखो! मैं भी भूल कर गया।

*दरअसल हमारे जीवन में 'मैत्री मिलन महोत्सव' बनाए रखने का आज से 'श्रीगणेश' हुआ। आप पूछोगे कैसे? सुनो, हीरक जयंती की काकाजी की आशीर्वाद वाणी सुनी। उस दिन इन्होंने बोला था कि हमें कुछ देना है। आशीर्वचन में ये सेनटेन्स था। मैं तब से यह सोच रहा था कि सच में इन भाइयों ने तीस साल के बाद हमें दे तो दिया ही दिया। आप पूछोगे क्या दिया? कल जो प्लॅ यहां हुआ, उसकी जो प्रशंसाएँ - बातें - उसकी जो कॅसेट सुनी तो सारी रात मेरे दिमाग़ में गूंजता ही रहा – 'संदेश लाया है'। मैं तो क्या समझता हूँ, जैसे महाराज ने कहा था, 'यदि शांति चाहिए तो दादाखाचर के खपरैल का ध्यान करना।' मुझे तो लगता है काकाजी अगर फिज़िकल रूप में होते, तो घनश्यामभाई – वशी को उठा के गोल-गोल घूमते। ये पन्डाल मुझे तो पहले दिन आते ही खूब भा गया... इस पन्डाल के नीचे कल काकाजी की सारी जीवनी सभी ने देखी – वास्तविकता देखी। और... मैं तो यह समझता हूँ कि जैसे हमारे यहाँ बोला जाता है न 'कोई कहेशे आ संत तो बहु सारा रे...' इसी तरह – कोई कहेगा कि – **'ये टेन्ट तो बहुत सारो रे, एटलो ज गुण कोई हैयामां – काकाजी कहते – लेशे रे, ते तो ब्रह्ममहोलने पामशे रे।** काकाजी (स्थूल रूप से) होते तो ये आशीर्वाद आज जरूर जरूर जरूर देते।*

यह कोई ओडीनरी चीज नहीं बनी है। अब एक डाइवर्ज़न आएगा। डाइवर्ज़न नहीं बोला जाए, बल्कि राइट ट्रेक पर हम चले जाएंगे। प्लॅ ने हमारे समाज के सामने वास्तविकता रख दी। मैं जब इस पर विचार करने लगा, तो मुझे एक किताब याद आई – जो पुराने लोग हैं, उनको याद होगी – 'भारतमां अंग्रेजी राज'। जब तक हमें आजादी नहीं मिली थी, ब्रिटिश गवर्नमेन्ट ने वह किताब बॅन करके रखी थी, ताकि सच्चा इतिहास बाहर न आए। 'सच्चा इतिहास' – किस तरह से? कि १८५७ के संग्राम को वे लोग हमेशा कहते थे 'बिप्लव, जबकि दरअसल वो था 'स्वातंत्र्य संग्राम'। यूँ गलत ही पढ़ाया जाता था। पर, उस किताब ने सच्चाई पेश कर दी थी, सो अंग्रेज़ों ने उस पर बॅन लगा दिया! आज़ादी के बाद तो बॅन वगैरह कुछ रहा नहीं। मैं यह चाहता हूँ इस प्लॅ ने हमें सच्चाई बताई है। अब, यदि हमारा माईन्ड – अंग्रेज़ शासन की भाँति उसे बॅन न करे – हमारा अहं बॅन न करे... हमें इसी दिशा में आगे जाने दे, तो सच्चा 'मैत्री मिलन महोत्सव' हमारे जीवन में बना रहेगा और अब तक हम जो सारे बातें करते थे, वो 'गुणातीतभावना' साकार होगी।

'गुणातीतभावना' हम बोल जाते हैं, वह क्वॉलिटी कल्टीवेट करने से नहीं आती, गुण से नहीं आती; वो 'संबंध' से आती है - गुणातीत पुरुष के संबंध से आती है। 'ब्रह्मस्वरूप संत के संबंध से ही ब्रह्मरूप हो सकेंगे' – यह हम मानते हैं।

*वह 'गुणातीत भावना क्या?' आपने कल हमारा सिल्वर मोमेन्टो – इसकी जायन्ट रेप्लीका देखी होगी। उसकी डिजाईन जब बनी, हमारे आशीष ने करीब सात-आठ बार इसमें करेक्शन्स किए; ये ओ.पी. अग्रवाल ने भी करीब तीन-चार सेम्पल्स दिल्ली भेजे – उसके बाद फाइनल हुई। फिर... एक बार आशीष मेरे पास आया और मुझसे कहा कि इसमें एक बात रह गई। मैंने पूछा क्या? तो कहता है – इसमें पप्पाजी का 'लोगो' नहीं है और... हमने ऊपर लिखा है 'गुणातीत समाज'। मैंने कहा कि स्वामिजी का कहाँ है? तो बोला कि 'तिलक - चादंला' स्वामिजी के लॅटरहेड पर होता है। मैं तो उसे स्वामिजी का लोगो ही समझता हूँ। काकाजी का तो आपने रखवाया है। तो (गुणातीत समाज का मोमेन्टो इसे) कौन मानेगा? आशिष – जिसका जन्म ही मेरे सामने हुआ है, वह मुझे यह पूछता है! मैंने भी फिर विचार किया। खुश भी खूब हुआ कि काकाजी जो कहते हैं, वह समाज में प्रवर्ता तो है। पर, मैंने सोचा कि **'अंतःकरण से परे का यह विचार'** इसे आया कहाँ से? जब तक हम अपने मन*

की जकड़ में रहेंगे, तब तक यह विचार आएगा नहीं। फिर उसने बताया कि ये मुझे ***आनंदी दीदी*** *ने बताया। यूँ इसमें पप्पाजी का लोगो एड हुआ, डिज़ाईन बनी और फाईनल हुई। यह* ***'गुणातीत भावना' हमें प्रगटानी है।*** *इसका सीधा-सादा रास्ता यह है। किसी साधन से यह होने वाला नहीं है। हर जगह यह बात हम करते भी हैं, लेकिन कुछ न कुछ 'गुण का भार (प्रभाव)' हमें रह ही जाता है। इसलिए तो कई बार बोल जाते हैं कि क्या उसकी भक्ति? भक्ति का तो वह मूर्तिमान स्वरूप! क्या उसके नियम-धर्म? क्या उसकी कथा? हमें स्पेलबाऊन्ड कर दे। क्या उसका त्याग-वैराग्य? क्या उसकी आत्मनिष्ठा? मैं नहीं कहता कि ये सारी बेकार की चीजें हैं। लेकिन* ***'गुणातीत भाव' को पाए हुए–गुणातीत स्वरूप हुए ऐसे पुरुष का लाईव संबंध जब तक न हो, इन गुणों की कोई कीमत नहीं रहती–वे अभद्र हैं। यह बात काकाजी ठोक-ठोक कर करते*** *और हम भी सिर हिलाया करते थे। पर, भीतर का कोई न कोई कुसंग कह दो, बाह्यदृष्टि कह दो– हम में ऐसा भार (प्रभाव) रह जाता है।*

बीच में एक भाई मुझे दिल्ली में मिले, मेरी ऐसी बातों से थोड़े डिफरन्स ऑफ ओपिनियन भी बन जाते हैं। उसने मुझसे कहा–गुरुजी, आपको नहीं लगता कि जहां से जो अच्छा है, वह ले लेना चाहिए ही चाहिए। फिर मैंने उसे समझाया – समझो, लीविंग फिलोसॉफी सिर्फ, सिर्फ, सिर्फ एक गुणातीत समाज के अंदर और स्वामिनारायण के अंदर ही है। 'डेड फिलोसॉफी' का तो कोई अर्थ ही नहीं है। आज मानो, कोई राजा हो उसकी डेडबॉडी हो और कोई बेगर की डेडबॉडी हो, तो क्या हम कहेंगे कि जो राजा की डेडबॉडी है, वह काम की रहेगी? दोनों को फूंक ही देना है। इस तरह जहां ऐसे गुणातीत पुरुष – जिसको काकाजी कहते थे कि पावर हाउस कॉन्स्टन्ट और कन्टीन्युअस नहीं है, वहाँ से हम कोई उम्मीद रख ही नहीं सकते, चाहे वो कितना ही अच्छा क्यों न हो।

आज देखो ये पवई के भाई लोग! हम गेरुए कपड़े वालों के मुकाबले तो इनकी कोई गिनती नहीं होती, लेकिन क्या काम करके दिखाया? तो हमें आज और कुछ नहीं करना है। स्वामिजी एक बार बोले थे– 'ब्रह्मरूप वर्तने से ज्यादा सुहृद्‌भाव से वर्तना है।' स्वामिजी की इस बात का तोल करें। हमें तो कोई आत्मनिष्ठा से वर्तता हो, उसका ही भार पड़ जाता है। एक बात बहुत पक्की है – गुणातीतानन्दस्वामी साकार ब्रह्म का मानव स्वरूप में अवतार थे। अगर उन्हें हम गुणों से नापने जाएंगे तो गुणातीतानन्दस्वामी को भी हम अंडर एस्टीमेट कर लेंगे। आप लोगों को ख्याल है 'अमरेली की जो झंझट' हुई थी। गुणातीतानन्दस्वामी के समय से जूनागढ़ और गढडा इन दोनों के बीच तो हमेशा 'टग ऑफ वॉर' रही है। हम नए-नए सत्संग में आए थे। काकाजी की तो भाषा ही ऐसी कि कुछ समझ नहीं आए, फिर भी अलबेली। सो उनकी लँग्वेज सुनने में बहुत मजा आता था। वे बोलते थे– ***गढडा का कुत्ता भी जूनागढ़ के साधु को भौंके!*** *जैसे-जैसे सत्संग में आए तो यह बात समझ में आने लगी।*

अमरेली, गढडा और जूनागढ़ के बीच में है। जूनागढ़ में किसी को रहने जाना नहीं था। वहां का पानी गॅस्ट्रिक, भीड़ा भी खूब। तो वहां रहने को कोई संत तैयार नहीं। लेकिन अमरेली का जो डोनेशन-कन्ट्रीब्यूशन-धर्मादा जिसको बोला जाए, वो जूनागढ़ वाले स्वामी गुणातीतानन्दस्वामी ने ऐसा जादू करा था कि अमरेली के सारे भगत लोग वहाँ भेजते थे। गढडा वाले चाहते थे कि अमरेली का धर्मादा गढडा आना चाहिए। अगर हम गुण से नापें तो पीछे हट कर जाए, वो विनम्र कहा जाए। गुणातीतानन्दस्वामी तो अड़ गए कि अमरेली का धर्मादा जूनागढ़ ही आएगा। कहां वो सरलता रही? और... यहां तक कह दिया कि अगर

वहां के संतों को अमरेली का धर्मादा चाहिए, तो वे जूनागढ़ आकर रहें और हम चले जाएंगे गढडा। स्वामी को पता था मैं गढडा जाऊंगा, तो सारा धर्मादा वहां आने वाला है।

...अभी कई बातों का मर्म खुलता है। संस्था ने हमें जब अलग किया, तब काकाजी, पप्पाजी – इवन गोरधनकाका हम लोगों से एक ही बात करते थे कि हम पहले मूर्ति सिद्ध कर लें, सच - झूठ में पड़ना नहीं। हम अगर गलत भी होंगे, पर मूर्ति अगर हमारे पास होगी, तो समाज हमारे पास आकर बैठेगा। बहुत रहस्य की बात है यह। कई सूत्र हम बोलते भी हैं कि साधु यानि – 'भगवान साधे वो साधु।' उसमें ऐसे गुण हो, ऐसा हो - वैसा हो - यह नहीं कहा; हमारी समझ में फर्क पड़ गया है। भगवान साध ले – मूर्ति साध ले, तो दैवी गुण अपने आप अंदर इम्बाईब हो ही जाते हैं। ***यह गुणातीत भावना का तत्त्वज्ञान है।*** *इसे हम समझें। मैं काफी समय से ब्रह्मनिर्झर में साहेब के आशीष वचन पढ़ता हूँ... उसमें साहेब का बस यही एक सुर है कि ऐसे प्रगट स्वरूपों के साथ का हम संबंध पक्का कर लें।*

(यह कर लेंगे) तो, काकाजी का 'मैत्री मिलन महोत्सव' – हमारे जीवन का ***'टोटल सेलिब्रेशन'*** *बन जाएगा। काकाजी ने अभी शब्द यूज़ किया है* ***'टोटल सेलिब्रेशन'*** *– 'आई बिलीव इन टोटल सेलिब्रेशन।' इन प्रासादिक शब्दों की पोटॅन्शियालिटी खूब होती है... यह मेरी आस्था है। कई प्रसादी की चीज भी रखे रखते हैं, वह किसलिए रखते हैं? हमें उसके अंदर एक आस्था है। मेरी भी ऐसी आस्था है कि काकाजी के कई प्रसादी के शब्द यूज़ करेंगे, तो हमारे भेजे के अंदर घुस जाएंगे।*

तो हम इस मैत्री मिलन महोत्सव से – आज से हमारे 'ब्रिटिश रूल' को कन्डेम करके, हमारे आध्यात्मिक जीवन की – मानो नाइनटीन फॉर्टीसेवन की पन्द्रह अगस्त आज से शुरू हुई , यह मान कर 'हम सब एक' की भावना द्वारा गुणातीत समाज का 'झंडा ऊंचा रहे हमारा' – काकाजी के इस सूत्र को साकार करें – यही प्रार्थना!

तत्पश्चात् , ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के दिव्य संदेश की भाँति **ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज की दिव्य वाणी** सुन कर सभी ने मैत्री मिलन महोत्सव की धन्यता प्राप्त की। **प.पू. साहेबजी** भी नादुरस्त तबियत के कारण महोत्सव में आ नहीं पाए थे; फिर भी – विडियो डी.वी.डी. पर उनके दर्शन के साथ - साथ आशीर्वाद प्राप्त हुए –

सचमुच, मैत्री मिलन महोत्सव में आप सब इकट्ठे होकर, भक्तिरस में डूबकर, माहात्म्य से भरे रहकर, प्रभु भक्ति का अनोखा आनंद लूट रहे हो। इस महोत्सव में मेरी भी आने की बहुत समय से तैयारी थी, पर मेरी तबियत अच्छी न होने के कारण डॉक्टरों ने मना किया और मैं आ नहीं सका इसका दुःख है। पू. अश्विनभाई, पू. शांतिभाई, सब व्रतधारी भाई, गृहस्थ भाई, सब मुक्त वहां आकर इस प्रसंग का आनंद ले रहे हैं। हम भी यहाँ पू. बारिन्द्रभाई के घर में होम थियेटर में, वाईड स्क्रीन पर इस महोत्सव का लाभ ले रहे हैं। घनश्यामभाई, भरतभाई, वशीभाई, सब व्रतधारी संत भाइयों का आभार। जो लोग वहाँ आने की इच्छा होने के बावजूद संजोगवश नहीं आ सके, उन्हें भी मैत्री मिलन महोत्सव का लाभ मिले – सबके दर्शन का, कथावार्ता का, सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा काकाजी के जीवन को निहारने का लाभ मिले - (इस हेतु) संस्कार चॅनल द्वारा घर - घर पहुँचाया।

काकाजी वैसे तो एक युग पुरुष थे। गुणातीतानन्दस्वामी की बातों में लिखा है कि भगवान जब प्रसन्न होते हैं, तो साधु का संग और बुद्धियोग देते हैं। साधु के संग से स्वरूप का यथार्थ निश्चय होता है और प्रभु की आज्ञा पालने के लिए बल एवं

बुद्धियोग मिलता है। **हम सब पर योगीजी महाराज ने बहुत बड़ी कृपा की। योगीजी महाराज से जिन्होंने सच्चे भाव से हेत किया, प्रेम किया, उनकी आज्ञा में रहे – उन सबको योगीजी महाराज ने अपने साधु के योग में रख दिया।** हम सबको शुरुआत से पू. हरिप्रसादस्वामी, महंतस्वामी के योग में – जब युवक थे, तब रखा था। बापा के साथ घूमते, सेवा में रहते और बापा की आज्ञा से हरिप्रसादस्वामी, महंतस्वामी की बातें सुनते रहते थे।

लेकिन **नाइनटीन सिक्सटीफोर में योगीजी महाराज ने आणंद के मंदिर में दादुकाका के साथ मिलाप करवाया और हम सबको आज्ञा की कि दादुभाई की आज्ञा में रहना। तब से हम दादुकाकाजी को योगी के रूप में मानकर उनकी आज्ञा में रहे थे।** ऐसे तो हम योगीजी महाराज की आज्ञा में रहकर भक्ति कर रहे थे; युवक मंडल की सभा और सेवा-भक्ति करते थे। बापा के आस-पास घूमते रहते थे। पर, **योगीजी महाराज कौन हैं? उनको राजी करने का तरीका क्या है? सही जीवन कैसे जी सकते हैं? ये सभी बातें काकाजी के सान्निध्य में रहकर हमारे जीवन में स्थापित हुई।** छात्रालय के निमित्त काकाजी हमारे साथ रहते थे। हमारे साथ स्टूडन्ट्स हॉस्टल में रहते थे। गाँव – विलेज में घूमते रहते थे। काकाजी मतलब अखंड माहात्म्य, अखंड माहात्म्य! कॉन्सटन्ट ॲन्ड कन्टीन्युअस कथावार्ता! काम भी चलता, कथावार्ता इतनी करते – माहात्म्य की बातें इतनी करते कि वे तो नहीं थकते, सुनने वाले को भी इतना आनंद मिलता कि उसको भी थकावट नहीं लगती। तो **उनकी बातों से, उनके प्रेम से, उनके हूँफ से, उनके मार्गदर्शन से हम सब - अश्विनभाई, शान्तिभाई, रतिभाई, सनदभाई – युवक लोगों ने तै किया कि जीवन में योगीजी महाराज को राजी करना है।** योगीजी महाराज जो कहें वही करना है। योगीजी महाराज की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए ही जीना है। जीवन में ऐसा गोल - ध्येय तै हो गया। काकाजी के संग अक्षरपुरुषोत्तम छात्रालय जब बना रहे थे, तो काकाजी उसके लिए आते रहते थे। **निमित्त था छात्रालय, लेकिन योगीजी महाराज ने प्रसन्न होकर हमें काकाजी के योग में रख दिया, वो हम पर बहुत बड़ी कृपा हुई।**

काकाजी ने कईं बातें बताईं, इसमें एक बात ऐसी बताई कि हम (यह) छात्रालय पूरी लगन और शक्ति से बनवा रहे हैं, लेकिन यह क्रिया भगवान की प्रसन्नता के लिए है या इस क्रिया के पीछे हमारा कोई राग है, यह कैसे तै होगा? तब **काकाजी ने उत्तर दिया था कि जब इस छात्रालय को छोड़ने का समय आए, तब आनंदपूर्वक यह छूट जाए, तो मानना कि प्रभु की प्रसन्नता के लिए किया है।** छात्रालय छोड़ने में हिचकिचाहट हो, दुःख हो, नहीं छोड़ने का भीतर से हो, तो मानना कि प्रभु की प्रसन्नता का हेतु नहीं था, ये अपने राग का काम था। काकाजी जो काम करवाते, सेवा करवाते, उसके पीछे हमारा भाव क्या होना चाहिए? 'प्रभु की प्रसन्नता' – यही भाव होना चाहिए। वर्ना हम जो भी क्रिया करते हैं, वह क्रिया हमारे साथ जुड़ जाएगी। 'प्रभु की प्रसन्नता' के भाव से की जाने वाली क्रिया से हम प्रभु के साथ ज्यादा से ज्यादा जुड़ते जाएंगे। जब दो साल के बाद ऐसा निमित्त हुआ, छात्रालय छोड़ने का वक्त आया, तब सभी भाइयों - अश्विनभाई, शांतिभाई, रतिभाई, सनदभाई, सबने मिलकर आनन्दपूर्वक छात्रालय छोड़ा। **तब मालूम हुआ कि काकाजी के साथ रहकर हमारे जीवन में क्या परिवर्तन हुआ।** काम करना है – तो पूरी शक्ति से, पूरी लगन से, पूरा इन्वॉल्व होकर करें, फिर भी उसके पीछे प्रभु की प्रसन्नता का भाव होना चाहिए। **हम जो कर रहे हैं, वह केवल-केवल प्रभु की प्रसन्नता के लिए करते हैं। यह**

भाव काकाजी ने इतना अच्छा हमारे भीतर में डाला जिससे अभी तक, काम करते हैं, अठारह-अठारह घंटे घूमते रहते हैं लेकिन एटैचमेन्ट प्रभु के साथ रहता है। *प्रभु के साथ जुड़ जाने से क्रिया का बंधन छूट जाता है, वृत्तियों का बंधन छूट जाता है, स्थान का बंधन छूट जाता है, देश का बंधन छूट जाता है, जाति, स्त्री - पुरुष का भाव छूट जाता है। यह प्रभु की प्रसन्नता का फल है और* ***काकाजी ने बहुधा युवकों, युवतियों, सब गृहस्थों में यह बात डालकर हम पर बहुत कृपा की।*** *काकाजी के साथ रहे, अमेरिका, इंगलैन्ड, यूरोप, लंडन घूमने का अवसर मिला। काकाजी को नजदीक से जानने का, उनके साथ रहने का, उनका लाभ लेने का पूरा मौका मिला है।* ***केवल योगीजी महाराज के भाव में वे रहते थे।***

योगीजी महाराज सबसे हेत करते थे, योगीजी महाराज सबकी बात सुनते थे, योगीजी महाराज सबके संकल्प पूरे करते थे। इसलिए सबको योगीजी महाराज के प्रति प्रेम था, भाव था। लेकिन काकाजी को तीन फरवरी को जब गोंडल में साक्षात्कार हुआ, उस दिन से काकाजी ने योगीजी महाराज के स्वरूप के बारे में जो बात बताई और जिस-जिसने वह बात मानी, उन सभी को साक्षात्कार हो गया। क्या बात बताई? अक्षरधाम में जो महाराज हैं, अक्षरधाम के तख़्त पर जहाँ स्वामिनारायण भगवान बैठे हैं, मैंने योगीजी महाराज को वहाँ बैठे देखा।' अक्षरधाम में तो स्वामिनारायण भगवान हैं, योगीजी महाराज कैसे हो गए? उनका कहने का मतलब यह था कि जो स्वामिनारायण भगवान हैं, योगीजी महाराज के रूप में हमें मिले हैं। शास्त्र सब बताते हैं कि प्रगट भगवान के बिना आत्मा का कल्याण कभी नहीं होता।

'प्रगट ने भजी भजी पार पाम्या घणा, गीध गुणिका कपि वृंद कोटि, व्रज तणी नार प्रेम भावे तरी, प्रगट उपासना सहु थी मोटी।'

जब भगवान मानव रूप में प्रगट मिलते हैं, तभी आत्मा का कल्याण होता है। आत्मा की 'कारण देह' का नाश होता है। फिर जन्म-मरण के चक्कर में से निकल जाते हैं। तो – 'योगीजी महाराज स्वयं प्रभु हैं। देह छोड़कर – कोटि यज्ञ, कोटि व्रत करके जो प्राप्ति करनी है, वही प्रभु - योगीजी महाराज के रूप में हमें मिले हैं' – ***ये बात दादुकाका ने जब सुनाई, सत्संग में हलचल मच गई।*** *नई बात थी। पर जिसने यह बात मानी, योगीजी महाराज की प्रसन्नता के पात्र बन गए। योगीजी महाराज की प्रसन्नता से जीवन परिवर्तन हो गया। दादुकाका ने उनके योग में आने वाले हजारों युवकों से यह बात कही। उनमें से कई युवक-महंतस्वामी, डॉक्टरस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, गुरुजी, अक्षरविहारीस्वामी, कोठारीस्वामी, शास्त्रीस्वामी सब संत हुए और हम सब अश्विनभाई, शांतिभाई, रतिभाई, सनदभाई, दिनकरभाई, भरतभाई, वशीभाई, बापू – ये सब व्रतधारी संत बन गए! संसार छूट गया! किसी को संसार छोड़ना नहीं था, किसी को साधु बनना नहीं था। पर काकाजी की बातों से माहात्म्य में इतने डूबे रहे कि योगीजी महाराज के संकल्प में सब हंसते-खेलते आनंदपूर्वक जुड़ गए।*

बा, पप्पाजी, और सब लोगों ने हमारा बहुत-बहुत सिंचन किया। हमारे जीवन में भक्ति के मार्ग पर चलने का रास्ता आसान और आनंददायक कर दिया।

ऐसे काकाजी की 'मैत्री मिलन महोत्सव' के रूप में हम सब उनके गुण गाकर उनकी भक्ति कर रहे हैं। काकाजी ने पंचभूत का देह तो छोड़ दिया, लेकिन उनका संकल्प हमारे लिए काम कर रहा है। संकल्प स्वरूप हो गए – दिनकरभाई देखो, भरतभाई देखो, गुरुजी देखो, स्वामिजी देखो, अक्षरविहारीस्वामी देखो – यह क्या है? काकाजी द्वारा हमें दी भेंट है। काकाजी जब थे, तब वे पूरा - दिव्यता का अनुभव कराते थे, तो भी हम उनको पूरे मान नहीं पाए - समझ नहीं

पाए, उनकी आज्ञा में रह नहीं पाए। क्योंकि वे हमारे साथ मानव के रूप में थे, तो मानना, समझना मुश्किल था। तो इन्हीं काकाजी के स्वरूप– दिनकरभाई, भरतभाई, वशीभाई, स्वामिजी, गुरुजी, अक्षरविहारीस्वामी, अश्विनभाई, शांतिभाई और बहनें – हमारे पास हैं; अब यदि उनको हम पूरी तरह से समझें, उनकी आज्ञा में रहें, उनका माहात्म्य समझकर पूर्ण दिव्यता से उनका सेवन करें, तो, काकाजी का वो संकल्प, योगीजी महाराज, शास्त्रीजी महाराज का संकल्प, महाराज गुणातीत की बात हमारे जीवन में स्थापित होगी – हमारा जीवन बदल जाएगा। सत्संग क्यों करना है ? भीतर से बदल जाना है। पवई मंदिर का नाम 'अक्षरधाम' है। जहाँ प्रभु विराजमान हैं, उसे अक्षरधाम बोलते हैं। अक्षरधाम रूप हम बन जाएंगे – ऐसी बात करने से, ऐसे संत लोगों के साथ दिव्यता से जुड़ जाने से।

'दादुकाका मीन्स निर्दोषबुद्धि।' *अक्षरधाम में जो महाराज हैं, वे हमें मानव रूप में मिले हैं।* ***उनके संबंध वाले सब दोषरहित हैं, यूं मानकर सबकी मन, कर्म, वचन से सेवा करने से प्रभु की प्रसन्नता प्राप्त होती है, हम धाम रूप बन जाते हैं। इस सही आनंददायक साधना का अवतरण काकाजी ने किया। उनके द्वारा 'गुणातीत समाज' की स्थापना हो गई।*** *योगी डिवाईन सोसाईटी, गुणातीत ज्योत, अनुपम मिशन, इन सब के द्वारा यह काम हो रहा है। हम हिलमिल कर संप, सुहृदभाव, एकता से प्रभु का यह काम एक-दूसरे के पूरक बन कर, जहां हैं वहां प्रभु के रूप मान कर, आज्ञा में रहकर, लेकिन सबके प्रति पूज्यभाव रखकर एक होकर काम करें। मैत्री मिलन महोत्सव में हम सबको ऐसे आशीर्वाद आज प्रदान करें – यही सब प्रत्यक्ष स्वरूपों और एकांतिक मुक्तों से भाव से प्रार्थना!*

महोत्सव की सभा के अंत में **प.पू. दिनकरभाई** ने आशिष प्रदान किए –

...तीनों दिन बहुत-बहुत अन्तर्दृष्टि और आनंद का अनुभव हुआ। आज हम ऐसा सोचते हैं कि यह सभा की पूर्णाहुति का दिन है और थोड़ी देर में प्रसाद लेने के लिए भी जाना है। मगर एक बात पक्की करके जाएं कि ***यह पूर्णाहुति का दिन नहीं है। यह मंगलाचरण का दिन है।*** *यह नए साल का नया सप्ताह! नई साल मानो और उससे भी आगे यह नया दशक- डिकेड भी है। नए दशक के अंदर - काकाजी की शताब्दी नौ साल के अंदर आने वाली है, उसका ये मंगलाचरण है। हम सबकी एक पवित्र भावना है कि हम जानें कि काकाजी कौन थे और काकाजी ने हमारे लिए क्या-क्या किया है? मगर अब इस दशक के अंदर एक नई समझ लेनी है कि काकाजी के लिए हम क्या करें? काकाजी की ये शताब्दी के लिए हम क्या करें? उसके लिए ऐसा माहौल बनाया गया है। लास्ट ईयर जब हम इधर आए थे तब 'मैत्री मिलन महोत्सव' नामकरण हुआ, तो इधर पवई मंदिर की देरी के पास मकान की दीवार पर कांतिकाका और काकाजी की 'मैत्री मिलन' की छवि है, वह अंतर में बैठ गई। शास्त्रीजी महाराज के कहने से काकाजी ने कांतिकाका के साथ कैसी मैत्री की! भाई-भाई से भी आगे और कई प्रवचनों व कथा- वाणी में काकाजी कहते कि मेरा बड़ा भाई तो विद्यानगर में है, मगर मेरा ये 'गुणातीत भाई' इधर मेरे साथ है। काकाजी और पप्पाजी के 'मैत्री मिलन' को तो हमने देखा – सात साल के थे तब से। ऐसी ही काकाजी और नंदाजी की भी मैत्री, ऐसी ही काकाजी और स्वामिजी की मैत्री, ऐसी ही काकाजी की हर एक के साथ एन्डीविड्युअल मैत्री – उसका ये महोत्सव है। तो हम काकाजी को ऐसा परम मित्र मानें, इस हेतु से मैत्री मिलन महोत्सव का आयोजन किया है।*

मैं भी सोचता हूँ कि कहाँ दस हजार मील दूर पर छोटे से गाँव में हम सामान्य जीवन जी रहे थे। काकाजी ने इधर से आकर हमको पकड़ा और आज तक काकाजी

ने हमें कोई ऐसा-शिष्य का, उनके अनुयायी का-कोई संबंध नहीं दिया है, ऐसी कोई प्रोसेस नहीं की है। मगर हम काकाजी को ऐसा गुरु मानकर जी रहे हैं। हम सब भी इसी तरह से, जो भी हमारे गुणातीत स्वरूप हैं उनके अंदर ऐसा भाव लाकर जिएं और वो भाव उनके साथ लाने से नहीं आएगा, मगर उनके संबंध वालों के साथ मैत्री करने से आएगा। तो ***आज इधर से हम जाएं, तो एक संकल्प करके जाएं कि एक महीने के अंदर एक नया मित्र बनाना है।*** *एक महीने के अंदर नया मित्र इधर पवई में लाना है और हर एक नए मन्थ में मैत्री मिलन महोत्सव का नौ साल का जो नया चार्ट बने, उस टाईम लाइन में उस मित्र को एंटर करना है। हम यदि ये करेंगे, तो सचमुच हमारी भी मैत्री की मंडली बढ़ जाएगी। काकाजी उसके अंदर तेल भरेंगे, हम दीया जलाएंगे और वो ज्योत ज्वाला हो जाएगी... पवई के मंदिर में आने का जब भी टाईम मिले, तो भरतभाई, वशीभाई की कथावार्ता और बातें सुन कर आनंद करें।*

और... सभा के समापन पर 'मैत्री मिलन महोत्सव' में अपनी भावना व्यक्त करते हुए दिल्ली मंदिर के युवकों ने **'शताब्दी आई है काका की'** भांगड़ा प्रस्तुत किया। अंत में महोत्सव में आए सभी मुक्तों को 'काकाजी स्वरूप' मान कर स्वयंसेवकों ने हार अर्पण करके विदाई दी...

पूरे महोत्सव की समीक्षा के लिये निम्न दो टूक अभिप्राय पर्याप्त है–

पू. अश्विनभाई ने महोत्सव के दूसरे दिन की संध्या को ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के जीवन पर आधारित दिव्य संवाद देखने के बाद कहा –

इस प्रोग्राम से आने वाली पीढ़ी के साधकों को बहुत सच्चा और अच्छा मॅसेज देने के लिए धन्यवाद! धन्यवाद! धन्यवाद!

और

अंतिम दिन **पू. मल्कानी अंकल** ने केवल एक ही वाक्य में तीनों दिन की अनुभूति का विवरण देते हुए कहा –

धीज़ थ्री डॅईज़ हॅव बीन लाईक बीईंग इन ए स्पीरिच्युअल वंडरलेन्ड।

यूँ, यह महोत्सव वाकई सभी मुक्तों के जीवन की अमूल्य पूँजी तो बना ही; साथ ही **'काकाजी अमर रहो'** की भावना से युक्त गुणातीत समाज के इतिहास की एक चिरंजीव स्मृति बन गया!

सायं प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. ज्योति बहन मुक्तों को लेकर 'गोरेगाँव स्पोर्टस' क्लब में खूब आत्मीयता से जुड़े **प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी** के बेटे चि. दीपक एवं पुत्रवधू सौ. मानसी को आशीर्वाद देने गए। वहाँ पर भी युवकों ने दोबारा भांगड़ा किया, तो मानो वहाँ का माहौल भी दिव्यता से भर गया...

४ जनवरी की सुबह करीब साढ़े नौ बजे प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, पू. वशीभाई उत्तर के मुक्तों को लेकर प.पू. काकाजी महाराज की प्रसादी की जगह देखने **लोनावाला** गए। वहाँ **'तुलसी कुटीर'** में प.पू. काकाजी कई बार आकर ठहरे हैं और शिविर करीं हैं। पुराने तरीके के बने ऐसे स्थानों को देख कर आँखों में आसूँ आ गए कि हमारे प्रभु ने हमारे चैतन्य के विकास के लिए किस प्रकार खुद को अनुकूल बनाया, जबकि आज हम जैसों के लिए भी इससे बढ़ कर सुविधा की जाती है।

'तुलसी कुटीर' के दर्शन करने के बाद सूर्यास्त देखने के लिए सभी **'टाईगर पॉइन्ट'** गए। वहाँ अल्पाहार किया और रात को कच्छी सॅनीटोरियम में सभी ठहरे। अगले दिन **५ जनवरी** को दिल्ली-पंजाब के मुक्त बसों द्वारा 'मुंबई दर्शन' के लिए रवाना हुए और ताड़देव तीर्थस्थान, प.पू. गुरुजी के पूर्वाश्रम का घर, कॉलेज इत्यादि के दर्शन किए। इधर प.पू. गुरुजी लोनावाला से सीधा बोरीवली पू. महेन्द्र बापु के भाई **प.भ. भुपेन्द्रभाई** के सुपुत्र को शादी निमित्त आशीर्वाद

देने गए और दोपहर को प्रॉपर मुंबई से होते हुए प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी के घर रात को पहुँचे व वहीं रुके।

दिल्ली-पंजाब के मुक्त पवई के पास 'ओरिटॅल' सर्विस एपार्टमेन्ट में ठहरे हुए थे, सो पवई मंदिर में प्रसाद लेकर वे सब रात को वहीं पहुँच गए। **मुंबई जैसे स्थान पर जहाँ रहने की जगह मिलना सबसे बड़ी समस्या है, पौने तीन सौ मुक्तों के रहने की सुव्यवस्था करना न केवल हैरत की बात थी, बल्कि महिमाभरे दिल का दर्शन था...**

६ जनवरी की सुबह ट्रेन से जाने वाले मुक्त ताड़देव तीर्थस्थान के दर्शन करते हुए मुंबई सॅन्ट्रल स्टेशन पहुँच कर सायं राजधानी ट्रेन से दिल्ली के लिए रवाना हुए। और... प.पू. गुरुजी व कुछ मुक्त सायं साढ़े पाँच बजे की फ्लाईट से दिल्ली आने के लिए निकल गए।

✡✡✡

२० जनवरी २०१० – गुणातीत समाज के लिए ऐतिहासिक वसंतपंचमी...

भारतीय संस्कृति में वसंतपंचमी का दिन बहुत शुभ एवं पवित्र माना जाता है। यहाँ तक कि इस दिन तो किसी भी शुभ कार्य को करने के लिए मुहूर्त भी देखने की आवश्यकता नहीं पड़ती। इस दिन की ऐसी महत्ता है। भगवान स्वामिनारायण ने भी आज के दिन ही अपने आश्रितों के आचार, व्यवहार हेतु और प्रायश्चित् हेतु **'शिक्षापत्री'** रूपी आचारसंहिता देकर जीवन में सुखी रहने का सर्वश्रेष्ठ साधन दे दिया। **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज** ने ब्रह्म-परब्रह्म की, अक्षर-पुरुषोत्तम की, स्वामी-नारायण की-**'तत्त्वनिष्ठा'** को मूर्तस्वरूप देकर मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी द्वारा सदैव सनाथ रहने का जो वरदान मिला है, **उसे व्यापक बनाया।** यूँ, अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना का प्रवर्तन हुआ और गुरुहरि योगीजी महाराज ने हर एक घर में अक्षरधाम का सुख प्राप्त हो, इसलिए **'संघनिष्ठा'** के रूप में प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी एवं प.पू. कांतिकाका को निमित्त बना कर **'गुणातीत समाज' का सर्जन किया...**

१९६१ की वसंतपंचमी के शुभ दिन ही गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को पार्षदी दीक्षा दी थी। और... अब की बार 'वंसतपंचमी' को जब प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी का ७४वाँ प्राकट्य दिन, अमृतपर्व के प्रारंभ के रूप सांकरदा धाम में मनाया–वो स्मृति दिन तो था ही, परंतु यह उत्सव तो वाकई पूरे गुणातीत समाज के लिए ऐतिहासिक बन गया!

उत्सव में सर्वप्रथम सांकरदा के (पू. गुरुजी) **पू. निष्कामस्वामिजी** ने प्रार्थना की कि जिस हेतु हम यह उत्सव मनाने एकत्रित हुए हैं, वह हमारे जीवन में साकार हो... इसी प्रकार **पू. निर्मळस्वामिजी** एवं **पू. कोठारीस्वामिजी** ने भी माहात्म्य दर्शन कराते हुए प्रार्थना की कि प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की भाँति हम में दासत्वभक्ति प्रगटे और बापा का ब्रह्मसूत्र-'संप, सुहृद्‌भाव और एकता' जीवन में साकार हो।

माहात्म्य दर्शन के बाद पू. इलेशभाई ने उत्सव निमित्त भजन प्रस्तुत किया। और... उसके तुरंत बाद **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** ने आशीर्वाद दिए–

''...हमारा सारा गुणातीत समाज–चार पंखुड़ियों वाला सत्संग–वो काकाजी, पप्पाजी, कांतिकाका और बा ने ताड़देव से शुरु करके हमें भेंट में दिया है। उसके बाद सारा गुणातीत समाज बना और उसका नामकरण हुआ। यह ***गुणातीत समाज एक हो, ऐसी काकाजी के अंतर की भावना थी, ऐसी ही पप्पाजी के अंतर की भावना और संकल्प था...*** *पप्पाजी के दो संकल्प थे; जिनमें से एक यह कि सारे समाज के अंदर 'संप, सुहृद्‌भाव और एकता' हो। इसी के कारण आज यह*

हम सब एक हैं।

*अमृतपर्व की – जन्मदिन की - सभा नहीं है, बल्कि यह गुणातीत समाज का सम्मेलन है – मैत्री मिलन उत्सव का विभाग है... जब दिनकरभाई और भाइयों ने यही भावना प्रकट की थी कि काकाजी का संकल्प पूरा हो। तो, हम सब एक होकर रहें...**ये स्टेज पर जो पाँच स्वरूप विराजमान हैं वे भले अलग-अलग दिखाई देते हैं, लेकिन वे एक ही हैं...** क्योंकि इन पाँचों के अंदर अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति काम कर रही है, महाराज काम कर रहे हैं...*

...मुकुंदस्वामी के प्राकट्य दिन पर उत्सव होता है, तो वे सभी को इकट्ठा करते हैं। वे कहते हैं – 'योगी परिवार'!** तो सभी मिल कर एक-दूसरे के स्वभाव जँचा कर मिलते रहें... सच में – मैत्री तो शास्त्रीजी महाराज के वचन से काकाजी ने कांतिकाका के साथ की थी। कांतिकाका की प्रकृति अलग थी व काकाजी की प्रकृति अलग और पप्पाजी की प्रकृति अलग थी; फिर भी...। इसलिए इन दिव्य स्वरूपों से मैं ऐसी प्रार्थना करता हूँ कि आप अंतर से ऐसे आशीर्वाद दो कि **हम एक होकर जीवन जिएं और काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी जैसे स्वरूपों का ऋण अदा करें...।''

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी के आशीर्वाद के बाद भक्ति उत्सव की स्मृति कराते हुए उपस्थित पाँचों स्वरूपों – प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेबजी, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दिनकरभाई को एक साथ हार पहनाया गया। वे पाँचों हार एक बड़ी लड़ी से जुड़े हुए थे। अन्तर्निहितभावना यही थी कि ये स्वरूप भले अलग-अलग दिखते हैं, लेकिन हमें सभी को एक ही मानना है और... आज केवल प.पू. अक्षरविहारी-स्वामिजी का ही नहीं, बल्कि सभी स्वरूपों का प्राकट्य दिन है – ऐसी भावना के साथ वो अद्भुत हारविधि हुई। इसी प्रकार से पाँच स्टोरी की केक भी पाँचों दिव्य स्वरूपों द्वारा प्रसादी की करवाई और कटवाई।

इससे भी अधिक, गुणातीत समाज के इतिहास में एक और महत्त्वपूर्ण पन्ना जुड़ा, जब गुरुहरि काकाजी महाराज द्वारा दिए **'हम सब एक हैं'** के नारे को साकार करने के लिए प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की प्रार्थना पर प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. गुरुजी एवं प.पू. दिनकरभाई – ये पाँचों स्वरूप एक साथ एक-दूसरे के हाथ पर हाथ रख कर **'प्रतिज्ञा'** करने इकट्ठे हुए और... चारों स्वरूपों ने प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी से गुणातीत समाज का 'नेता' बन कर सब के मार्गदर्शक बनने की प्रार्थना की। **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** ने तब खूब भावपूर्ण हृदय से कहा –

गुरुहरि योगीजी महाराज ने स्वयं बताया है कि संप यानि – कभी भी एक-दूसरे के प्रति मनुष्यभाव नहीं आए। इसका दूसरा अर्थ यह भी होता है कि हम सब अक्षरधाम में हैं और अक्षरधाम के हैं। तो आज स्वामिजी के प्रागट्य दिन पर हम सब ऐसा संकल्प करें कि हम

'अमृतपर्व प्रतिज्ञा'

सब अक्षरधाम के हैं, ऐसे प्रभाव में रह कर गुणातीत स्वरूपों की सेवा करते रहें-करते रहें... निरंतर ऐसे भाव रख सकें... ऐसा महाराज और स्वामी, शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज, काकाजी और पप्पाजी, साहेब और स्वामिजी खूब-खूब बल दें – यही प्रार्थना... हम सब मिलजुल कर खूब ही आत्मीयता से अक्षरब्रह्म की शरीरी – भावना से दौड़ते ही रहें...

फिर, दोबारा **प.पू. साहेब** ने एक भुलके की भाँति विनती दोहराई –
स्वामिजी आप यूँ कहो कि – 'मेरे नेतृत्व में मैं सबको बल देता रहूँगा!'

पर, प.पू. स्वामिजी ने फिर यही कहा– *आप सब के लिए काकाजी और पप्पाजी की प्रसन्नता के लिए सभी के बड़े की हैसियत से (वडील स्थान पर रह कर) हम पाँचों मिल कर...*

सो, **प.पू. साहेब ने प.पू. काकाजी की स्मृति कराते हुए** प.पू. स्वामिजी को अब सच्चा मार्गदर्शन देते रहने के लिए आग्रह करते हुए कहा –
काकाजी तो उत्सव में - सभा में किसी को अच्छा लगता या बुरा लगता, पर वे सत्य कहे बिना रहते नहीं थे... इसी प्रकार आपसे प्रार्थना है – हम सब की प्रार्थना है...

तब जाकर आशीर्वाद देते हुए **प.पू. स्वामिजी** बोले – *मैं भी बापा, काकाजी और पप्पाजी को प्रसन्न करने के लिए जरुर से – जरुर से शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, प्रमुखस्वामी, महंतस्वामी के सान्निध्य में बात करता हूँ कि मुझे बल देना, जिसके फलस्वरूप हम पाँचों एक साथ मिलजुल कर, पाँचों एक साथ दौड़ कर गुणातीत समाज में एक सर्वोपरि सेवकभाव से उठाव ले सकें।*

और... **प.पू. साहेब** ने प्रार्थना करते हुए कहा –
खूब आनंद हुआ... योगीजी महाराज का संकल्प पूरा करने के लिए काकाजी - पप्पाजी हमारे पीछे इसी ढंग से लगे थे। अब हम सब स्वामिजी के नेतृत्व में मिलजुल कर गुणातीत समाज के जीवन के उत्थान का जो कार्य – ६६ में पार्टीशन हुआ, तब दादुकाका जो कहते – 'हमें अलग करने का अर्थ यह है कि चीला - चालु नहीं (रूढ़िगत नहीं), पर हम सब का जीवन परिवर्तन करके एक उत्थान – नया काम करने हम निकले हैं।'
तो काकाजी और पप्पाजी का वो संकल्प आपके सान्निध्य में पूरा हो, उसके लिए हम जाग्रतता से लगे रहें; जरुरत लगे तो हमें टोकना भी – यही आपके चरणों में हम सभी की ओर से प्रार्थना।

यह प्रतिज्ञा पूरी हुई कि **पू. निर्मळस्वामिजी** ने प्रार्थना की कि पाँचों स्वरूपों का स्वास्थ्य अब अच्छा रहना चाहिए; तो दूसरी ओर **प.पू. हंसा दीदी** ने भी एक प्रार्थना-पत्र बहनों की ओर से भिजवाया –
प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई और सभी मुक्तों...

आपने संकल्प किया और करवाया, तो मैं आज आपसे प्रार्थना करती हूँ कि अब तबियत अच्छी रखना; वर्ना दौड़ोगे कैसे? साथ ही साथ हमें भी भूलना नहीं।

हालाँकि संतों की हाज़िरी में होती सभा में प.पू. हंसा दीदी यूँ कभी इन्टरप्ट (हस्तक्षेप) नहीं करतीं। लेकिन अब की बार खूब उमंग और आत्मीयता युक्त संदेशा संतों की मर्यादा रखते हुए प.पू. हंसा दीदी ने लिख कर भेजा। मानो मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी से पू. मोटीबा अपनी बात मनवा रही हों, ऐसा सभी को लगा।

तत्पश्चात् **प.पू. गुरुजी** ने प.पू. अक्षरविहारी-स्वामिजी के कई मार्मिक प्रसंग एवं कई पुरानी स्मृतियाँ दोहराते हुए और जो प्रतिज्ञा ली गई थी, उसकी गहनता पर बात करते हुए कहा –
*...हम यह तनिक भी न मानें कि यह कोई किसी सीरियल का एपीसोड था। **साहेब ने बहुत अच्छी***

बात कही थी; *वो शायद सब को सुनाई नहीं दिया होगा कि* ***बापा ने हमें एक-दूसरे से ऐसा जोड़ा है, इसलिए ऐसा भाव होता है...***

स्वामी के लिए काकाजी ने कितनी बार कहा कि हरिप्रसाद हमारे नेता हैं। आज जब काकाजी – पप्पाजी स्थूल देह से हाज़िर नहीं, तब हम सब इन्हीं की छत्रछाया में हैं... इसलिए स्वामी भी अब मानें कि मैं केवल हरिधाम का नहीं हूँ; मैं सांकरदा, ब्रह्मज्योति, दिल्ली, शिकागो - इन सब का हूँ, इतना जरुर - जरुर रखें – इतनी अक्षरविहारीस्वामिजी के आज के प्राकट्य दिन पर प्रार्थना!

साथ ही प.पू. गुरुजी ने सहज ही प.पू. स्वामिजी से कहा कि पंजाब में ऐसा रिवाज़ है कि किसी को मुखिया बनाते हैं, तो उसे पगड़ी बांधते हैं। सो, साहेब आपको मुखिया की पगड़ी बांध दें...

प.पू. गुरुजी के आशीर्वचन के बाद **प.पू. साहेब** ने आशिष प्रदान किए –

...हम सभी को निराले आनंद की अनुभूति हुई। प.पू. स्वामिजी के सान्निध्य में प.पू. अक्षरविहारी-स्वामिजी का प्राकट्य पर्व एक अनोखे ढंग से मनाया जा रहा है... जब ***मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी को, दो सौ साल पहले, महाराज ने पोषी पूर्णिमा के दिन दीक्षा दी थी, तब भी २० जनवरी तारीख थी...*** *आज ऐसे दिव्यपुरुष के प्रागट्य पर्व पर सुंदर संकल्प हुए।*

हमें एकदेशस्थ ज्ञान में नहीं रहना... *अभी हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी, गुरुजी एवं दिनकरभाई में महाराज प्रगट हैं - यह बात हमारे जीवन में स्थापित हो। जो जिससे जुड़े हों, वे उनकी आज्ञा में रह कर निर्दोषबुद्धि से सेवा करें, तो ब्रह्मरूप हो जाएं। ये थियॉरी स्थापित हुई, लेकिन ऐसे गुणातीत संतों के दर्शन, सेवा, गुणगान समाज करने लगे, तो संप, सुहृद्‌भाव अपने आप बढ़ने लगेगा ही...*

...स्वामिजी हमारे नेता हैं। गुरुजी ने आज जो कहा, यूँ प.पू. पप्पाजी कई बार कहते थे कि ये दिव्य पुरुष ऐसा जीवन जी गए हैं, तो हम इस मार्ग पर चल रहे हैं... इन दिव्य पुरुषों ने हम सब का जतन किया है। इसीलिए तो हम सब मिलकर बैठ सकते हैं। हम इन दिव्य पुरुषों को पहचानने में गलती खाते हैं, इसीलिए सब झंझट रहते हैं...

देखने जैसे भगवान हैं; गुणातीतानंस्वामी ने कहा है – भजन करो। सब कुछ प्रभु कर रहे हैं और प्रभु जो कर रहे हैं, मेरे हित और उत्थान के लिए कर रहे हैं... ऐसी भावना रखेंगे, तो आपस में सुहृद्‌भाव बढ़ता जाएगा... भले कहीं भी साधना करते हो, लेकिन जब भी एक-दूसरे को मिलें, तो भगवान के भाव से मिलें।

अक्षरविहारीस्वामी का जीवन ऐसा है कि वे जहाँ जाएं, उन्हें सभी जँचते हैं और सब जगह जमता है। क्यों? योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी और स्वामिजी का अद्‌भुत सेवन करके उनके रूप बन गए हैं, इसलिए संप, सुहृद्‌भाव और एकता कर सकते हैं और रख सकते हैं। हम ऐसा जीवन जी सकें – जैसा स्वामिजी ने संकल्प करवाया। एक मन होकर रहें; यानि – किसी के प्रति मनुष्यभाव नहीं आए।

हमें दिव्य स्वरूपों की भेंट मिली है। सभी स्वरूपों से प्रार्थना कि ब्रह्मरूप होकर प्रभु की भक्ति का आंनद पाने का बहुत सुंदर मौका मिला है। तो हम आलस, गफलत में न रह कर, जब-जैसे मिलजुल कर रहने का मौका मिले, उसका श्रेष्ठ उपयोग आपकी प्रसन्नता के लिए करके, भक्ति का परम आनंद प्राप्त करते रहें...

प.पू. साहेब के आशीर्वाद संपन्न होते ही प.पू. गुरुजी द्वारा प.पू. स्वामिजी को पगड़ी बांधने के बारे में की गई बात को याद रखते हुए, **प.पू. हंसा दीदी** ने अपनी शाल भिजवाई और प.पू. साहेब की आज्ञा से, पू. विज्ञानस्वामिजी ने प.पू. स्वामिजी को उस शाल का साफा सिर पर बांध दिया। साथ ही प.पू. हंसा दीदी ने एक प्रार्थना भी लिख कर भेजी –

हरिप्रसादस्वामिजी को कहना है कि आप बहनों के भी नेता हैं और आप ही हैं, तो आप ही हमें अंतर से प्रेरणा करना! साथ ही उन्होंने शगुन का एक रुपया भी भिजवाया...

सभा के अंत में **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** ने आशीष प्रदान किए –

स्वामिजी का प्राकट्य दिन! उनकी ओर जब भी देखता हूँ, तो ***'दासत्व भक्ति'*** *का सहज ख्याल पड़ता है... बहुत-बहुत आत्मीयता से दौड़ने का हम सब संकल्प करें।* ***काकाजी और पप्पाजी के अथक परिश्रम के फलस्वरूप यह समाज तैयार हुआ है – खूब ही अद्‌भुत, कल्पनातीत!***

...स्वामिजी का जीवन देखता हूँ तो काकाजी-पप्पाजी उन पर अधिकार रख सकते थे, ऐसा सरल जीवन जिया है। हमें भी अपने बड़ों के पास बहुत-बहुत सरलता से जीने का लगातार प्रयत्न करना है...

जब तक पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ पॉज़िटीव नहीं होंगी, तब तक अंतःकरण कभी भी शुद्ध नहीं होगा... गुणातीत पुरुषों में डूबे रहना है, इसके अलावा कुछ करने जैसा ही नहीं है...

हमें काकाजी और पप्पाजी का खूब लाभ मिला है। स्वामिजी के प्राकट्य दिन पर महाराज और सभी स्वरूपों के चरणारविंद में एक ही प्रार्थना है कि हमें ऐसा अच्छा बुद्धियोग देना कि हम मोहताज़ हों, लेकिन आप न हों...

हमारी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। स्वामिजी के प्रति आपको प्रीति है, तो सेवन करना, संबंध दृढ़ करना। वो हमारी साधना है... बहुत सुंदर समय है, जागत रहना और भगवदी से संबंध करते रहना। प्रसंग तो बनने वाले ही हैं, लेकिन भगवान को कर्ताहर्ता मान कर बापा के बल से जीना है। प्रभु के बल से, उनके माथे पड़ कर जीना ही है। प्रसंग बना और तुम विचार में गए, तो 'माथे पड़े' नहीं कहा जा सकता। प्रसंग बना और तुमने भजन का उपाय लिया, तो उसे 'माथे पड़ा' कहा जाएगा... कैसे भी प्रसंग में हमारा आनंद न जाए।

...एक-दूसरे का स्वीकार, गुण और संबंध का स्वीकार कर लेना। पप्पाजी का सूत्र है कि देह और घर मंदिर बने। इसलिए तो सब सत्संग में आए हैं... जितनी निष्ठा पक्की होगी, उतना आनंद अखंड रहेगा। जितना निष्ठा में कच्चापन उतना आनंद जाता रहता है, उतनी उदासीनता और बैचेनी रहती है... इसलिए निष्ठा और भगवदी के बल से जीना है। ताड़देव निष्ठा का केन्द्र था, निरंतर निष्ठा की बातें होतीं... हम भी ऐसी निष्ठा पक्की करते रहें। आज के दिन सभी स्वरूपों के चरणों में यही प्रार्थना कि हमें ऐसा बल-बुद्धि-समझदारी देना, जिसके फलस्वरूप हमारा संबंध बढ़ता ही जाए...

प.पू. स्वामिजी के आशीर्वचनों के बाद सभी केन्द्रों के मुक्तों ने अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हुए प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी को हार व मुकुट अर्पण किए एवं सभा संपन्न हुई। **यूं, यह वसंतपंचमी ऐतिहासिक और अविस्मरणीय बन गई!**

आनंद इस बात का है कि बृहद् गुणातीत समाज को अलग-अलग प्रवाहों में बंटता देख कर १९७२-७३ से प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी उसकी अखंडता और एकता को संजोए रखने के लिए अकसर सचेत करते और इस संदर्भ में प.पू. काकाजी ने तो १९७४ में पत्रिका में निम्न 'सद्‌विचार' भी रखवाया था। समय के तक़ाज़े को (नीड ऑफ अवर) ध्यान में रखते हुए इस अवसर पर यह जो यु-टर्न लिया गया, उससे प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी सच में अंतर से खूब-खूब प्रसन्न होते होंगे और **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी द्वारा दिए गए आशीर्वाद के मुताबिक समग्र गुणातीत समाज में आत्मीयता का सुनहरा सूर्य अब प्रगट होगा ही।** तो, ऐसे उठाव की पहल करने के लिए **प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी** को जितना धन्यवाद करें, उतना कम है!

अभी तक के सारे आध्यात्मिक विकास के इतिहास में
एक साथ, एक ही समय, बराबरी के-समकक्ष के-दिव्यविभूति पुरुषों में
आंतरिक एकता और अद्वैतता स्थापित होकर, **विशाल और व्यापक रूप से समूह में–**
गुणातीत के अनेक दिव्य सखाओं के रूप में केवल प्रभु प्रसन्नता के लिए-सचेतन सक्रिय कार्य हो नहीं सका;
बल्कि अशक्य और नामुमकिन गिना गया है।
गुरुदेव योगीजी महाराज की अप्रतिम करुणा और अनुग्रह से
अत्यंत दुर्लभ से दुर्लभ विदेही मुक्तों के सामूहिक प्रकटीकरण की यह दिव्य योजना के मूल द्वार
हमेशा के लिए खुल्ले रख दिए हैं और **ऐसा माहौल भी बन रहा है।**
तो, इस दिव्यज्ञान की विरासत को झेलने और संपूर्ण पचाने की पात्रता हम में जल्दी से आए
और
उसके मूलभूत सनातन नियम भगवान स्वामिनारायण ने **वेदरस में** स्पष्ट बताए हैं–

★ ***समकक्षा की सभी दिव्यविभूतियाँ स्वतंत्र, फिर भी आपस-आपस में एक ही और अविभक्त हों***
तथा
★ ***मूल अक्षरब्रह्म के साथ सभी का अद्वैत और संपूर्ण साधर्म्य हो***
एवं
★ ***सहजानंदस्वामी के साथ अखंड स्वामीसेवकभाव हो।***

तो, जब इन तीनों तत्त्वों का
एक ही साथ संपूर्ण समत्व विदेही मुक्तों द्वारा सहज ही दिखाई दे और प्रकट हो,
तब वहाँ जानना कि परमचेतना ने जीव-प्राणी मात्र के
परम सुख, शांति, बल और आनंद के लिए जीवनधन्यता-कृतार्थता और पूर्णता को पराकाष्ठा पर पहुँचाया है।
गुणातीत का यह परम रहस्यज्ञान सभी के जीवन में जल्द से जल्द उतरे और चैतन्यदृष्टि प्राप्त करके,
सभी उस परमानंद के अधिकारी बनें – यही अभीप्सा।

મૂળ ગુજરાતી :

અત્યારસુધીના સમગ્ર આધ્યાત્મિક વિકાસના ઈતિહાસમાં
એકી સાથે એક જ વખતે સરખે સરખા સમકક્ષાના જ દિવ્યવિભૂતિ પુરૂષોમાં
આંતરિક એકતા ને અદ્વૈતતા સ્થાપિત થઈ, **વિશાળ ને વ્યાપકરૂપે સમૂહમાં**
ગુણાતીતના અનેક દિવ્યસખાઓ રૂપે કેવળ પ્રભુ પ્રીત્યર્થે સચેતન સક્રિય કાર્ય થઈ શક્યું નથી;
બલ્કે અશક્ય ને અસંભવિત લેખાયું છે.
ગુરૂદેવ યોગીજી મહારાજની અપ્રતિમ કરૂણા ને અનુગ્રહથી
એ અત્યંત દુર્લભમાં દુર્લભ વિદેહી મુક્તોના સામુદાયિક પ્રકટીકરણની દિવ્યયોજનાના મૂળદ્વાર
સદા માટે ખૂલ્લાં મૂકાયાં છે ને **તેવું વાતાવરણ પણ ઉપસ્થિત થઈ રહ્યું છે.**
તો, એ દિવ્યજ્ઞાનવારસો ઝીલવાની ને સંપૂર્ણ પચાવવાની પાત્રતા આપણામાં વ્હેલી તકે આવે

ને

તેનો મૂળભૂત સનાતન નિયમ શ્રીજી મહારાજે **વેદરસમાં** સ્પષ્ટ બતાવ્યો છે–

★ ***સમકક્ષાની સર્વ દિવ્યવિભૂતિઓ સ્વતંત્ર છતાંય અંદરોઅંદર એક જ ને અવિભક્ત હોય***

તથા

★ ***મૂળ અક્ષરબ્રહ્મ સાથે સૌનું ય અદ્વૈત ને સંપૂર્ણ સાધર્મ્યપણું હોય***

અને

★ ***સહજાનંદસ્વામી સાથે અખંડ સ્વામીસેવકભાવ હોય.***

તો, આ ત્રણેય તત્ત્વોનું

એકી સાથે સંપૂર્ણ સમત્વપણું વિદેહી મુક્તો થકી સહજ જ દર્શાય ને પ્રગટ થાય,

ત્યાં ને ત્યારે જાણવું કે પરમચેતનાએ જીવ-પ્રાણી માત્ર માટે

પરમસુખ, શાંતિ, બળ ને આનંદ માટેની જીવનધન્યતા–કૃતાર્થતા ને પૂર્ણતાને પરાકાષ્ટાએ પહોંચાડી છે.

ગુણાતીતનું આ પરમ રહસ્યજ્ઞાન સૌને વ્હેલી તકે જીવનમાં ઉતરે ને ચૈતન્યદૃષ્ટિ સાંપડી,

સૌ તેવા પરમાનંદના અધિકારી બનીએ એજ અભીપ્સા.

✡✡✡

गुण्यातीत समाज के सूत्रधार के साक्षात्कार दिन के अवसर पर...

कई वर्षों में एकाध बार ही ऐसे नक्षत्रों का शुभ योग होता है जब कोई विरल विभूति मानवदेह धारण करती है। यूं, मानो ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का प्राकट्य गुरुहरि योगीजी महाराज की क्रांतिकारी योजना को क्रियान्वित करने के लिए गुणातीत समाज के सूत्रधार के रूप में हुआ।

गुरुहरि योगीजी महाराज के मानस पुत्र व निर्दोष-बुद्धि के सम्राट **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन – ३ फरवरी** ज्यों-ज्यों नज़दीक आता है, त्यों-त्यों सभी का अंतर उनकी अनोखी छबि की स्मृति से सराबोर हो जाता है।

सदैव स्मित-आनंद बिखेरता दिव्य व्यक्तित्व...

निर्दोषता और दिव्यता भरे एवं हमेशा अमृत बरसाते नयन...

प्रथम दर्शन में मुमुक्षु फिदा हो जाएं ऐसी दिव्य आभा...

परब्रह्म की मस्ती से भरपूर गजगामिनी चाल...

अंतर को भेद कर अपना शासन कर लेती दिव्य प्रतिभा...

और

जो आज भी नेपथ्य में रह कर संबंध वालों की परवरिश के लिए आधी रात को भी तत्पर हैं–

ऐसे ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने गुरुहरि योगीजी महाराज के अंतर का रहस्य जान कर उनके अभिप्राय की भक्ति की। उनके रोम-रोम में केवल गुरुभक्ति ही थी, इसलिए **गुरुहरि योगीजी महाराज की प्रसन्नता के लिए उनके संबंध वालों की सेवा ही उनके जीवन का लक्ष्य था।** सो ही, अपनी प्रसन्नता उड़ेलते हुए गुरुहरि योगीजी महाराज ने उन्हें न केवल श्रीजी महाराज का दिव्य दर्शन करवाया, बल्कि अपने स्वरूप की यथार्थ पहचान कराई। इसीलिए तो ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज खूब ऑथेंटीसिटी से कई बार कहते भी–

मेरे भगवान मेरे निजी हैं। *(મ્હારા ભગવાન મ્હારા આગવા છે)*

और...

ऐसा दिव्य साक्षात्कार होते ही उन्होंने समाज में उद्घोष कर दिया–

'जोगी भगवान हैं। अक्षरधाम में जो स्वरूप है, वो ही यहाँ धरती पर विचरण कर रहा है। उनका आसरा कर लो; उनमें दृढ़ निर्दोषभाव कर लो; सुखी हो जाओगे।'

जात-कुजात, गुण-दोष कुछ भी देखे बिना जो-जो उनके संबंध में आए, उन सभी पर करूणा का धोध ही बहाया... **योगीबापा के संकल्प की सभी को लगन लगा कर उन्हें पूर्णता पर पहुँचाने के हेतु से गुणातीत समाज का सर्जन किया!**

इस कार्य हेतु उन्होंने अपनी पसंद-नापसंद को कोई स्थान नहीं दिया। उनके लिए सब कुछ सहज और सानुकूल था और... देश-परदेश, गाँव-गाँव– सभी जगह वे घूमे। जहाँ जाते, वहाँ सामने वाले मुक्त की कक्षा पर वे आ जाते। **उसी के अनुसार वर्तते और उसे अपनी दिव्य मूर्ति से आत्मीयता करवा देते। उसे प्रभु की भक्ति में लीन कर देते और फिर भी, खुद तो निर्लेप रहते**... केवल योगीबापा में ही उन्हें आसक्ति थी। अपनी अनंत योगकलाओं से उन्होंने सभी को खींचा। अथक परिश्रम करके जीव को दिव्य जीवन की राह पर अग्रसर किया।

योगी के वचन में झुक कर उनके विश्वासी बने। 'मैं' मिटा कर 'तू' रूप– **'योगीरूप' बने। तब भी स्वामीसेवकभाव तनिक चूके बिना वे कहते –**

''बापा को 'वे जैसे थे वैसे पूरे के पूरे' पहचाने तो नहीं, हमने थोड़ा पहचाना, तो आज गद्दी पर चढ़ बैठे हैं।''

इससे भी अधिक जिस गुरु को हृदयसमान माना, उन्होंने ही, मानो एक पोस्ट ग्रेज्युएट समाज का सामूहिक उत्थान करने के लिए, प.पू. काकाजी को सूत्रधार बना कर अपने से दूर किया; तब भी वे उनके प्रति ज़रा भी भावफेर किए बिना उनकी ही महिमा गाते रहे। कई बार तो कहते–

'बख़्शिश में बापा क्या दे गए हैं, उसका तुम्हें ख्याल ही नहीं।'

यूँ, गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति सर्वोपरिभाव एवं निर्दोषभाव दृढ़ कराने के लिए वे सदैव कटिबद्ध रहे।

और... गुणातीत समाज के एक-एक मुक्त की प्रगति करवाने, उसे अंतिम कक्षा पर ले जाने यानि–वो स्वभाव रहित होकर उसमें 'गुणातीत अस्मिता' प्रगटे इस हेतु वे तत्पर रहे।

१९८० में कुरुक्षेत्र की श्रीकृष्ण आयुर्वेदिक फार्मसी के काम के सिलसिले में छः-सात मुक्तों को वहाँ भेजते हुए उनसे यही कहा–

'मिलजुल कर, सुहृद्‌भाव से प्रभु की प्रेरणा के मुताबिक कार्य करने की तालीम लेने के लिए तुम्हें वहाँ भेज रहा हूँ।'

गुरुहरि योगीजी महाराज के ब्रह्मसूत्र **'संप, सुहृद्‌भाव, एकता'** को साकार करने – आकार देने के लिए उन्होंने अपने जीवन का अर्घ्य भी दे दिया, ताकि उस चोट से हम अपनी जड़ता में से बाहर निकल कर जाग्रत हो जाएं... **२६ जनवरी १९८६** को विद्यानगर में अंतिम संदेश द्वारा **गुणातीत समाज को 'मेग्नाकार्टा'** देकर हम सब के प्रति अपनी अनोखी-निरपेक्ष प्रीति का दर्शन भी कराया!

सच, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने एक विशाल हृदय से न केवल अपना सब साँझा माना, बल्कि अपने वर्तन से पल-पल इसी प्रकार से जीने की प्रेरणा दी है। ऐसे अविस्मरणीय व्यक्तित्व के विभु प.पू. काकाजी से खूब आत्मीयता से जुड़े एवं खूब विचक्षण **श्री सनतभाई महेता** के दिलो-दिमाग़ पर वे कैसे छा गए होंगे, यह उनके द्वारा **'जेवा में नीरख्या रे... भाग २'** में लिखे निम्न संदेश से ख्याल पड़ेगा!

दीर्घदृष्टा और क्रांतिकारी...

काकाजी क्रांतिकारी पुरुष थे। वे कहते कि –

'राजनीति तो ठीक है, लेकिन समाज में सामान्य लोगों में क्रांति लानी चाहिए।'

उन्होंने अपना समग्र जीवन लोक कल्याण के लिए बिताया था।

मुझे काकाजी खूब ही भाते थे। उनके विचार बहुत ही भाते थे।

उन्होंने केवल स्वामिनारायण सत्संग (के लिए) ही नहीं, अपितु समग्र मानवजाति के लिए
अपना सर्वस्व योगीजी महाराज के चरणों में अर्पण किया।

फिलहाल जो स्वामिनारायण धर्म विकसित है,

बहनें - भाइयों - संत व गृहस्थ जो अपना - अपना स्वतंत्र स्थान पाए हैं,

जो स्वतंत्र कार्य कर रहे हैं,

उसकी नींव में काकाजी मुख्यरूप से हैं।

'बहनें भगवान भज सकती हैं ?' – ऐसा योगीबापा से उन्होंने पूछा था।

बापा बोले – *'बहनों का कार्य करना होगा, तो गद्दी नहीं मिलेगी।'*

काकाजी ने गद्दी छोड़ दी। गद्दी कौन छोड़ सकता है ?

केवल सामान्य गिने जाएं – ऐसे संत काकाजी नहीं थे, बल्कि दीर्घदृष्टा और चिंतक थे।

पंथ उन्हें कभी बांध नहीं सकता था।

ऐसे काकाजी की इतने वर्षों के बाद भी मुझे इदम् स्मृति है।

आजकल मैं सब जगह 'आत्मीय' शब्द सुनता हूँ, देखता हूँ और पढ़ने में भी आता है।

इस शब्द से मुझे काकाजी की स्मृति हो आती है।

इस 'आत्मीय' शब्द का प्रयोग वर्षों पहले काकाजी ने किया है, बोला है और लिखा भी है।

काकाजी मुझे जब कभी पत्र लिखते थे, उसमें कभी भी उन्होंने 'प्रिय' या 'स्नेही' शब्द का प्रयोग नहीं किया,
बल्कि 'आत्मीय' शब्द का ही प्रयोग किया है।

उनकी भावना बहुत उच्च कक्षा की थी।

'आत्मीय' यानि 'स्नेही या प्रिय' होने से भी अधिक, अंतर से मिले – एक आत्मा से मिले हुए !

ऐसे काकाजी को मेरे लाखों वंदन। ❈

उपरोक्त लेख प.पू. काकाजी की अनोखी प्रतिभा का मौलिक दर्शन तो कराता ही है, साथ ही हमें जाग्रत करने झंझोड़ देता है कि –

क्या हम सच में प.पू. काकाजी के सिद्धांतों को पकड़ कर जी रहे हैं ?

या

ऐश्वर्य प्रताप, रिद्धि-सिद्धि की
अलौकिक भूमिका पर रुके रह कर,

'हमारी पूर्णाहुति हो गई' – इस भ्रम में जी रहे हैं ?

क्या हमारी निगाह सच में उनकी ओर है ?

सो, **जिस मक़सद से उन्होंने**
इस गुणातीत समाज का सर्जन किया था,
उसकी गहनता को समझते हुए,
उसकी गरिमा बरकरार रखते हुए
हम अपना प्रिय छोड़ कर, यानि–
अपनी पसंद-नापसंद, ये अपना-ये पराया जैसी,
अपनी क्षुद्र विचारधाराओं को तिलांजलि दे दें –
ऐसी उनके साक्षात्कार दिन पर अंतर की आरज़ू!

⁕ મૂળ ગુજરાતી :

દીર્ઘદૃષ્ટા અને ક્રાંતિકારી

કાકાશ્રી ક્રાંતિકારી પુરૂષ હતા. તેઓ કહેતા કે,
‘રાજકારણ તો ઠીક છે પણ સમાજમાં સામાન્ય લોકોમાં ક્રાંતિ કરવી જોઈએ.’
તેમણે પોતાનું સમગ્ર જીવન લોક કલ્યાણ માટે વાપર્યું હતું.
મને કાકાશ્રી ખૂબ જ ગમતા. તેમના વિચારો ખૂબ જ ગમતા.
તેમણે ફક્ત સ્વામિનારાયણ સત્સંગ જ નહીં, પરંતુ સમગ્ર માનવજાતિ માટે
પોતાનું સર્વસ્વ યોગીજી મહારાજના ચરણે અર્પણ કર્યું.
હમણાં જે સ્વામિનારાયણ ધર્મ વિકસ્યો છે,
બ્હેનો-ભાઈઓ-સંતો-ગૃહસ્થો જે પોતાનું આગવું સ્થાન પામ્યાં છે,
જે સ્વતંત્ર કાર્ય કરી રહ્યાં છે,
તેના પાયામાં કાકાશ્રી મુખ્યત્ત્વે છે.
તેમણે *‘બ્હેનો ભગવાન ભજી શકે ?’*– તેવું યોગીબાપાને પૂછયું.
બાપા કહે, *‘બ્હેનોનું કાર્ય કરવું હશે તો ગાદી નહીં મળે.’*
કાકાશ્રીએ ગાદી છોડી દીધી. ગાદી કોણ છોડી શકે ?
કાકાશ્રી એ સામાન્ય ભાષામાં ગણાય છે એવા માત્ર સંત ન હતા, પણ દીર્ઘદૃષ્ટા અને ચિંતક હતા.
પંથ એમને કદી બાંધી શકે નહીં.
એવા કાકાશ્રીની આટલાં વર્ષો પછી પણ મને ઈદમ્ સ્મૃતિ છે.
હમણાં હું બધે ‘આત્મીય’ શબ્દ સાંભળુ છું, જોઉં છું અને વાંચવામાં પણ આવે છે.
આ શબ્દથી મને કાકાશ્રીની સ્મૃતિ થઈ આવે છે.
આ ‘આત્મીય’ શબ્દ કાકાશ્રીએ વર્ષો પહેલા વાપર્યો છે, બોલ્યા છે અને લખ્યો પણ છે.
કાકાશ્રી મને કોઈ વાર પત્ર લખતાં તેમાં કદીએ તેમણે પ્રિય કે સ્નેહી શબ્દ નથી વાપર્યો.
પરંતુ ‘આત્મીય’ શબ્દ જ વાપર્યો છે.
તેમની ભાવના ઘણી ઊંચી સ્થિતિની હતી.
‘આત્મીય’ એટલે સ્નેહી, પ્રિય હોવા કરતાં પણ અંતરથી મળેલા-એક આત્માથી મળેલા.
એવા કાકાશ્રીને મારાં લાખો વંદન.

[પ.ભ. સનતભાઈ મહેતા - વડોદરા]

✡✡✡

गुणातीत समाज की हुताशनी एवं धुलेन्डी...

हुताशनी फाल्गुनी की पूर्णिमा यानि– 'भक्त' का विजय दिन! पौराणिक कथा के अनुसार भगवान ने नरसिंह अवतार लेकर भक्त प्रहलाद् को जलती होलिका की गोद में से भी सुरक्षित बचा लिया। यूँ भक्त की विजय हुई, असुरों का नाश हुआ और धर्म की जय जयकार हुई। आध्यात्मिक दृष्टि से गूढ़ अर्थ यही है कि जो भक्त केवल प्रभु का बल लेकर, उनकी प्रसन्नतार्थ जीवन जीता है, उसकी, बाह्य एवं आंतरिक कुरुक्षेत्र से, प्रभु सदैव रक्षा करते हैं। ऐसे सांकेतिक दिन पर अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संप्रदाय की दिव्य विभूति **अनादि महामुक्त भगतजी महाराज का प्राकट्य हुआ।**

श्री रघुवीरजी महाराज के साथ अनादि महामुक्त गोपाळानंदस्वामिजी पीठवड़ी गाँव में पधरामनी में थे, तब वहीं महुआ के दर्जी परिवार के प्रागजी भक्त (भगतजी महाराज) ने स्वामिजी के पहली बार दर्शन किए। इस प्रथम दर्शन में ही **पू. गोपाळानंदस्वामिजी** ने कहा – ***'इसकी और हमारी पूर्व की पहचान है।'*** वहाँ के मंडल को आश्चर्य हुआ कि यह छोटा-सा लड़का पहली बार ही दर्शन करने के लिए आया है और स्वामी कहते हैं कि इसकी तो पूर्व की पहचान है! तब स्वामी ने उनके पूछने पर बताया –

यह तो पूर्व का प्रगट पुरुषोत्तम का भक्त है और इस जन्म में वह बड़े संत को सच में राजी करेगा। ऐसा बलिष्ठ है और हज़ारों को भगवान भजवाएगा।

यूं संवत १८९५ से भगतजी गोपाळानंदस्वामिजी के योग में आए और संवत १९०८ तक यानि तेरह साल तक स्वामिजी की अनन्य भाव से सेवा करके उन्हें राजी कर लिया। साथ ही भगवान के भक्त के प्रति उनकी माहात्म्ययुक्त सेवा-भावना ने प्रभु प्राप्ति की लगन लगा दी...

प्रागजी भक्त की झीणाभाई के साथ मित्रता थी। अतः वरताल के किसी भी उत्सव के लिए जब महुआ का संघ जाता, तब प्रागजी भक्त झीणाभाई के साथ जाते। रोज अट्ठारह कोस चलते। रास्ते में जहाँ ठहरते, वहाँ झीणाभाई की सेवा करते। उन्हें हल्के गरम पानी से नहलाते, भोजन बना कर खाना खिलाते, बिस्तर लगा देते और पाँव दबाते। इस प्रकार, भगवान के भक्त की अपार महिमा समझ कर झीणाभाई की बहुत ही सेवा करते। इसके अतिरिक्त भक्तों से भी झीणाभाई की महिमा की बातें करते हुए कहते :

'इन झीणाभाई ने मुक्तानंदस्वामी का सेवन करके उन्हें राजी कर लिया है और महाराज के दर्शन किए हुए हैं।'

उनकी महिमा की बहुत सी ऐसी बातें करते, जो सुनने वाले के अंतर में घर कर लेतीं। यूँ देह से झीणाभाई की सेवा करके, वचन से उनका गुणगान गाकर और मन से उन्हें सर्व प्रकार से निर्दोष समझते हुए भगवान के भक्तों को भगतजी महाराज ने खूब राजी कर लिया। उनकी ऐसी लगन देख कर सभी के मन में ऐसा होता कि *'यह तो बड़े साधु को सच में राजी करेगा।'*

और... वाकई अंत समय में प्रसन्नता व्यक्त करते हुए गोपाळानंदस्वामिजी ने उन्हें **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी** के पास जाने का आदेश देते हुए आशीर्वाद दिए–

धड़ तक तो मैंने घड़ दिया है, अब बाकी की घड़ाई जूनागढ़ के जोगी पूरी करेंगे।

इससे भी अधिक, प्रथम मिलन में ही मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने उन्हें प्रभु प्राप्ति की कुंजी दे दी –

सच में विश्वास रखोगे और हमारी बातों को परम सत्य मान कर जिओगे, तो मूर्ति जल्द ही पूरी हो जाएगी।

यूँ, पू. भगतजी महाराज ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी का अंतर से समागम करके देहभाव को ऐसे चूर-चूर कर दिया कि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने उन्हें अपना सारा ऐश्वर्य दे दिया। उनकी ऐसी ब्राह्मीस्थिति देख कर कई हरिभक्तों ने स्वामी से कहा–

'स्वामी! आपने यह क्या किया? किसी ब्राह्मण, साधु या ब्रह्मचारी जैसे उच्च वर्ण के व्यक्ति को ऐसे यह ऐश्वर्य देना चाहिए था। दर्जी जाति वाले को ऐसा अपार ऐश्वर्य क्यों दे दिया? अब उच्च वर्ण के संतों-मुक्तों के बजाय लोग ऐसे पिछड़े वर्ण से कथा सुनेंगे या उसे दंडवत् करेंगे यह उचित नहीं है। साथ ही वो आपकी पहचान 'मूल अक्षरब्रह्म' के रूप में कराते हैं, वह भी ठीक नहीं है। आपको उसे ऐसा ऐश्वर्य देने की कैसे सूझी?

तब स्वामी ने हँस कर कहा–

*'प्रागजी भक्त ने तो **मेरी मन, कर्म, वचन से सेवा करते हुए देह को नहीं गिना है।** सो, मैं राजी हुआ और मेरे हाथ से आशीर्वाद फिसल गए। अब कोई उपाय नहीं है।'*

ऐसा सुन कर हरिभक्त बोले–

'आप उसका ऐश्वर्य वापिस खींच लो।'

तब स्वामी बोले–

'यह कोई ऐरी-गैरी बात नहीं कि वापिस ले ली जाए। यह तो पाताल तक की गहरी नींव जैसी है। प्रागजी को मैंने जो विद्या सिखाई है, वह उसने तीन साल मेरे पास रह कर सिद्ध की है और तुम कहते हो कि पात्र देख कर देना चाहिए। जिसे देना आता है, उसे पात्र घड़ना भी आता ही होगा न? सो, इस बारे में चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है।'

यूँ, भगवान और बड़े साधु कोई जाति, वर्ण, आश्रम को देखते नहीं हैं। वे तो मन, कर्म, वचन से जो (उनका) 'प्रसंग' करे, उसे अपने जैसा ही बना देते हैं। इसीलिए तो भगतजी खुद भी यह कहते–

'महाराज का किया भी मैं विमुख नहीं हो सकता। किसी का 'अभाव' लूँगा तो विमुख होऊँगा न!'

सो, भावातीत-देहातीत आदर्शमूर्ति भगतजी महाराज के प्रागट्य दिन पर हम–

अपने पुराने ढाँचे-रवैये की होली जला कर,

अभाव-अवगुण का रास्ता बिल्कुल ही बंद करने का ठान लें

और

संबंध वाले मुक्तों की महिमा समझते हुए,

एक-दूसरे के पूरक बनने की भावना उजागर करने के लिए अब लग ही पड़ें–ऐसी प्रार्थना!

इसी प्रकार हुताशनी के दूसरे ही दिन '**धुलेन्डी**' का महामंगलकारी पर्व! आपस के गिले-शिकवे, राग-द्वेष भूल कर अबीर-गुलाल एवं उमंग व उत्साह के माहौल में जब सब आनंद मग्न होते हैं, ऐसे सांकेतिक दिन प्रभु ने **प.पू. साहेब** को भी धरा को धन्य करने भेजा। और... प्रभु की ऐसी अनमोल सौगात को गुरुहरि योगीजी महाराज ने अपना 'भागीदार' बनाया! यूं, प.पू. साहेब यानि –अनादि के स्वरूप! जिनकी हसीन छवि, अनूठा हास्य सहज ही सब को अपनी ओर खींचता है...

पहले से उनके अंतर में ऐसा भाव था कि माँ-बाप को राजी कर लेना है और ऐसी ही भावना से गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ वे जुड़ गए। साथ ही बापा के अलौकिक स्नेह के आधीन होकर उनके **'संबंध वालों का ही पक्ष'** यह प.पू. साहेब की जीवनशैली बन गई।

सच, सभी साधकों के लिए प.पू. साहेब का जीवन आदर्श और मननीय है। एक साधक की रीति से प.पू. साहेब का बापा के साथ का संबंध निहारें तो– उनके जीवन में 'ना' शब्द का कोई स्थान ही नहीं था। उन्होंने अपना कोई आदर्श, मान्यता, इच्छा-महत्त्वकांक्षा प्यारी नहीं रखी।

बापा के समक्ष मन-बुद्धि से परे की सरलता रखते हुए अद्‌भुत संबंध दृढ़ कर लिया

और...

वे कैसे राजी हों – यही उनका जीवन ध्येय सभी साधकों के लिए एक अद्‌भुत मिसाल बना।

* साहेब को पढ़-लिख कर अच्छी कीर्ति प्राप्त करनी थी। सो, सायन्स में उन्होंने ग्रुप 'ए' पसंद किया। परंतु, बापा ने आज्ञा की –

  १. *'तुम ग्रुप 'बी' रखो।'*

  २. *'तुम युवक मंडल का कार्य उठा लो...'*

  सरलता के मूर्तस्वरूप प.पू. साहेब ने अपनी इच्छाएं बापा को समर्पित करके उनकी पसंद को न केवल स्वीकार किया, बल्कि उनकी योजना में साथ देने के लिए खूब तीव्रता से लग भी पड़े।

* साहेब एक बार कॉलेज के चुनाव में खड़े हुए। उनके प्रतिद्वंदी की विजय हुई। परंतु प.पू. साहेब की सरलता और प्रभु संबंध की मस्ती से भरपूर प्रतिभा ने प्रतिद्वंदी के दिल को जीत लिया। उस समय के उनके प्रतिद्वंदी और कोई नहीं, बल्कि हम जिन्हें अब उनके साथी के रूप में जानते हैं – वे **पू. वी. एस. पटेल साहेब** थे। उन्होंने भी बापा की योजना में साथ देने के लिए जीवन समर्पित तो किया ही, साथ ही प.पू. साहेब को गुरु स्थान पर रख कर पूर्ण निष्ठा से अपना जीवन समर्पित कर दिया!

* एक बार प.पू. साहेब ध्यान कर रहे थे। उनके साथीदार ने पूछा –

  'क्यों, क्या योजना बना रहे हो?'

  तुरंत ही साहेब बोले –

  'जोगी के विश्वास पर छलाँग लगाई है, वे जहाँ ले जाएं, वहाँ जाएंगे। बाकी हमें कौन-सी योजना बनानी है?'

  सायन्स के विद्यार्थी तो ज़्यादातर तार्किक ही होते हैं। परंतु साहेब ने प.पू. बापा के पास अपनी तर्कबुद्धि को मानो तिलांजलि ही दे दी थी। उन्हें बापा का कल्पना से परे का कैसा विश्वास होगा, तभी तो सहज ही ऐसे उद्‌गार मुख से निकले होंगे।

* एक साधक का किसी साधक के साथ काफी समय से कुछ न कुछ प्रसंग बनता होगा। अतः साहेब के समक्ष उसने जैसे ही सारी बात रखी, साहेब तो उठ कर चलने ही लगे। वह साधक जवाब के लिए पीछे ही पड़ा रहा। तब साहेब ने कहा –

  'बापा ने एक बार उसे साधु बनाया था, इसलिए मेरे लिए तो वह सिर का ताज है।'

प.पू. साहेब को बापा एवं उनके संबंध वाले मुक्तों का कैसा माहात्म्य होगा? तभी उनके लिए यह बात कहनी और दिल से माननी आसान थी। हमें तो सत्पुरुष ने यदि ख़ास सूचना दी भी हो कि तुम्हें फलां मुक्त को प्रभु का स्वरूप मान कर दिव्य ही मानना है, तब भी **अपने सयानेपन में सत्पुरुष की उस सूचना को हम नज़रअंदाज कर देते हैं और अपने आप में मान लेते हैं कि हम तो हर क्षण गुरुमुखी ही हैं।**

संबंध की दृष्टि एवं प्रेम के समन्वय से भरपूर साहेब गुणातीत समाज के युवकों के जीवनप्राण समान पुरुष हैं – गुणातीत ज्योतिर्धर हैं। कैसी भी विपरीत परिस्थिति क्यों न हो, वे हमेशा सरलता से ही वर्ते हैं। **कड़वे, तीखे, कटाक्षभरे शब्दबाण उनके मुख से कभी निकले ही नहीं हैं।** सभी की आत्मा में विराजित होकर, सभी के हृदय को उन्होंने स्नेह से जीता है। ऐसी दिव्य विभूति के प्राकट्य दिन पर उनके श्री चरणों में यही प्रार्थना कि आपकी कृपादृष्टि और अनुग्रह से हमारी वाणी, वर्तन और विचार में ऐसा माधुर्य – ऐसी सहजता, सरलता एवं ध्येयनिष्ठा दृढ़ हो...

✡✡✡

'योगी परिवार का अद्भुत सर्जन..... प.पू. काकाजी की सौरभ!'

याद कराने...

2012 के मंगलमयी वर्ष में प.पू. गुरुजी का 75 वां प्राकट्योत्सव
'योगी परिवार अमृत आनंदोत्सव' के रूप में मनाएंगे;
जब **'एकता ही एकांतिकभाव'** के सिद्धांत से ब्रह्मकिल्लोल करने का
एक अनमोल मौका हम सभी को मिलेगा।
सो, हम 'गुरुभक्ति' अदा करने का यह मौका न चूकें...
प.पू. गुरुजी के 75 वें प्राकट्योत्सव निमित्त
प.पू. गुरुजी और प.पू. काकाजी के अनुभव,
जो आपको भीतर तक छू गए हों,
उन्हें हिन्दी/ अंग्रेजी में लिख कर नीचे दिए पते पर भेजते रहें,
जिससे कि 'भगवत् कृपा' के इस स्तंभ के अंतर्गत
वो देने की भक्ति हमसे अदा हो सके।

सेवक **प्रभाकर** के हार्दिक जय स्वामिनारायण!

યાદ કરાવવા...

2012 ના મંગળકારી વર્ષે પ.પૂ. ગુરૂજીનો ૭૫મો પ્રાગટ્યોત્સવ
'યોગી પરિવાર અમૃત આનંદોત્સવ' રૂપે ઊજવીશું;
જ્યારે **'એકતા એ જ એકાંતિકપણું'**ના સિદ્ધાંતે બ્રહ્મકિલ્લોલ કરવાનો
એક લ્હાવો અમ સહુને મળશે.
આપણે 'ગુરૂભક્તિ' અદા કરવાનો આ લ્હાવો ચૂકીએ નહીં...
પ.પૂ. ગુરૂજીના ૭૫મા પ્રાકટ્યોત્સવ નિમિત્તે
પ.પૂ. ગુરૂજી અને પ.પૂ. કાકાશ્રીના અનુભવ-પ્રસંગો
જે આપને અંતરતમ સુધી સ્પર્શી ગયા હોય,
એ ભલે ગુજરાતીમાં લખીને નીચેના સરનામે* મોકલતા રહેશો,
જેથી 'ભગવત્ કૃપા'ના આ સ્તંભ હેઠળ
એ આપવાની અમે ભક્તિ અદા કરી શકીએ.

સેવક **પ્રભાકર**ના હાર્દિક જય સ્વામિનારાયણ!

---

*प.भ. प्रभाकर राव / प.पू. आनंदी दीदी C/o 'भगवत् कृपा'
श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर, 'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार-III, दिल्ली – 110 052
फोन – 4709 1281, 2730 1327 फॅक्स: 4709 1280 ई मेईल – taaddev@ydsd.org, aksharjyoti@ydsd.org

आशीर्वाद...

પ.પૂ. ગુરૂજી તરફ દૃષ્ટિ કરીએ છીએ ત્યારે એવું લાગે છે કે
તેમનામાં એવી કોઈ દિવ્ય શકિત છે જે–
પરિચિતો કે અપરિચિતોના
અને
જે ભક્તોના જીવન તેમની સાથે જોડાયેલ છે
તથા
જેઓ પ.પૂ. ગુરૂજીના પ્રથમ વાર જ દર્શને કરે છે, તેઓ અપાર શાંતિ પામે છે
અને
તેઓના જીવનમાં અપૂર્વ આનંદ છવાય છે
અને પછીથી
પ.પૂ. ગુરૂજી તરફથી તેઓને સતત સ્પષ્ટ માર્ગદર્શન મળવાથી
અનુપમ શાંતિનો અનુભવ તેમના જીવનમાં થાય છે.

પ.પૂ. ગુરૂજીની અમૃતમય વાણી દરેક ભક્તોના જીવનના ઘડતરમાં અમૂલ્ય ભાગ ભજવે છે. જેઓ પોતાના આત્માના સુખ-શાંતિ પ્રાપ્ત કરવા માટે અતિશય પુરૂષાર્થ કરીને અનેકવિધ શાસ્ત્રોના અભ્યાસ કરવાની કોશિશ કરી રહ્યા છે, તેવા મુમુક્ષુજનો માટે પ.પૂ. ગુરૂજીની અમૃતવાણી સાંભળવાથી અને તેઓના અમૃતવચનનું મનન અને નિદિધ્યાસન કરવાથી તેઓને અપાર સુખ-શાંતિનો અનુભવ થાય છે.

પ.પૂ. ગુરૂજી, જેઓએ પ.પૂ. કાકાજીના એક વચને
ગુરૂહરિ પ.પૂ. યોગીજી મહારાજના સંકલ્પને પૂરો કરવા તેઓના હસ્તે દીક્ષા ગ્રહણ કરી
અને પછીથી
પ.પૂ. કાકાજીના સંકલ્પે દિલ્હી રહ્યા
અને ત્યારબાદ
ગુરૂહરિ પ.પૂ. યોગીજી મહારાજના સંકલ્પને પૂરો કરવા
દિલ્હી મંદિરમાં અક્ષરપુરૂષોત્તમની યુગલ ઉપાસનાની મૂર્તિઓનું સ્થાપન કરીને
એક મરણિયા જીવંત સમાજના ભક્તોનું જ્યારે ઘડતર કરી રહ્યા છે
ત્યારે એવું સ્પષ્ટ દેખાય છે કે–
જ્યારે પ.પૂ. કાકાજી આપણી વચ્ચે સ્થૂળ દેહે નથી વિચરી રહ્યા ત્યારે
પ.પૂ. ગુરૂજી અસંખ્ય મુમુક્ષુ હરિભક્તો માટે કાકાજીસ્વરૂપ બનીને

તેઓના આત્માની ગતિ પ્રભુમય બને તેના માટે અથાગ પુરૂષાર્થ કરી રહ્યા છે.
પ.પૂ. કાકાજી પ્રત્યેની અખૂટ ભક્તિ, ઉપાસના અને અતિદૃઢતાનું
પ.પૂ. ગુરૂજીના જીવનની પ્રત્યેક ક્ષણમાં, તેમના હલનચલનમાં અને તેમની વાણીમાં
સહુ કોઈ હરિભક્તોને દર્શન થઈ રહ્યું છે.
દિલ્હી તથા ઉત્તરભારતના હરિભક્તોમાં
પ.પૂ. ગુરૂજીએ પ્રગટાવેલી આત્મીયતાના દર્શન સહુ કોઈને આજે થઈ રહ્યા છે.
પ.પૂ. કાકાજી જેઓ પોતે એવા ભજનિક હતા અને તેઓએ સ્વામિનારાયણ મંત્રની ધુનનો જે અહાલેક
સતત તારદેવની ધરતી પર રહીને વહાવ્યો હતો,
એવોને એવો જ અહાલેક પ.પૂ. ગુરૂજીએ દિલ્હી મંદિરમાં રહીને પોતે તો અવિરત ચાલુ રાખ્યો છે;
ને એવા જ ભજનિક સમાજનું સર્જન કર્યું છે –
જે આધ્યાત્મિક ઇતિહાસમાં સુવર્ણ અક્ષરોએ લખાયેલ છે.
આથી જ મને આજે એવું લાગી રહ્યું છે કે
પ.પૂ. ગુરૂજી એ ગુરૂજી કે સાધુ મુકુંદજીવનદાસ નથી રહ્યા,
પણ –
આજે તેઓ સાક્ષાત્ પ.પૂ. કાકાજીસ્વરૂપ થઈ અનેક મુમુક્ષુજીવોના આધારસ્તંભ બની
તેઓના જીવનમાં નજીક રહીને અથવા દૂર રહ્યા થકા પણ સતત તેઓના પ્રેરણાદાતા બની રહ્યા છે.
એજ, સેવક **સાધુ નિર્મળદાસના**
જય શ્રી સ્વામિનારાયણ.

[प.पू. निर्मलस्वामिजी के आशीर्वाद का हिन्दी अनुवाद]

प.पू. गुरुजी की ओर दृष्टि करते हैं, तब ऐसा लगता है कि
उनमें ऐसी कोई दिव्य शक्ति है, जिससे –
परिचित या अपरिचित
एवं
जिन भक्तों का जीवन उनके साथ जुड़ा हुआ है
और
जो प.पू. गुरुजी के पहली बार दर्शन करते हैं, वे अपार शांति प्राप्त करते हैं
और
उनके जीवन में अपूर्व आनंद छा जाता है
और फिर –
प.पू. गुरुजी द्वारा उन्हें सतत स्पष्ट मार्गदर्शन मिलने से
अनुपम शांति का अनुभव उनके जीवन में होता है।
हर एक भक्त के जीवन को घड़ने में प.पू. गुरुजी की अमृतमय वाणी का अमूल्य योगदान है। अपनी आत्मा में

सुख-शांति प्राप्त करने के लिए अतिशय पुरुषार्थ करके, कई शास्त्रों का अभ्यास करने की कोशिश कर रहे मुमुक्षुओं को प.पू. गुरुजी की अमृतवाणी सुनने से एवं उनके अमृत वचन का मनन और निदिध्यासन करने से अपार सुख-शांति का अनुभव होता है।

प.पू. गुरुजी, जो कि प.पू. काकाजी के एक वचन पर
गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज के संकल्प को पूरा करने के लिए
उनके करकमलों से दीक्षा ग्रहण करके बाद में–
प.पू. काकाजी के संकल्प से दिल्ली रहे
और तत्पश्चात्
गुरुहरि प.पू. योगीजी महाराज के संकल्प को पूरा करने
दिल्ली मंदिर में अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना की मूर्तियों की स्थापना करके
मर-मिटने वाले भक्तों का एक जीवंत समाज का जब निर्माण कर रहे हैं,
तब ऐसा स्पष्ट दिखाई देता है कि
अब जब प.पू. काकाजी हमारे बीच स्थूल देह से नहीं रहे,
तब प.पू. गुरुजी असंख्य मुमुक्षु हरिभक्तों के लिए काकाजीस्वरुप बन कर
उनकी आत्मा की गति प्रभुमय बने इस हेतु अथक पुरुषार्थ कर रहे हैं।
जीवन में प.पू. काकाजी के प्रति की अखूट भक्ति, उपासना और अतिदृढ़ता का
प.पू. गुरुजी के जीवन की प्रत्येक क्षण में, उनके हलन-चलन में और उनकी वाणी द्वारा
हर एक हरिभक्त को दर्शन हो रहा है।
दिल्ली तथा उत्तरभारत के हरिभक्तों में
प.पू. गुरुजी द्वारा प्रगटाई आत्मीयता का दर्शन सभी को आज हो रहा है।
प.पू. काकाजी जो खुद तो ऐसे भजनिक थे ही
और उन्होंने
स्वामिनारायण मंत्र की धुन की जो अलख ताड़देव की धरती पर रह कर सतत बहाई थी
वैसी की वैसी अलख प.पू. गुरुजी ने दिल्ली मंदिर में रह कर स्वयं तो अविरत जारी रखी ही है;
इससे भी अधिक, ऐसे भजनिक समाज का सर्जन किया है,
जो आध्यात्मिक इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है।
इससे ही मुझे ऐसा लग रहा है कि
प.पू. गुरुजी वो गुरुजी या साधु मुकुंदजीवनदास नहीं रहे,
बल्कि–
आज वे साक्षात् प.पू. काकाजीस्वरुप होकर अनेक मुमुक्षु जीवों के आधारस्तंभ बन कर
उनके जीवन में नज़दीक रह कर या दूर रह कर भी सतत उनके प्रेरणादाता बने हैं।
यही–
सेवक **साधु निर्मळदास** के
जय श्री स्वामिनारायण!

सौरभ - ८ કાકાજી સ્વરૂપ પ.પૂ. ગુરૂજી (મુકુંદજીવનસ્વામીજી) વિષે...

ગુરૂજીનો એવો કોઈ નિકટનો અનુભવ કે જોગ નથી, પરંતુ પપ્પાજીએ કહેલ વાત, સમૈયા અને પ્રસંગોપાત માહાત્મ્યનું દર્શન થયું છે, જે પ્રત્યક્ષ અનુભવાયુ છે, તેમાનું શેષ લખવા પ્રત્યન કરૂં છું. પ્રભુ! આપ લખાવજો.

...તારદેવની એ ધરતી પર બા અને કાકા-પપ્પાના બે કુટુંબને બાપાએ ભેગા કર્યા! *'જોગી ભગવાન છે! જોગી ભગવાન છે!'* એવી બ્યુગલપાર્ટીના ત્રણ સૂત્રધાર કાકાજી-પપ્પાજી-બા હતા! બાપા કહે તે શું ના થાય ? **બાપા કહે *'મારે ૫૧ નવયુવાનોને સાધુ બનાવવા છે!'*** આ સંકલ્પને સિદ્ધ કરવો એટલે નેવાના પાણી મોભે ચડાવવા જેવું કઠણ કામ હતું. **આ બીડું કાકાજીએ ઝીલ્યું ! અને પપ્પાજી-બા તેમાં ભળ્યા.** વળી **બીજો સંકલ્પ બાપાએ બ્હેનોને ભગવાન ભજાવવાનો કર્યો. આ બે સંકલ્પની પાછળ આ ત્રિપુટીએ ચાહોમ કર્યું !** મુંબઈ જેવી નગરીમાં તારદેવના ઘરમાં ગુણાતીતજ્ઞાનનો અખાડો શરૂ થયો! પ્રેમ અને જ્ઞાનની એ ગંગામાં પૂર્વના ચૈતન્યો આવી-આવીને પલળવા લાગ્યા. **એમાં આવ્યા** આ **પૂ. દિલીપભાઈ**... અસાધારણ આત્મબુદ્ધિ ને પ્રીતિથી સત્સંગમાં સામેલ થયા...

(અ) કાકાશ્રીના વચને સાધુ થયા! (દિલીપમાંથી સાધુ મુકુંદજીવન બન્યા.)
દિલ્હીમાં જઈને રહ્યા, એમના વચને જીવ્યા!
આ બધી સામાન્ય વાત નથી. 'પ્લાન આ તો પૂરવના'

* કાકાજી નાના હતા ત્યારે નડિયાદવાળા દાદા તેમને **'દિલ્હીનો બાદશાહ'** કહેતા...! કાકાજીએ તેમની કર્મભૂમિ પણ દિલ્હી-પંજાબ ઉત્તર ભારતને બનાવી. ત્યાં પોતાના વારસ સ્વરૂપ પ્રાણસમા પુત્ર મુકુંદજીવનસ્વામીને મૂકીને પોતે જે કાર્ય માટે પૃથ્વી પર પધારેલા તે કાર્યના ભાગીદાર અને વારસદાર બનાવ્યા!
* **સાધુ 'થવું'** કે કોઈને **સાધુ 'કરવા'** એ સહેલું નથી, અઘરું છે.
એનાથી ય અઘરું **'સાધુ તરીકે ટકવું'** એ છે. એનાથી ય અઘરું **'પામવું'** એ છે.
આ બધું જ મુકુંદજીવનસ્વામીમાં શક્ય બન્યું છે. આમ તેઓ 'મુકુંદ' મટી 'ગુરૂજી' બન્યા.

(બ) મુંબઈમાં તારદેવની ધરતી પર કાકાજી-પપ્પાજી-બાનું 'સહિયારી સુંઢલ'નું કાર્ય હતું. તેમાં પ.પૂ. ગુરૂજીને એક કૌટુંબિક આત્મબુદ્ધિ ને પ્રીતિ-કાકાજી જેવી જ બા-પપ્પાજી સાથે પણ હતી.

* તારદેવ એ ગુણાતીત સમાજની ગંગોત્રી છે. આ ગંગોત્રીના પ્રવાહ વહ્યા! ઠેર ઠેર ગુણાતીત સમાજના કેન્દ્રો થયા અને પાર્ટીશન થયું; **'વિમુખનારાયણ'**ની પદવીને પામ્યા! આ ત્રિપુટીએ ખભા પર ચાર પાંખાળા સત્સંગનો ભાર લીધો. સંતો, સંત બ્હેનો, વ્રતધારી યુવકો અને એકાંતિક ગૃહસ્થોનો... ચાર પાંખાળો સત્સંગ ફાલ્યો ફૂલ્યો...!
એક અદ્‌ભુત ત્રિકોણ પિરામિડની નીચે આ ગુણાતીત સમાજ સુરક્ષિત હતો!

* અચાનક ઈ.સ. ૧૯૮૬માં... એક જબરદસ્ત આંચકો આવ્યો ! પિરામિડની એક દિવાલ પડી ! પ.પૂ. કાકાશ્રીએ દેહ ત્યાગ કર્યો ! આ ભયંકર ઘટનાથી ગુણાતીત સમાજ હાલી ગયો ! પછી શું શું થયું તે વર્ણન અહીં લખવું શક્ય-યોગ્ય નથી !
* **૧૯૮૮ પછીથી લગભગ દર વર્ષે માર્ચ મહિનામાં પ.પૂ. પપ્પાજી (કાકાજી સ્વરૂપે) દિલ્હી પધારતાં.** પ.પૂ. ગુરૂજીનો પ્રાગટ્ય દિન ૧૩મી માર્ચ ઊજવવાના હેતુથી પધારતા. તેમાં એક સમૈયામાં હું પણ ગઈ હતી. **ત્યાં પ.પૂ. પપ્પાજીએ ગુરૂજીના જીવનની ઘણી વાત કરેલી,** તે મારા શબ્દોમાં અહીં લખું છું. **તેમાં મુખ્ય વાત એ** કરી કે –

૧. **'સત્પુરૂષના દેહ કરતાં એમનું નામ અને નામ કરતાં ય એમનું વચન અધિક છે'** આ સૂત્રનું સાકાર દૃષ્ટાંત જો હોય તો તે ગુરૂજી છે.

૨. **પ્રેમ એટલે** કે જેમને માટે પ્રેમ છે તે ઈષ્ટદેવ રાજી થાય તેમ જ વર્તે. **કુરાજી થાય તેમ કરી જ ના શકાય. મન મારીને ય પણ એમ કર્યા વગર રહી જ ના શકાય.** કાકાજીના વચને આ દિલ્હી જેવા શહેરમાં ધૂણી ધખાવીને, નાના એવા દેવળમાં બેસી રહી સાધના કરી છે ! કાકાજીના એક એક વચન – શબ્દ ઉપર ધ્યાન દઈને એ પ્રમાણે વરત્યા છે.

સત્પુરૂષના દેહ (સાંનિધ્ય) કરતાં તેનું નામ વિશેષ છે અને નામ કરતાં એમનું વચન લઈ વર્તીએ એ એથીય વિશેષ છે. આ સૂત્રને ગુરૂજીએ સાકાર કર્યું છે.

૩. પપ્પાજી કહે કે, *'અમે કરમસદના પટેલ (હું અને કાકા) કાના – માત્રા વગરનું ગામ. અમને કોઈનીય સાડાબારી નહીં. જે હોય તે મોઢે જ કહી દઈએ (પરખાવી) દઈએ તેવા ! અમારો આ મુકુંદ પણ એ બાબતમાં ખૂબ સ્પષ્ટ વક્તા. મને ય કહી દે કે મને કાકાજી ગમે છે, તમે મને નથી ગમતા ! હું કહું કે પણ તું મને ગમે છે ને ! આમ તારદેવમાં અમારો વાર્તાલાપ ચાલે.'*

૪. એક વખત બ્રહ્મજ્યોતિ પર કોઈક સભા હતી. ગુરૂજીનું પ્રવચન ડિક્લેર થયું એટલે પપ્પાજી ખોળામાં ઓશીકું લઈને માઈક બાજુ ફરી ટટ્ટાર બેસી ગયા ! અને કહે કે – *ગુરૂજીની વાત (વારી) હોય ત્યારે હું સજાગ બનીને સાંભળું. તેમની વાતમાં નવીન કાંઈક હોય જ.* પપ્પાજીએ- ગુરૂજીની વારીમાંથી નવીન હોય તે લીધું જ હોય, ડાયરીમાં ક્યારેક લખી લે અને ફરી સભામાં એ વાત કરે જ. આમ **ગુરૂજીની આભાને-ભક્તિને ખુદ પપ્પાજી બિરદાવતા ! નવાજતા !**

૫. દિલ્હી દિવાળીના સમૈયામાં ગુરૂજીએ **પપ્પાજી-કાકાજીની** ખરી **ઐક્યતા** વિષે વાત કરી હતી– એક અનુભવ કહ્યો હતો.

* કાકાશ્રીએ ગુરૂજીને કહેલ કે – એક દિવાળી કરવા હું દિલ્હી આવીશ. લગભગ દિવાળી ઉત્સવે (કાકાશ્રી) મુંબઈમાં જ હોય. કાકાશ્રી અચાનક સ્વધામ સીધાવ્યા ! દિવાળી કરવા દિલ્હી પધારી ન્હોતા શક્યા ! પછી તો વર્ષો ગયા. એમાં ૧૯૯૨ના વર્ષે પપ્પાજીએ સામેથી કહ્યું કે – *'હું દિવાળી આ વખતે દિલ્હી કરીશ.'* આ વાત કરતા ગુરૂજી ગદ્‌ગદીત થઈ ગયા અને કહ્યું કે પપ્પાજીનો કાર્યક્રમ છપૈયા- અલ્હાબાદનો ગોઠવાયો. તેમાં... ત્યાં જવું એ તો એક નિમિત્ત છે. પરંતુ આવા સત્પુરૂષની દરેક ક્રિયાની પાછળ – દરેક આયોજનની પાછળ શાંતિથી જો જોઈએ... વિચારીએ તો દર્શન થાય કે તેઓ ચૈતન્યલક્ષી છે ! પ્રભુનું યંત્ર- નિમિત્ત બની વર્તે છે.

આમ ગુરૂજીએ અનુભવ સાથે સત્પુરૂષનો મહિમા કહ્યો ! એટલું જ નહીં... પરંતુ **કાકાજી અને પપ્પાજી એમને મન એક સિક્કાની બે બાજુ છે. યોગીજી મહારાજના બે અંગ છે તેવું ખરૂં દર્શન ગુરૂજીને છે અને સૌને કરાવી રહ્યા છે.**

૬. **ખરી આધ્યાત્મિક સમજણથી ગુરૂજીએ કાકાજી-પપ્પાજીનું સેવન કર્યું છે અને ખરા દિકરા તરીકે તકની સેવા પણ કરી છે.** તેનો નાનો એક અનુભવ–

* પપ્પાજીના ભક્તિઉત્સવ પછી... લંડનના હરિભક્તો (૩૫ જેટલાને) લઈને અમારે ઉત્તર ભારતની યાત્રાએ જવાનું થયું. બધી ગોઠવણ એજન્ટ મારફતે કરેલી. પરંતુ બન્યું એવું કે–પ્રથમ દિલ્હી ગયા... ત્યાં યાત્રામાં પૂ. લાલજીમામા હતાં; તેઓને હાર્ટ એટેક આવ્યો અને તેઓ ધામમાં ગયા! (પહેલી જ વખત એવું હતું કે–આવી યાત્રામાં પપ્પાજી કે કોઈ મોટેરા સાથે ન્હોતા)

ફોનથી વિદ્યાનગર સમાચાર આપ્યા; દિલ્હી ગુરૂજી-અંકલ વગેરેને પણ જાણ થતાં તરત હોટલ પર તેઓ અડધી રાત્રે આવી ગયા. વિદ્યાનગરથી પ.પૂ. પપ્પાજી, પ.પૂ. બેન વગેરે દિલ્હી આવવાનું નક્કી કરી રહ્યા હતાં. પરંતુ ગુરૂજીએ પપ્પાજીને કહ્યું કે, હું તમારો દિકરો અહીં છું તમો તકલીફ ના લેશો; બધું જ સારી રીતે હું સંભાળી લઈશ કહી... એ પ્રસંગને ખૂબ જ સારી રીતે હાથ ધર્યો-પતાવ્યો!

યાત્રા પછી અમો જ્યારે વિદ્યાનગર આવ્યા ત્યારે **પપ્પાજીએ** ગુરૂજી વિશે વાત કરી ખૂબ રાજીપો બતાવ્યો છે. **સાચા દિકરા તરીકેનું બિરૂદ આપ્યું !** અને ઘણીવાર પપ્પાજીએ આ પ્રસંગની વાત સદ્.–'**A**'ની શિબિરમાં અને સભામાં પણ કરી હતી.

આ વાતનો સાચો ભેદ તો પછીથી સમજાયો ! **શાશ્વતયાત્રા વખતે ગુરૂજીએ જે રીતે કાર્ય કર્યું છે એ કાર્યથી પપ્પાજીના શબ્દો - 'સાચા દિકરા' તરીકેની ખરી અનુભૂતિ થઈ ! દિકરા તરીકેનું ટાણે અદ્ભુત દર્શન ગુરૂજીએ કરાવ્યું !**

૭. **દિલ્હી મંદિરમાં પપ્પાજીની મૂર્તિ પધરાવીને તો કબાલા તોડી નાખ્યા !** હું પપ્પાજીની છું અને કહું છું એવી વાત નથી!

એક રૅકાર્ડ ગુણાતીત સમાજના ઇતિહાસમાં સ્થાપી દીધો. પપ્પાજીની મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠાના પ્રસંગે એક વાત એ જાણી કે–જ્યારે ગુરૂજીએ આ મંદિર બનાવી કાકાજીનો સંકલ્પ પૂરો કર્યો, એ મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા વખતે સ્વયં કાકાજી સદેહે ન્હોતા! આ કરૂણ દિવસ કહેવાય... મૂળીનું મંદિર બ્રહ્માનંદસ્વામીને બનાવવાની આજ્ઞા કરીને મહારાજ તે મંદિર પૂરૂ થતાં પહેલા સ્વધામ સીધાવી ગયેલા અને બ્રહ્માનંદસ્વામીએ જે આક્રંદ સાથે (વિરહની વેદનાવાળા) ભજનની પંક્તિઓ રચી છે–તેવી આ વાત હતી.

મૂળવાત :– મંદિરની મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા વખતે કાકાશ્રીની(મૂર્તિની) બાજુમાં પપ્પાજી ઊભા રહી ગયા અને ભેગો ફોટો પડાવ્યો છે. એ ફોટો પપ્પાજીની મૂર્તિ પધરાવી ત્યારે ગુરૂજીએ બધા મુક્તોને આપ્યો. **એ ફોટો સામાન્ય નથી. આ ફોટો પડાવવા પાછળ ઘણાં પપ્પાજીના અણજાણ્યા સ્વરૂપની પીછાણ**

થઈ આવે છે ! આ ખૂબ જ મોટી બાબત છે ! ખૂબ ઊંડી બાબત છે – એક તો પપ્પાજીએ ભાવિનો નિર્દેશ ગુરૂજીને કર્યો અને ગુરૂજીએ એ ઝીલ્યો !

એ ઝીલ્યો એજ બતાવે છે કે ગુરૂજી, કાકાજીના હોવા છતાંય, કાકાજી-પપ્પાજીને એક માને છે એટલું જ નહીં, પરંતુ તેઓ પપ્પાજીને સામર્થીએ યુક્ત, સાચા અર્થમાં – સ્વરૂપને ઓળખે છે.

✻ ...કાકાજીના દેહત્યાગનું જે દર્દ ગુરૂજીના હૈયાને વિશે હતું તેને પપ્પાજી સમજી શકતા હતા. તે ટાળવા અને ભાવિનો નિર્દેશ કરાવી, કાકાજીની મૂર્તિની બાજુમાં ઊભા રહીને પપ્પાજીએ જે ફોટા પડાવ્યા **એ અલૌકિક બીના છે !** ગુરૂજીએ એને ઝીલી લીધી.

✻ ગુરૂજીએ ઈ.સ. ૨૦૦૭માં પપ્પાજીની મૂર્તિ કાકાજીની બાજુમાં પધરાવીને પપ્પાજીના એ સુહૃદ્‌ભાવની ભક્તિનું **આ ને આ દેહે ઋણ અદા કરી દીધું !** પપ્પાજી જે જે હૃદયમંદિરોમાં બિરાજમાન છે તેવા જંગમમંદિરોની સેવા ગુરૂજીએ **શાશ્વત્ યાત્રા વખતે કરી** હતી. **આ નિઃસ્વાર્થ ! નિષ્કામભક્તિને સામાન્ય સંબંધવાળા કોઈ સમજી શકે તેવી વાત નથી.**

✻ પપ્પાજીએ ઉચ્ચારેલ શબ્દો – ***'મારો ખરો દિકરો - મારો અને કાકાનો ખરો વારસદાર ગુરૂજી છે.'*** **એ શબ્દનું પૃથકરણ ધીમે ધીમે થઈ રહ્યું છે. સર્વદેશીય ઉઠાવ લઈને તેનું દર્શન કરાવી રહ્યાં છે.**

✻ ચા-કોફીના મગ કે ગ્લાસમાં કાકાજી-પપ્પાજીનો સિમ્બોલ લીધો અને તિલકનો લીધો ! **આવી નાની વસ્તુ બનાવવા પાછળ** અપાર શ્રમ કર્યો છે. **સર્વદેશીયતાની ભક્તિનું દર્શન કરાવ્યું છે.**

✻ **ગુણાતીત સમાજની એકતાનો ઉઠાવ લીધો છે.** પોતાના પ્રાગટ્યદિને ઈ.સ. ૨૦૦૯માં અખિલ ગુણાતીત સમાજના મુક્તોને, જોગીએ સાધુ બનાવેલા સંતોને બોલાવેલા; તેઓને જોઈને ખૂબ રાજી થતા હતા. ત્યાં કાકાજી-પપ્પાજીના ભક્તોને બોલાવ્યા હતા. દર્શન કરી, જમાડી આનંદ કરાવી રાજી કરી પોતે રાજી થયા.

એટલું જ નહીં, પરંતુ સભાખંડની ઉપર એક વાક્ય લખેલું હતું, એ – એમના હૃદયનો ઉદ્‌ગાર હતો –

'પ.પૂ. ગુરુજી કા પ્રાકટ્યોત્સવ યાનિ 'યોગી પરિવાર' કા સ્નેહમિલન !'

✻ કાકાજીને સર્વદેશીયતા ખૂબ પ્રિય હતી.

પપ્પાજીનો પણ 'ગુણાતીત સમાજમાં સંપ, સુહૃદ્‌ભાવ ને એકતા' – એ જીવનસંદેશ હતો; અંતરની રુચિ હતી.

૮. 'કાકાજી તરફનો પ્રેમ એટલે સમર્પણ' – એ ન્યાયે ગુરૂજીએ કાકાજીની નાની રુચિને પોતાનું જીવન બનાવ્યું છે. તેના અમુક પ્રસંગો છે.

✻ કાકાજીએ ધૂન્ય ઉપર કામ લીધું હતું. કાકાજી-પપ્પાજીની રીત ભલે જુદી, પણ જીવનનું હાર્દ એક સરખું હતું. કાકાજી ખૂબ ધૂન્ય કરાવતા. ગુરૂજી પણ એમના ભક્તો પાસે ખૂબ ધૂન્ય કરાવે છે. મોટેથી મંત્રનાદ કરાવે છે.

દિલ્હી મંદિરમાં દર્શને હું અચાનક ગયેલ, તો અમુક યુવકો પૂજા કરતા હતાં અને મોટેથી ધૂન્ય કરતા હતાં અને એ પણ સર્વદેશીય નામ રટણ સાથે ધૂન્ય કરતા દર્શન કર્યા હતાં

વળી

હમણાં તા. ૩.૧૧.૦૯ના ગુરૂજી વિદ્યાનગર પધારેલા. 'પપ્પાજી તીર્થ' પર પધારેલા. ત્યારે શાશ્વત્‌ધામે દર્શન કર્યા બાદ તીર્થ પર લીમડા નીચે સંતોના આવાસ પાસે બિરાજેલા. સામે સંતો અને થોડાક ભાઈઓ હતાં. ગુરૂજી મૌન હતા અને અચાનક ધૂન્યની આજ્ઞા આપી. **એવી ધૂન્ય મચાવી હતી કે જાણે કાકાજી-પપ્પાજીના સાન્નિધ્યે ધૂન્ય થતી તેવી ધૂન્યના દર્શન થયા. મસ્તક નમી જાય તેવો આ ગુણવારસો ધારણ કર્યાના દર્શન વર્તનથી કરાવ્યા.**

એવું જ કાકાજી-પપ્પાજી તારદેવથી અખંડ કથાવાર્તાનો અખાડો રાખતા. ગુણાતીતાનદંસ્વામિજીની જેમ સોપો જ ના પડવા દેતા. સ્વામીની વાતુ ઉપર કામ લીધેલું.

ગુરૂજીએ આ બાબતે પણ વારસો રાખ્યો છે.

કથાવાર્તાનો અખાડો, સેવાનો અખાડો, **ભીડા ભક્તિ કરાવીને કાકા-પપ્પાની હાટડી ચાલુ જ રાખી છે.**

૯. પપ્પાજી અમોને સદ્‌ગુરૂ Aની શિબિર સભામાં અમૂક વાત (ઊંચા પ્રકારની વાત કરતા) કે,

* **'સ્વરૂપનું અનુસંધાન હોય તો અનુવૃત્તિ પ્રગટી જાય'**
* **એકપક્ષીય સુહૃદ્‌ભાવ રાખવાની વાત કરતા.**
  આ વાત જીવનમાં મૂકીને ગુરૂજી સાકાર દર્શન કરાવી રહ્યા છે
* સંબંધે સ્વરૂપ માનીને સેવા કરી લેવાના પપ્પાજીના જીવનમંત્રને ગુરૂજીએ જીવનમાં સાકાર કર્યો છે.

૧૦. પપ્પાજી અમોને એમને 'ભગવાન'ના કહેવા દે. કહે કે– *'માનો'; બોલો નહીં.* દીદી ભજન બનાવે એમાંય 'પપ્પાજી' શબ્દ પહેલા તો ન્હોતો વપરાતો... કથામાં પણ એમને ભગવાન કહ્યા તો પ્રાયશ્ચિત આપે– પ્રદક્ષિણા કરાવે, ઊઠબેસ કરાવે, ઉપવાસ કરજો– તેવું કહે... ખૂબ ગંભીર મુખ રાખી અણગમો બતાવે.

પપ્પાજીના ભક્તિ ઉત્સવે ગુરૂજી એક ભજન બનાવીને લાવેલા. તે ગવાયું... તેમાં–

આજ પ્રભુ વો કહાઁ બિરાજે, કહાઁ વો શ્રીજી સ્વયં ?
શ્રીજી યહાઁ... શ્રીજી યહાઁ
પપ્પાજી કે રૂપ બિરાજે, પહચાનો હૈં શ્રીજી યહાઁ શ્રીજી યહાઁ... શ્રીજી યહાઁ...

ત્યારે દીદી બોલેલા કે ગુરૂજીએ મારો માર્ગ ખોલી આપ્યો ! હવે આપણાથી ભજનમાં 'પપ્પાજી' શબ્દ તો વાપરી શકાશે, 'ભગવાન' તરીકે પણ ગાન થઈ શકશે...

આમ **ગુરૂજીએ** પપ્પાજીને છતરાયા કર્યા છે. **પોતે ખરા અર્થમાં યોગીજી મહારાજ, કાકાજી-પપ્પાજીને ઓળખ્યા છે, સેવ્યા છે અને સબીજ જ્ઞાન કહે છે– તો તે સામાને અસર કરે છે.**

૧૧. ગુરૂજીએ દિલ્હી જેવા શહેરમાં રહીને એક અદ્‌ભુત સમાજ રચ્યો છે. ગુણાતીતના વખતની વાત છે ને કે આવા ભક્તો કેટલા ? તો કહે– તેના માથા કાપી વાવ ભરાય તેટલા. તેના જેવું આ કાર્યનું દર્શન થાય છે.

* ગુરૂજી દેખાવે પહેલા ગુણાતીતાનંદસ્વામી જેવા જણાતા. એમ આ એમના કાર્યનું દર્શન પણ તેવું જ છે.

* જેનું સેવન કરે તેના અવયવ બદલાય. તેમ કાકાજીનું સેવન કરીને, હાલ ગુરૂજીનું દર્શન- કાકાજી જેવી આભા બની છે.

કાકાજીની સર્વદેશીયતા- ગુણાતીતજ્ઞાનને પચાવીને ખરા વારસ બનીને ભક્તિ અદા કરી રહ્યા છે.

* કાકાશ્રીનું અધુરૂં કાર્ય-બ્હેનોનું **પૂ. આનંદીદીદી દ્વારા** પૂરૂ કરીને **'અક્ષરજ્યોતિ'**ની એક અદ્ભુત જ્યોત ચાલુ રાખીને **કાકાશ્રી- પપ્પાજી તરફની ભક્તિ અદા કરી છે.**

છેલ્લા ૧૫ વર્ષથી તો નાદુરસ્ત તબિયત સાથે એકલા હાથે જે શ્રમ- ભક્તિ કરી રહ્યા છે, તે ખરેખર આદર્શ છે.

પપ્પાજી અમારી પાસે પણ આવું જ કાંઈક ઈચ્છતા હતા. ઈચ્છે છે... તો હે યોગીજી મહારાજ, હે કાકાજી, હે પપ્પાજી, હે ગુરૂજી આપની જેવી ગુરૂભક્તિ અદા કરવા બળ-બુદ્ધિ ને પ્રેરણા બક્ષો ! એજ આપના અમૃતપર્વે યાચના સાથે વિરમુ છું.

ગુરૂહરિની ભક્તિ અદા કરવાના હેતુથી, એમની પ્રેરણાથી આ જે કાંઈ લખ્યું છે તે અને કાંઈ રહી ગયું હોય તો તેને પણ ગણી લઈ સ્વીકારી ધન્ય કરશો... રાજી રહેજો એજ.

શ્રી ગુણાતીત જ્યોતનું એક કિરણ–

કેન્દ્ર નંબર -૭૧

પપ્પાજી સેવક ***મની(બેન)****ના પ્રણામ સાથે જય સ્વામિનારાયણ.*

૨૯.૧૧.'૦૯

[हिन्दी अनुवाद]

काकाजी स्वरूप प.पू. गुरुजी (मुकुंदजीवनस्वामिजी) के बारे में...

गुरुजी का ऐसा कोई करीबी अनुभव या जोग नहीं, परंतु पप्पाजी द्वारा उनके बारे में कही गई बातों व उत्सवों और प्रसंगों द्वारा गुरुजी के माहात्म्य का जो दर्शन हुआ है एवं जो प्रत्यक्ष अनुभव किया है, उसमें से थोड़ा कुछ लिखने का प्रयत्न करती हूँ। हे प्रभु ! आप लिखवाना।

...ताड़देव की उस धरती पर बा और काका-पप्पा के दो परिवारों को बापा ने इकट्ठा किया ! *'जोगी भगवान हैं! जोगी भगवान हैं!'* ऐसा बिगुल बजाने वाली पार्टी के तीन सूत्रधार काकाजी-पप्पाजी-बा थे ! बापा कहें तो भला क्या न हो ? **बापा बोले – *'मुझे ५१ नवयुवकों को साधु बनाना है !'*** इस संकल्प को सिद्ध करना, प्रकृति के प्रवाह को पलटने जैसा कठिन काम था। **यह बीड़ा काकाजी ने उठाया ! और पप्पाजी-बा उसमें जुड़ गए। फिर एक और संकल्प बापा ने बहनों को भगवान भजवाने का किया। इन दोनों संकल्पों के पीछे यह त्रिपुटी याहोम हो गई !** मुंबई जैसी नगरी में ताड़देव के घर में गुणातीत ज्ञान का अखाड़ा शुरु हुआ ! प्रेम और ज्ञान की इस गंगा में पूर्व के चैतन्य आ-आकर गीले होने लगे। **उसमें आए ये पू. दिलीपभाई...** असाधारण आत्मबुद्धि और प्रीति से सत्संग में शामिल हुए !

(अ) काकाजी के वचन से साधु हुए! (दिलीप में से साधु मुकुंदजीवनदास बने)

✻ दिल्ली जाकर रहे, उनके वचन से जिए!
ये सारी सामान्य बातें नहीं हैं। 'यह तो पहले से ही प्लान्ड था'

✻ काकाजी छोटे थे, तब नडियाद वाले दादा उन्हें **'दिल्ली का बादशाह'** कहते...! काकाजी ने अपनी कर्मभूमि भी दिल्ली-पंजाब, उत्तरभारत को बनाया। वहाँ अपने वारिस स्वरूप प्राण-समान पुत्र मुकुंदजीवनस्वामी को रख कर स्वयं जिस कार्य के लिए पृथ्वी पर पधारे, उस कार्य का भागीदार और वारिसदार बनाया।

✻ **साधु 'होना' या किसी को साधु 'बनाना'**, आसान नहीं है, अत्यंत मुश्किल है।
इससे भी मुश्किल **'साधु के रूप में टिकना'** है – और इससे भी अधिक मुश्किल है **'प्राप्ति'**।
पर **यह सब कुछ मुकुंदजीवनस्वामी में संभव हुआ है।** यूँ वे **'मुकुंद'** से मिट कर **'गुरुजी'** बने।

(ब) मुंबई ताड़देव की धरती पर काकाजी-पप्पाजी-बा 'साझा और अन्योन्य पूरक होकर' कार्य करते थे। प.पू. गुरुजी को एक कौटुंबिक आत्मबुद्धि और प्रीति – जैसी काकाजी के प्रति थी, वैसी ही बा-पप्पाजी के साथ भी थी।

✻ ताड़देव तो गुणातीत समाज की गंगोत्री है। इस गंगोत्री का प्रवाह बहा! जगह-जगह गुणातीत समाज के केन्द्र बने और पार्टीशन हुआ; तो **'विमुखनारायण'** की पदवी पाई। इस त्रिपुटी ने अपने कंधों पर चार पंखुड़ियों वाले सत्संग का भार झेला। संतों, संत बहनों, व्रतधारी युवकों और एकांतिक गृहस्थों का चार पंखुड़ियों वाला सत्संग फला-फूला!
एक अद्भुत त्रिकोण पिरामिड के नीचे यह गुणातीत समाज सुरक्षित था!

✻ अचानक ई.स. १९८६ में मानो एक जबरदस्त भूकंप आया! पिरामिड की एक दीवार गिरी! प.पू. काकाजी ने (स्थूल) देहत्याग किया। इस भयंकर घटना से गुणातीत समाज हिल गया!
फिर क्या-क्या हुआ, उस वर्णन को यहाँ लिखना संभव नहीं – योग्य नहीं है।

✻ **१९८८ के बाद से तकरीबन हर वर्ष मार्च के महीने में प.पू. पप्पाजी (काकाजी स्वरूप में) दिल्ली पधारते।** वे प.पू. गुरुजी का प्रागट्य दिन १३ मार्च को मनाने के लिए पधारते थे। ऐसे ही एक उत्सव में मैं भी गई थी। **वहां प.पू. पप्पाजी ने गुरुजी के जीवन की कई बातें बताई थीं**, वो मैं अपने शब्दों में यहाँ लिखती हूँ। **उनमें मुख्य बातें** ये कीं –

१. 'सत्पुरुष की देह से अधिक उसका नाम, और नाम से अधिक उसका वचन है' – इस सूत्र का साकार दृष्टांत यदि हो, तो 'गुरुजी' हैं...

२. प्रेम यानि कि जिसके प्रति प्रेम है, वो इष्टदेव राजी हों, वैसा ही वर्ते। नाराज़ हो जाएं, ऐसा वर्त ही न पाए। मन मार कर भी ऐसा करे बिना रहा ही नहीं जाए। काकाजी के वचन से इस दिल्ली जैसे शहर में धूनी रमा कर, एक छोटे देवालय जैसे में बैठे रह कर साधना की है! काकाजी के एक एक वचन-शब्द के ऊपर ध्यान देकर उसके मुताबिक प.पू. गुरुजी वर्ते हैं।
'सत्पुरुष की देह (सान्निध्य) से अधिक उनका नाम विशेष है और नाम से अधिक उनका वचन पकड़ कर वर्ते – वह उससे विशेष है।' इस सूत्र को गुरुजी ने साकार किया है।

३. पप्पाजी कहते कि, *'हम करमसद के पटेल (मैं और काका)। डंडे एवं मात्रा के बिना के अक्षरों का गाँव। हमें किसी की परवाह नहीं। जो (मन में) हो, वह मुँह पर कह देते। हमारा ये मुकुंद भी इस मामले में खूब स्पष्टवक्ता। मुझे भी कह देता – 'मुझे काकाजी जँचते हैं, आप मुझे नहीं जँचते। मैं कहता – 'लेकिन तू मुझे पसंद है न!'* यूँ ताड़देव में हमारा वार्तालाप चलता था...

४. एक बार ब्रह्मज्योति पर कोई सभा थी। गुरुजी का प्रवचन डिक्लेयर होते ही पप्पाजी गोद में तकिया लेकर माईक की ओर घूम कर बैठ गए और बोले – *'गुरुजी के बोलने की बारी हो, तो मैं सजग होकर सुनता हूँ। उसकी बात में जरुर कुछ नवीन होता ही है।'* और... गुरुजी की बात में से जो नवीन हाथ लगे वह (पप्पाजी) लेते ही एवं डायरी में कभी लिख भी लेते। फिर सभा में वह बात करते ही। **यूँ गुरुजी की आभा - भक्ति को स्वयं पप्पाजी सराहते! नवाजते!**

५. दिल्ली दीवाली के उत्सव में गुरुजी ने पप्पाजी - काकाजी के सच्चे ऐक्य के बारे में बात की थी – एक अनुभव बताया था।

❋ काकाजी ने गुरुजी से कहा था कि एक दीवाली करने मैं दिल्ली आऊँगा। अकसर दीवाली उत्सव के समय काकाजी मुंबई में ही होते थे। फिर काकाजी अचानक स्वधाम सिधारे। दीवाली करने दिल्ली पधार नहीं सके। फिर तो वर्षों बीते। एक बार – १९९२ के वर्ष में पप्पाजी ने सामने से कहा कि *'अब की बार मैं दीवाली दिल्ली में मनाऊँगा।'* यह बात करते हुए गुरुजी गद्‌गद् हो गए और कहा कि पप्पाजी का छपैया - इलाहबाद का कार्यक्रम बनना और वहाँ जाना तो एक निमित्त है; परंतु सत्पुरुष की हर एक क्रिया को – हर एक आयोजन को यदि शांति से देखें या विचारें तो दर्शन होता है कि वे तो चैतन्यलक्षी हैं! प्रभु का यंत्र - निमित्त बन कर वर्तते हैं।

यूँ गुरुजी ने अनुभव के साथ सत्पुरुष की महिमा बताई इतना ही नहीं, बल्कि **काकाजी और पप्पाजी उनके मन में एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, योगीजी महाराज के दो अंग हैं – ऐसा सच्चा दर्शन गुरुजी को है और सभी को करवा रहे हैं।**

६. सच्ची आध्यात्मिक समझदारी से गुरुजी ने काकाजी - पप्पाजी का सेवन किया है और सच्चे बेटे की भाँति मौके की सेवा भी की है। इसका एक छोटा अनुभव –

❋ पप्पाजी के भक्ति उत्सव के बाद लगभग ३५ हरिभक्तों को लेकर हमारा उत्तरभारत की यात्रा पर जाना हुआ। सारी एरेन्जमेन्ट एजन्ट द्वारा की गई थी। परंतु हुआ ऐसा कि पहले दिल्ली गए... वहाँ यात्रा में पू. लालजी मामा को हार्ट एटॅक आया और वे धाम में चले गए! पहली बार ही ऐसा हुआ था कि यात्रा में पप्पाजी या कोई बड़े साथ में नहीं थे।)

फोन से विद्यानगर खबर दी। दिल्ली में गुरुजी - अंकल वगैरह भी पता चलते ही तुरंत होटल पर आधी रात को ही आ गए। विद्यानगर से प.पू. पप्पाजी, प.पू. बेन वगैरह दिल्ली आने की तैयारी कर ही रहे थे कि गुरुजी ने पप्पाजी को कहलवाया कि *मैं 'आपका लड़का' – यहीं हूँ, आप तकलीफ नहीं लेना, मैं सब कुछ संभाल लूँगा''* – और उस प्रसंग को खूब अच्छी तरह से हॅन्डल कर लिया - निपटाया।

यात्रा के बाद हम जब विद्यानगर आए तब **पप्पाजी** ने गुरुजी के बारे बात करते खूब प्रसन्नता जताई। **'सच्चा**

बेटा' कह कर नवाजा। पप्पाजी ने इस प्रसंग की बात सद्. – A की शिविर और सभा में भी कई बार की थी।

इस बात का सच्चा भेद तो बाद में समझ आया।

शाश्वत् स्मृति यात्रा के समय गुरुजी ने जिस कदर कार्य किया है, उस कार्य से पप्पाजी के शब्दों में – 'सच्चे बेटे' के रूप में खरी अनुभूति हुई। ऐन मौके पर बेटे के रूप का गुरुजी ने अद्भुत दर्शन करवाया।

७. **पप्पाजी की मूर्ति दिल्ली मंदिर में पधरा कर तो हद कर दी।** मैं पप्पाजी की हूँ, सो कहती हूँ – ऐसी बात यह नहीं है।

गुणातीत समाज के इतिहास में एक रॅकॉर्ड स्थापित कर दिया। पप्पाजी की मूर्ति प्रतिष्ठा के प्रसंग पर एक बात यह जानी कि जब गुरुजी ने यह मंदिर बना कर काकाजी का संकल्प पूरा किया, तब मूर्ति प्रतिष्ठा के समय पर काकाजी सदेह उपस्थित नहीं थे। वह खूब करुण दिन कहा जाए... मूळी का मंदिर बनवाने की ब्रह्मानंदस्वामी को आज्ञा करके महाराज उस मंदिर के पूरे होने से पहले स्वधाम सिधार गए थे और ब्रह्मानंदस्वामी ने जिस रुदन के साथ (विरह की वेदना वाला) भजन की पंक्तियाँ रची हैं, ऐसी यह बात थी।

मूल बात :- मंदिर की मूर्ति प्रतिष्ठा के समय काकाजी (की मूर्ति) के बराबर में पप्पाजी खड़े रह गए और साथ में फोटो खिंचवाया। वह फोटो पप्पाजी की मूर्ति पधराई, तब गुरुजी ने सभी मुक्तों को दिया। **यह फोटो सामान्य नहीं है। इस फोटो को खिंचवाने के पीछे पप्पाजी के अनजाने स्वरूप की पहचान हो जाती है। यह बहुत ही बड़ी बात है! खूब गहरी बात है। एक तो – पप्पाजी ने भावि का निर्देश गुरुजी को दिया और गुरुजी ने वह झेला! वह झेला – यही बताता है कि गुरुजी, काकाजी के होने के बावजूद, काकाजी-पप्पाजी को एक मानते हैं इतना ही नहीं परंतु, वे पप्पाजी के सामर्थ्य से युक्त-सच्चे अर्थ में-स्वरूप को पहचानते हैं।**

* ...काकाजी के देहत्याग का दर्द जो गुरुजी के दिल में था, उसे पप्पाजी समझ सकते थे। उसे टालने के लिए और भावि का निर्देश करा कर, काकाजी की मूर्ति के पास ही खड़े रह कर पप्पाजी ने जो फोटो खिंचवाया, **वह अलौकिक घटना है।** गुरुजी ने उसे झेल लिया।
* गुरुजी ने ई.स. २००७ में पप्पाजी की मूर्ति काकाजी की बगल में पधरा कर पप्पाजी के उस सुहृद्भाव की भक्ति का **इसी देह से ऋण अदा कर लिया।** पप्पाजी जिन जिन हृदय मंदिरों में विराजमान हैं, उन सभी जंगम मंदिरों की सेवा गुरुजी ने **शाश्वत्यात्रा के समय की थी। इस निःस्वार्थ! निष्कामभक्ति को कोई मामूली संबंध वाला समझ पाए, ऐसी बात नहीं है।**
* पप्पाजी के कहे शब्द – ***'मेरा सच्चा बेटा – मेरा और काका का सच्चा वारिसदार गुरुजी हैं'*** **– इन शब्दों का पृथक्करण धीरे-धीरे हो रहा है। गुरुजी सर्वदेशीय उठाव लेकर उसका दर्शन करवा रहे हैं।**

चाय-कॉफी के मग या गिलास में काकाजी-पप्पाजी का सिम्बोल लिया-तिलक लिया। **ऐसी छोटी चीजें बनाने के पीछे** खूब श्रम किया है; **सर्वदेशीयता की भक्ति का दर्शन करवाया है।**

✳ **गुणातीत समाज की एकता का उठाव लिया है।** अपने प्रागट्य दिन पर ई.स. २००९ में अखिल गुणातीत समाज के मुक्तों को – योगीजी के बनाए साधु-संतों को बुलाया और उन्हें देख कर बहुत राजी हुए। काकाजी-पप्पाजी के भक्तों को भी वहाँ बुलाया था। दर्शन करके, खिला – पिला कर, आनंद करवा कर राजी करके खुद आनंदविभोर हुए।

इतना ही नहीं, बल्कि सभा खंड के ऊपर एक वाक्य लिखा था, जो उनके हृदय का उद्गार था –

प.पू. गुरुजी का प्राकट्योत्सव यानि 'योगी परिवार का स्नेहमिलन'!

✳ काकाजी को सर्वदेशीयता खूब प्रिय थी।

पप्पाजी का भी 'गुणातीत समाज में संप, सुहृद्भाव और एकता' – यही जीवन संदेश था; अंतर की रुचि थी।

८. 'काकाजी के प्रति का प्रेम यानि समर्पण' – इस न्याय से गुरुजी ने काकाजी की छोटी रुचि को अपना जीवन बनाया है। उसके कुछ प्रसंग हैं –

✳ काकाजी ने धुन पर काम लिया था। काकाजी-पप्पाजी की रीति भले अलग थी, लेकिन जीवन का हार्द एक सरीखा था। काकाजी खूब धुन करवाते; गुरुजी भी उनके भक्तों से खूब धुन करवाते हैं। ऊँचे स्वर में मंत्रनाद करवाते हैं।

दिल्ली मंदिर में दर्शन करने मैं अचानक गई थी, तो कुछ युवक पूजा करते हुए ज़ोर से धुन कर रहे थे और वो भी सर्वदेशीय नाम रटण के साथ धुन करते हुए दर्शन किए थे।

हाल ही में ३.११.'०९ को गुरुजी विद्यानगर - 'पप्पाजी तीर्थ' पर पधारे थे। वहाँ शाश्वत् धाम पर दर्शन करने के बाद तीर्थ पर नीम के वृक्ष के नीचे संतों के आवास के पास बिराजे थे। सामने संत और थोड़े भाई थे। गुरुजी मौन थे और अचानक धुन करने की आज्ञा दी। **ऐसी धुन करवाई थी कि मानो काकाजी-पप्पाजी के सान्निध्य में जैसी धुन होती, वैसी धुन के दर्शन हुए। मस्तक झुक जाए ऐसा ये गुणवारसा धारण किए हुए का दर्शन वर्तन से करवाया।** काकाजी - पप्पाजी ताड़देव में अखंड कथावार्ता का अखाड़ा रखते। गुणातीतानंदस्वामिजी की तरह कभी खाली समय नहीं जाने देते। स्वामी की बातों पर काम लिया। इस मामले में गुरुजी ने भी वारसा रखा है।

कथावार्ता का अखाड़ा, सेवा का अखाड़ा, **कसनी की भक्ति करवा कर काका-पप्पा की हाट जारी ही रखी है।**

९. पप्पाजी हमें सद्गुरु A की शिविर सभा में कई बातें (उच्च कक्षा की) करते–

✳ **'अनुसंधान स्वरूप का हो, तो अनुवृत्ति प्रगट हो जाएगी'**

✳ **एकपक्षीय सुहृद्भाव रखने की बात करते।**

यह बात जीवन में अमल करके गुरुजी साकार दर्शन करवा रहे हैं।

✳ संबंध से स्वरूप मान कर सेवा कर लेने के पप्पाजी के जीवनमंत्र को गुरुजी ने जीवन में साकार किया है।

१०. पप्पाजी हमें उन्हें 'भगवान' नहीं कहने देते। वे कहते – 'मानो', बोलो नहीं। दीदी भजन बनातीं, तो उसमें पप्पाजी शब्द पहले तो प्रयोग नहीं होता था... खास तो कथा में भी उन्हें भगवान कह दिया तो प्रायश्चित देते, प्रदक्षिणा करवाते, उठक-बैठक करवाते, 'व्रत करना' – ऐसा कहते... खूब गंभीर मुख बना कर नाराजगी जताते।

* पप्पाजी के भक्ति उत्सव पर गुरुजी एक भजन बनवा कर ले आए थे। वह गाया... उसमें –
  आज प्रभु वो कहाँ बिराजे, कहाँ वो श्रीजी स्वयं ?
  श्रीजी यहाँ... श्रीजी यहाँ...
  पप्पाजी के रूप बिराजे, पहचानो हैं श्रीजी यहाँ, श्रीजी यहाँ... श्रीजी यहाँ...
  तब दीदी बोली थीं कि गुरुजी ने मेरा रास्ता खोल दिया ! अब हम भजन में 'पप्पाजी' शब्द का प्रयोग तो कर सकेंगे, बल्कि 'भगवान' कह कर भी गान कर सकेंगे...
  यूँ **गुरुजी ने** पप्पाजी का स्वरूप खुल्ला रख दिया और खुद ने **सच्चे अर्थ में योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी को पहचाना है, सेवन किया है और सबीज ज्ञान कहते हैं – तो वह सामने वाले को असर करता है।**

११. दिल्ली जैसे शहर में रह कर गुरुजी ने एक अद्‌भुत समाज रचा है। गुणातीत के समय की बात है कि – ऐसे भक्त कितने ? तो बोले – उनके माथे काट कर पूरा जलाशय भर जाए उतने। इस कार्य से उनके जैसा दर्शन होता है।

* गुरुजी दिखने में पहले गुणातीतानंदस्वामी जैसे लगते। वैसे उनके कार्य का दर्शन भी ऐसा ही है।
* जिसका सेवन करते हैं, उसके अवयव बदल जाते हैं। यूँ, काकाजी का सेवन करके अब गुरुजी का दर्शन काकाजी जैसी आभायुक्त है।
  काकाजी की सर्वदेशीयता - गुणातीत ज्ञान को पचा कर सच्चे वारिस बन कर भक्ति अदा कर रहे हैं।
* काकाजी का अधूरा कार्य - बहनों का – **पू. आनंदी दीदी द्वारा** पूरा करवा कर **'अक्षरज्योति'** की एक अद्‌भुत ज्योत जारी रख कर **काकाजी - पप्पाजी के प्रति की भक्ति अदा करी है।**
  पिछले १५ साल से तो अस्वस्थ होते हुए भी अकेले हाथ जो श्रम - भक्ति कर रहे हैं, वह सच में आदर्श है।

पप्पाजी हम से भी ऐसा ही कुछ चाहते थे। इच्छा करते हैं... तो हे योगीजी महाराज, हे काकाजी, हे पप्पाजी, हे गुरुजी ! आपके जैसी गुरुभक्ति अदा करने का बल - बुद्धि और प्रेरणा देना। आपके अमृतपर्व पर इसी याचना के साथ विराम करती हूँ।

गुरुहरि के प्रति भक्ति अदा करने के हेतु से, उनकी प्रेरणा से यह जो कुछ लिखा है वह एवं और कुछ जो रह गया हो, उसे भी गिन कर स्वीकार करके धन्य करना... राजी रहना।

यही
श्री गुणातीत ज्योत की एक किरण -
केन्द्र नंबर - ७१
पप्पाजी सेवक ***मनी (बहन)*** *के प्रणाम सहित जय स्वामिनारायण !*
२९.११.'०९

✡✡✡

भजन

(राग–जब ज़ीरो दिया मेरे भारत ने.....)

सबसे पहले योगीजी को पहचाना, काकाजी ने, काकाजी ने,
श्रीजी का स्वरूप उन्हें जाना,
सत्संग में फिर उद्घोष किया, पहचान योगी की करवाई,
पहचान जो वो न करवाते, 'योगी' को पहचानना मुश्किल था;
सुख अक्षरधाम का सामूहिक, धरती पर लाना नामुमकिन था,
वचन से शास्त्रीजी के जो जीए -२
बन कर कांतिकाका के भ्राता,
आत्मीयता की गंगा जिसने, 'ताड़देव' से अविरत बहाई,
मुक्तों में आत्मबुद्धि रख कर
कुटुंबभावना जिसने प्रगटाई,
योगीजी करे; ऐसा सत्संग हम, बढ़ाते रहें और आनंद करें
बढ़ाते रहें और आनंद करें!

* * *

(चुप क्यों हो गए, और सुनाओ!)

* * *

हुं हुं...... ओ.... ओ.....
दिव्यभाव है जिनकी शैली सदा - २
गुणातीत समाज के सेनापति, काकाजी की झाँकी कराता हूँ,
योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ,
दिव्यभाव है जिनकी शैली सदा...

१. बापा के संकल्प में जुड़ कर शिक्षितों को साधु बना दिए ...
योगी में जोड़ के युवकों को स्पीरिच्युअल टॅक्नीश्यन्स बनाए हैं...
कई जंगम तीर्थ रचे जिसने -२, उन्हें मनमंदिर में बिठाता हूँ...
योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ...
दिव्यभाव है जिनकी शैली सदा...

२. भगवान भज सकें बहनें भी, अपमान-विरोध को तुमने सहा...
योगी मर्जी जान ये पहल करी, फिर 'पप्पाजी' ने संभाल लिया...
बने अल्पसंबंधी के सेवक -२, मैं उनको-२, शीश झुकाता हूँ...
योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ...

३. स्वरूपलक्षी सुहृद्भाव और निर्दोषबुद्धि का मंत्र दिया...
'मम्मी, मम्मी' पुकारो **'भुल्का'** बन, **'मास्टर-की'** लगाना सीखा दिया...
'स्वरूपयोग' सिखाया जिसने हमें -२, उस 'स्वरूप'-२, का ध्यान लगाता हूँ...
योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ...

४. ‘एलिजिबिलिटी’ ना देखी तुमने, ईस्माईलिया कॉलेज चला दी रे...
कुछ और न सीखा हो हमने, आत्मीयता निभानी सीखी है...
भक्तों पे लुटाया जब जितना -२, कई गुना-२, काकाजी से पाता हूँ...
योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ...

५. स्त्री-पुरुष भाव का भेद नहीं, चैतन्यस्वरूप ही देखें हैं...
सोने-हीरों से भले तुले न हों, मुक्तों के दिलों से तुले हैं...
दिव्य मान चरित्र तेरे सारे-२, माया से-२, परे हो जाता हूँ...
योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ...
दिव्यभाव है जिनकी शैली सदा...

६. ‘दिल्ली जाओ संकल्प है बापा का, मैं नहीं तुम्हें भेज रहा’... ओ... ओ...
‘मुक्त निष्ठावान मिल जाएंगे’, गुरुजी को ये आशीर्वाद दिया... ओ... ओ...
दे गोद गुरुजी की किया निहाल -२, काकाजी का-२, शुक्र मनाता हूँ...
योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ...
दिव्यभाव है जिनकी शैली सदा,

७. गुणातीत समाज की चारों पंखुड़ियों में, परिश्रम तेरा समाया है...
आज मंदिर-केन्द्र जो फले-फूले, ‘श्री गणेश’ उसका तूने किया है....
नहीं भूलें, रखी बुनियाद तूने-२, आशीष-२, शताब्दी पे माँगता हूँ...
योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ...
दिव्यभाव है जिनकी शैली सदा,
गुणातीत समाज के सेनापति, काकाजी की झाँकी कराता हूँ,
योगी परिवार के सर्जक की दिव्य गाथा तुम्हें सुनाता हूँ,
ओ... हो..... हो.....

✡✡✡

भांगड़ा

(राग–जिंद माई......)

शताब्दी आई है, ओहो, शताब्दी आई है काका दी,
शास्त्रीजी योगीजी, आहा, शास्त्री और योगी दे, वारिस दी,
गुणातीत कुनबे दे, ओहो, गुणातीत कुनबे दे मुखिया दी,
मस्ती सहजानंदी, आहा, मस्ती सहजानंदी जो बाँटे,
मौज में धाम दा सुख, ओहो, मौज में धाम दा सुख जो लुटाते,
मुक्तों दे मतवाले, आहा, मुक्तों दे मतवाले महायोगी,
मैत्री दा मूर्त स्वरूप, ओहो, मैत्री दा मूर्त स्वरूप हो तुम.......।।

(राग – पंजाबियाँ दी बल्ले बल्ले बल्ले....)

साड़े सारियाँ ते है **रहमत उन्हाँ दी** -३
खून पसीना **मेहनत उन्हाँ दी** -२
अज उन्हाँ करके साडी है बल्ले ओ बल्ले ओ बल्ले!
काकाजी दी जै हो, जै हो, जै हो, जै हो, जै हो -२

नींव विच जो कुर्बान हो गए, सत्संग विच नई क्रांति लाए, -२
मुक्तां दे भगत जो बने, जो बने, हाँ बने...
काकाजी दी जै हो, जै हो, जै हो, जै हो, जै हो -२

हो... शास्त्रीजी दे अनुरागी, बापा दे झमूरे आप;
मस्ती शाही फकीर-सी, दिव्य वाणी केसरी नाद,
गवर्नर अक्षरधाम दे..., गवर्नर अक्षरधाम दे, चैतन्यों के शिल्पी आप,
लाईट हाऊस गुणातीत ज्ञान दे... ओ ओ
लाईट हाऊस गुणातीत ज्ञान दे, रहे फैंकते सदा प्रकाश,
इको ही लगन, जीव ए साडा ब्रह्मरूप कीवें बने, ओ बने, हाँ बने,
काकाजी दी जै हो, जै हो, जै हो, जै हो, जै हो -२

सत्संग दे बीज बोए जिथे, धरती सोणी पंजाब,
श्रीजी दी अलख जगाई, सबद्धी-मोगा-जगरांव,
प्रभात फेरियाँ कीतीयाँ....
प्रभात फेरियाँ कीतीयाँ, गली गली विच घूमे आप,
जो मिलिया ओ भूल न पाया... ओ ओ...
जो मिलिया ओ भूल न पाया, तुवाढी मूर्ति दा प्रताप
हुण तुवाढी तरह सानू गुरुजी संभाले, हो गई साडी बल्ले, ओ बल्ले, ओ बल्ले,
काकाजी दी जै हो, जै हो, जै हो, जै हो, जै हो -२

ओ... निरंतर संत और मुक्तों दा, करदे रहें महिमा गान,
रख सुहृद्‌भाव जीएं हम, दो निर्दोषबुद्धि दान,
परिचय त्वाढा अस्सी बन सकिए...
परिचय त्वाढा अस्सी बन सकिए, दिन-रात रहे एही तान,
गुरुजी, स्वरूप काकाजी दे.... ओ ओ...
गुरुजी, स्वरूप काकाजी दे, संबंध दृढ़ करीए आज
मैत्री मिलन महोत्सव दा फल, एही सानुं मिले, ओ मिले, हाँ मिले

✡✡✡

निमंत्रण

'योगी परिवार' के सर्जक प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी ऐसे आधारस्तंभ हैं, जिन पर 'योगी परिवार' से पनपे और फलेफूले हमारे 'गुणातीत समाज' का अध्यात्म राजमार्ग आज खड़ा है।

और...

हम, अपने मन की भूलभुलैया में इन आधारस्तंभों को कदापि नज़रअंदाज न करें,
इसी भावना को उजागर करता हुआ प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन
पिछले तीन साल से 'योगी परिवार के स्नेहमिलन' का मानो
एक अविस्मरणीय अवसर ही बन गया है।

आइए, सपरिवार इष्ट मित्रमंडल सहित आइए –
13 मार्च 2010 – शनिवार की सायं 5:00 बजे से
'योगी परिवार आनंदोत्सव' में प्रत्यक्ष स्वरूपों द्वारा
'गुणातीत ज्ञान' का नैवेद्य प्राप्त करें!

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	25.2.2010,	गुरुवार	—	एकादशी – व्रत
(2)	दि.	28.2.2010,	रविवार	—	होली, होलिका दहन
					ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज का जन्मोत्सव
(3)	दि.	1.3.2010,	सोमवार	—	धुलेन्डी,
					प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. साहेब की प्रागट्य तिथि
(4)	दि.	7.3.2010,	रविवार	—	ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(5)	दि.	13.3.2010,	शनिवार	—	**प.पू. गुरुजी का 73वां प्रागट्य दिन**
					(सायं 5:00 बजे से ताड़देव – दिल्ली में मनाया जाएगा।)
(6)	दि.	24.3.2010,	बुधवार	—	**रामनवमी,**
					भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती, व्रत
(7)	दि.	26.3.2010,	शुक्रवार	—	**एकादशी, व्रत**
(8)	दि.	28.3.2010,	रविवार	—	गुरुवर्य योगीजी महाराज का दीक्षा दिन
(9)	दि.	30.3.2010,	मंगलवार	—	श्री हनुमान जयंती

R.N.I. 28971/ 77 (Air Mail)

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052